मासिक
jaihaatkeshvani.com

जय हाटकेश वाणी

जुलाई 2015 वर्ष : 10, अंक : 2

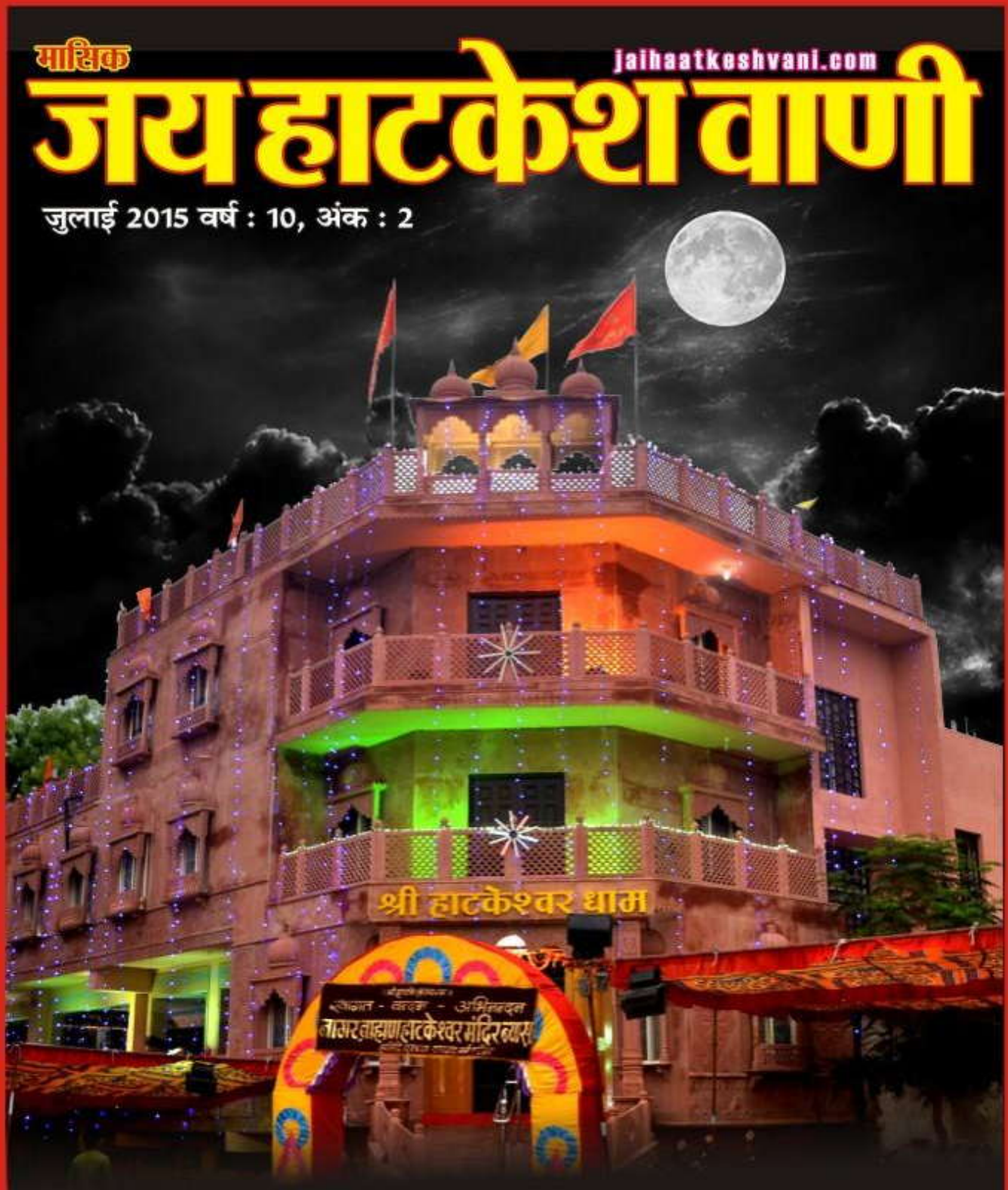

महाकाल की नगरी उज्जैन में लोकार्पण समारोह पर दुल्हन की तरह सजे नवनिर्मित श्री हाटकेश्वर धाम का विहंगम दृश्य

43 जन्मदिन एवं वीं विवाह वर्षगाँठ पर बधाईयाँ

4 जुलाई 1972

जन्मदिनांक
23 जुलाई 1954

जन्मदिनांक
24 अगस्त 1955

सुरेन्द्र (सुमन)-सौ.रमा मेहता

तेरे मेरे सपने,
अब एक रंग हैं
जहां भी ले जाए राहें,
हम संग हैं
मेरे तेरे दिल का,
तय था एक दिन मिलना
जैसे बहार आने पर,
तय हैं फूल का खिलना
ओ मेरे जीवन साथी.. ..
तेरे दुःख अब मेरे, मेरे सुख अब तेरे
तेरे ये दो नैना, संदीप और सूरज मेरे
ओ मेरे जीवन साथी.. ..
लाख मना ले दुनियाँ, साथ ना ये छूटेगा
आ के मेरे हाथों में, हाथ ना ये छूटेगा
ओ मेरे जीवन साथी.. ..

शुभेच्छु :
समस्त
दैनिक अवन्तिका
मेहता एवं
नागर परिवार, उज्जैन

।। श्री गोबर्धन नाथो जयति ।।

जन्मदिन पर शुभाशीर्वाद, बधाई एवं शुभकामनाएँ

उगता हुआ सूरज दुआ दे आपको,
खिलता हुआ फूल महक दे आपको
हम भी दुआ करते है कि
सबको ऐसी खुशियाँ मिल जाये।
ठाकुर जी हर खुशियाँ दे आपको।

चि. हर्ष

(सुपुत्र - डॉ. अरूण कुमार-सौ. कामिनी व्यास)
दिनांक 06.04.2015

- आशीर्वाद दाता -

दादाजी, दादीजी, - अम्बाशंकर व्यास लक्ष्मीनारायण व्यास सौ. हेमकान्ता व्यास,
काका-काकी - सतीश व्यास (प्राचार्य), सौ. शोभा व्यास, हाटपिपलिया,
डॉ. धर्मेन्द्र व्यास सौ. मिनाक्षी व्यास, बहिन अपेक्षा व्यास, भाई-ईशान श्रेयांश, प्रद्युम्न,
नाना-नानी - सौ. कान्ता मेहता श्री रमेशजी मेहता,
मामा-मामी - सौ. बिन्दु मेहता-श्री मनोजजी, सौ. पूजा पकंजजी मेहता, रतलाम,
भूवा-फूफाजी-सौ. उर्मिला नागर श्री दिलीपजी नागर, रतलाम,
सौ.निर्मला शर्मा-श्री संतोषजी शर्मा (प्रभुजी) ए.ई.ओ. उमरबन
समस्त व्यास परिवार पोलायकलाँ (शाजापुर) मो.नं.- 7566616700, 9584836700

नोट – लकवे का ग्यारेन्टेड इलाज किया जाता है।

व्यास परिवार की ओर से नागर समाज को बहुत–बहुत बधाई।
व्यास परिवार में फिर से यह शुभ घड़ी आई।।

कुर्यात सदा मंगलम

10 मई 2015

सौ.विभा

(सुपुत्री : धर्मेन्द्र-सौ.किरण मेहता, पीपलरावाँ)

संग

चि. पीयुष

(सुपुत्र : श्री लीलाधरजी-सौ.मीना मेहता, खाचरोद)

विवाह की प्रथम वर्षग्रन्थि पर शुभाशीर्वाद एवं मंगलकामनाएँ

4 जुलाई 2014

चि.हिमांशु शर्मा

(सुपुत्रः श्री नरेन्द्रकुमारजी -सौ.मंजू शर्मा, उज्जैन)

सौ. दीर्घा मेहता

(सुपुत्री : धर्मेन्द्र-सौ.किरण मेहता, पीपलरावाँ)

आशीर्वाददाता :

त्रिभुवनलाल-सौ.सुशीला मेहता (दादा-दादी)

श्री नरेन्द्रकुमार-सौ.मंजू शर्मा

धर्मेन्द्र-सौ.किरण मेहता (पापा-मम्मी)

राघवेन्द्र-सौ.मेघा मेहता (काका-काकी)

चि.पियुष-सौ.विभा मेहता (बहन-जीयाजी)

वरद, प्राची, प्रज्ञा, रुचि, राधिका

एवं समस्त मेहता परिवार पीपलरावाँ

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता

श्री विष्णुप्रसादजी नागर

प्रेरणा स्त्रोत-पं.कान्ताप्रसादजी नागर (दास्ताखेड़ी)

संरक्षक

पं श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुंबई
पं श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं श्री दिनेश शर्मा, इटावा (तराना)
पं श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ. दमिता वदीव झा

-वितरण एवं शिकायत-
दीपक शर्मा
94250-63129

-विज्ञापन-
पवन शर्मा
98260 95995

सम्पादक वाणी...

नवनिर्माण या नवकीर्तिमान...?

प्रकृति की तमाम व्यवस्थाएं मनुष्य को परोपकार करने या दूसरों का भला करने की प्रेरणा देती है। जिस प्रकार हवा प्राणवायु देने के लिए बहती है, पेड़ अपने फल स्वयं कभी नहीं खाता। वह राहगीरों को छाया भी देता है तथा फल भी। आग इसलिए जलती है कि वह अंधेरे में रोशनी दे सके तथा उस पर पके खाने से इंसान अपना पोषण कर सके। पोखरों और सरोवरों का जल वाष्प बनकर आकाश में उड़ता है तथा वहाँ से बादल बनकर बरसता है। यह प्रक्रिया इस प्रकार की है कि अपने स्त्रोत से अधिक लोगों को लाभान्वित करना। कुछ इसी प्रकार का नवनिर्माण या कहा जाए कि नवप्रेरणा का संचार मालवमाटी के लाल पं. कमलकिशोरजी नागर ने किया है, उज्जैन में हरसिद्धि की पाल पर 'श्री हाटकेश्वर धाम' का नवनिर्माण उनकी दृढ़इच्छा शक्ति एवं परोपकार की भावना का प्रमाण है।

अपनी कथाओं में प्राप्त दान का समग्र उपयोग वे गौशालाओं के निर्माण एवं रखरखाव हेतु करते हैं, लेकिन समाज के प्रति कर्तव्य पूर्ण करने के लिए उन्होंने अपनी सम्पत्ति विक्रय कर इस धाम का निर्माण अपने माता-पिता की स्मृति में करवाया है। विगत 14 जून 2015 को यह धाम नागर ब्राह्मण समाज को विधिवत लोकार्पित कर दिया गया और देशभर के नागरजन एवं अन्य जन इसका बरसों बरस उपयोग करते रहेंगे तथा पंडितजी एवं उनके परिवार का स्मरण भी। पं. नागरजी ने यह पुनीत कार्य कर यह प्रेरणा दी है कि अपने धन सम्पत्ति का किस प्रकार सदुपयोग करें।

यदि जल पोखरों या सरोवरों तक सीमित रहेगा तो वह कुछ लोगों को लाभान्वित कर पाएगा, लेकिन वह बादल बनकर आसमान से बरसा तो सम्पूर्ण वसुंधरा को लाभान्वित कर सकेगा। इसी प्रकार दान न करने वाले समृद्ध लोगों का धन खारे पानी के समुद्र के समान है, जो अथाह होने के बावजूद किसी काम नहीं आता।

अतः इस प्रकृति के साथ रहने वाले लोगों को भी उसी से व्यवहार सिखना चाहिए। देशभर में आमजन को अपनी ज्ञान गंगा में डूबकी लगवाकर अज्ञान को धोने एवं ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करने वाले पं. श्री नागरजी ने इस नवनिर्माण के माध्यम से नवप्रेरणा दी है कि अपने तन-मन एवं धन का उपयोग सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय होना चाहिए। अपने उद्देश्य में व्यापक लाभ का सूत्र उन्होंने दिया है। समाज के प्रति उन्होंने अपना कर्तव्य पूर्ण करते हुए यही कहा कि 'तेरा तुझको अर्पण' उन्होंने अपनी वाणी एवं कर्म के बीच तादत्म्य स्थापित कर ऐसा सद्कार्य किया है जिसे आने वाले कई वर्षों तक याद किया जाता रहेगा।

-संगीता दीपक शर्मा

जय हाटकेश वाणी
सम्पर्क : अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो.94250-63129, 98260-95995, 99262-85002
Website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com
मूल्य 10/- रुपये

आपके लिए...

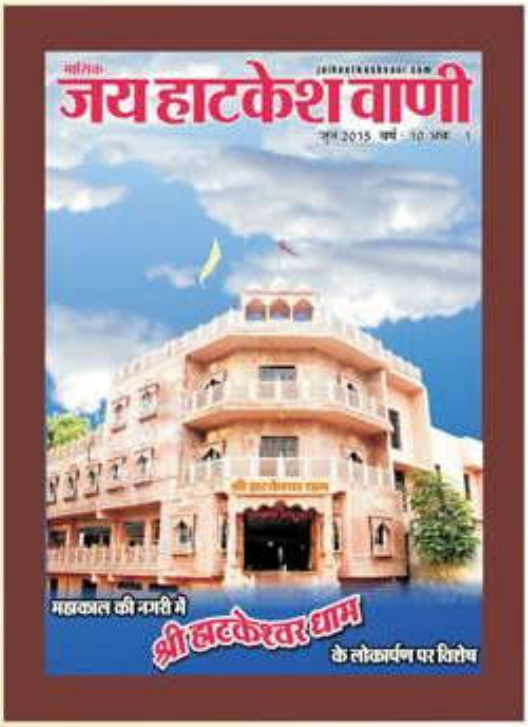

मासिक जय हाटकेश वाणी का प्रकाशन पूर्णतः आपके लिए है। इसका उद्देश्य है सामाजिक जनजागरण, विकास एवं सम्पन्नता। आज का युग सूचना प्रधान है तथा कहां क्या हो रहा है, यह जानने का हक प्रत्येक समाजजन को है। दरअसल जब पहली बार जय हाटकेशवाणी के प्रकाशन की योजना बनी, तब उसके उद्देश्य निर्धारित नहीं थे। केवल समाजहित का उद्देश्य रहा, लेकिन इसके प्रकाशन के पश्चात् यह बहुउद्देशीय होती गई, न केवल सूचना का माध्यम, बल्कि समाजजनों को आपस में जोड़कर उन्हें लाभान्वित करना, वैवाहिक सम्बन्धों में सहभागी बनना और उससे आगे बढ़कर जब उज्जैन में श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण की योजना बनी तो उसका प्रचार जन-जन तक कर योजना को निर्धारित समय में पूर्णता तक पहुँचाने में सहयोग का जो कार्य था, यह पहले कभी सोचा नहीं गया था। लेकिन जो कुछ हुआ, वह सबने देखा और भविष्य में क्या लाभ मिलेंगे, यह भी सब तक पहुँचेगा। जाने-अन्जाने इस लक्ष्य के पूर्ण होने से समाज की अन्य स्थानों पर चल रही इसी प्रकार की योजनाओँ में भी हम सहभागी बन सकते हैं। बन क्या सकते हैं बनेंगे ही। लेकिन ताली दोनों हाथों से बजती है। जहाँ भी समाज में इस प्रकार की योजनाएँ है उनसे हम परस्पर जुड़ सकते हैं। योजना से जुड़े पदाधिकारी इस पत्रिका का लाभ प्रचार से लेकर धनसंग्रह तक के लिए ले सकते हैं। बशर्ते कि वे नियमित सूचना हम तक भेजते रहें, हम अपनी तरफ से पूर्ण रूप से समर्पित हैं।

-सम्पादक

सदस्यता-नवीनीकरण आवेदन पत्र

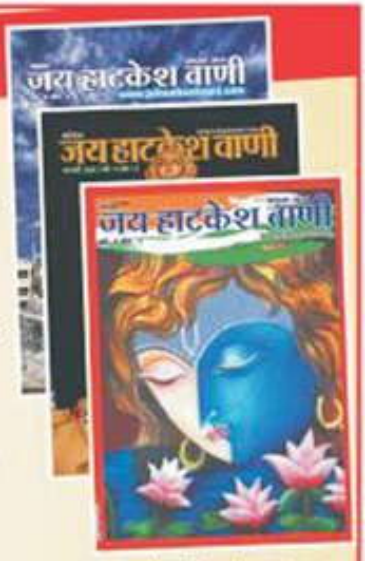

मैं.....

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) .....

.....

मासिक **जय हाटकेश वाणी** का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूं। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूं। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा एम.जी. रोड, (गोराकुण्ड) इंदौर में खाता क्रमांक- 0325201004027 में जमा किया है।

www.haatkeshvani.com

सम्पर्क- **जय हाटकेश वाणी**, 20 जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इंदौर-452002

फोन- 0731-2450018/मो. 99262-85002/99265-63129

Email : jayhotkeshvani@gmail.com/ manibhaisharma@gmail.com

नागर इतिहास ग्रंथ में विशिष्ट नाम शामिल कराने का अवसर

नागर जाति का समस्त (6 शाखाओं) का इतिहास ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है। इस ग्रंथ में निम्न दर्शित 1 से 8 में जो पदधारी आते हैं, इसमें से कोई अगर चाहे तो अपना या अपने पूर्वज/अनुज का नाम शामिल करवा सकते हैं।

(1) जिसने, जिसके पूर्वजन ने यदि स्वतंत्रता से पहले वाले भारत के किसी देशी रियासत में दीवान, सेनाध्यक्ष, राजा के रहस्य मंत्री का पदभार संभाला हो।

(2) जिसने, जिसके पूर्वज/अनुज ने आजादी के बाद किसी राज्य के राज्यपाल, मुख्यमंत्री, केबिनेट मंत्री, किसी भी राष्ट्र में, भारतीय राजदूत, उच्च, सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, सचिवालय के मुख्य सचिव सैन्य सेवा अंतर्गत भूमि, जल या वायु सेना में क्रमिक केप्टन, लेफ्टिनेंट या फ्लाईट लेफ्टिनेंट और इससे बढ़कर पदों का दर्जा प्राप्त किया हो, राज्य विधानसभाध्यक्ष, लोकायुक्त, लोकपाल, पुलिस बल में आय.जी.डी.जी., किसी भी राज्य में मुख्य आपर आयुक्त, विभागीय रेल मैनेजर का पदभार संभाला हो या किसी यु.जी.सी. एफिलिएटेड युनिवर्सिटी के कुलपति या उपकुलपति रहे हो। जिसने शास्त्रीय संगीत, नृत्य में उच्चतर या सर्वोच्च पद प्राप्ति की हो। हिन्दी या प्रादेशिक साहित्य में अव्वल दर्जा प्राप्त किया हो। जिसे पूर्वज-अनुज को पद्मश्री, पद्मभूषण आदि जैसे पुरुस्कारों से विभुषित किया गया हो और किसी क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि प्राप्त की हो वह कोरे कागज पर अपना पूरा नाम, पता, जन्मदिनांक व सम्पर्क नम्बर, वतन, जातिशाखा, शैक्षणिक कक्षा, विशिष्ट कार्य, पदसेवा, परितोषिक आदि की विगतों के साथ, अपने हस्ताक्षर दिनांक दर्ज करके निम्नलिखित पते पर शीघ्रातिशीघ्र भेज देवें। विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

महेशकांत भ. कच्छी
जे/5, कालिन्दी अपार्टमेन्ट,
पशाभाई पार्क, रेसकोर्स, बड़ौदा
मो. 9429553255

सम्मान समारोह में आ सकते हैं- केन्द्रीय मंत्री और सांसद परेश रावल (सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता) एवं नागर बंधु

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सहित मेरठ, अलीगढ़, आगरा, मथुरा, हाथरस के नागरजनों का

नई दिल्ली में 'नरसी मेहता सम्मान समारोह'

मासिक जय हाटकेश वाणी द्वारा नवम्बर-दिसम्बर माह के दौरान नागर महाकुंभ एवं नरसी मेहता सम्मान समारोह प्रस्तावित है।

जिसमें शिक्षा, कला, साहित्य, समाजसेवा, उद्योग, व्यवसाय, चिकित्सा, विज्ञान, पत्रकारिता, अध्यात्म एवं तकनीकी क्षेत्र की हस्तियों से सम्मान हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित है।

नोट- हमारा प्रयास रहेगा कि उपरोक्त भव्य गरिमामय आयोजन देश की प्रख्यात हस्तियों की उपस्थिति एवं करकमलों द्वारा सम्पन्न हो। अतएव आप प्रविष्टियां एवं सुझाव देवें। इस अवसर पर जय हाटकेश वाणी द्वारा क्षेत्र की निर्देशिका एवं स्मारिका प्रकाशित की जाएगी।

सम्पर्क मो. 9425063129

कुरीतियों पर कुल्हाड़ी

बांसवाड़ा में आयोजित यज्ञोपवीत संस्कार ने इतिहास रचा

सामाजिक सुधारों की कोई समय सीमा और उम्र नहीं होती, यह पुनः एक बार सिद्ध हुआ है। बांसवाड़ा नागर समाज में परिवार में विवाह प्रसंगों के साथ बालकों के यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न करवाने की परम्परा रही है, मगर शनैःशनैः परिवार छोटे होते गए और यज्ञोपवीत पृथक से आयोजित करने की व्यवस्था बढ़ती गई।

सन् 2000 में कुछ युवा समूह ने सामूहिक यज्ञोपवीत के आयोजन का वातावरण बनाकर उसका सफल संचालन भी किया, परन्तु कालांतर में मतभेद के कारण कोई परिवार इसके लिए तैयार नहीं हुआ। सन् 2011 में स्वयं वडनगरा नागर मंडल को पहल करके आगे आना पड़ा। समाज और नौ परिवारों ने अपने बटुकों को इस आयोजन के साथ जोड़ते हुए संकल्पबद्ध कर कार्यक्रम सम्पन्न किया, मगर कुछ परिवारों ने छुप-छुप कर नियमों की अवहेलना की तथा किसी बहाने भोज तथा मामेरा को समाज की नजरों से वे बचा नहीं पाए। वर्तमान 2015 के सामूहिक यज्ञोपवीत आयोजन के पूर्व ही मंडल के अध्यक्ष श्री दिलीप कुमार दवे जो स्वयं क्रिकेट खिलाड़ी एवं कोच रहे ने स्पष्ट बाउंड्री बनाकर सबको चौंका दिया।

आयोजन आप स्वयं के द्वारा प्रदान किए गए अनुदान से हो रहा है। भजन संध्या और सांस्कृतिक संध्या भी आपका ही आयोजन है। हम संकल्प श्राद्ध, विनायक, शांति पूजन, चोपटा, बनोरा, पीढ़ी (बाना) यज्ञोपवीत धारण, मामा के घर भिक्षा और बटुकों की नागरवाड़े की परिक्रमा आदि कार्यक्रमों को स्वीकृत कर दो दिवसीय कार्यक्रम बना रहे हैं। 23

बटुकों के यज्ञोपवीत में परिवार और ननिहाल के होने वाले 46 जाति भोज (वशेक) को 2 जाति भोज पर सीमित कर रहे हैं।

प्रातः स्मरणीय ब्रह्मलीन महंत श्री दीनबंधुदासजी महाराज की जन्म शताब्दी में गंगादशमी के पावन दिवस इस आयोजन को स्वीकृति देकर अविस्मरणीय बनाया है। वे स्वयं इस अवसर पर एक जाति भोज आयोजित कर रहे हैं, अतः बाहर से आने वाले परिवारों को भी घर में रसोई, नाश्ता बनाने की चिंता से मुक्त कर दिया है। 28-5-2015 का यह कार्यक्रम 23 बटुकों की सीमा पर पहुँच गया है। आयोजन स्थल के रूप में श्री हाटकेश्वर मंदिर परिसर, श्री केशवाश्रमजी की धर्मशाला और श्री दुर्लभकरणी कृपा भवन का सम्पूर्ण उपयोग यथायोग्य किया गया।

प्रति रविवार पालकों को समस्याओं के समाधान हेतु आमंत्रित किया गया। गणेश पूजा की साड़ी युवा को, मामेरे में बटुक, बेटी और दामाद को बगैर दिखावे के सामान्य परिधानों को ही स्वीकृति दी गई। इस कार्यक्रम की एक विशेषता रही कि सभी पालक और बटुक हमउम्र थे और उनके उत्साह की कोई सीमा नहीं थी। इस कार्यक्रम में ननिहाल पक्ष में खंडवा, बड़ौदा, भावनगर से पधारे सभी नागर बंधुओं ने प्रसन्नतापूर्वक अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। भिक्षा हेतु दो काउंटर समाज द्वारा ही लगाए गए थे। जहाँ सबसे प्राप्त रकम 23 बटुकों में विभाजित कर दी गई। समाज के इस आयोजन हेतु किसी प्रकार का चंदा नहीं लिया गया। सारा खर्च आयोजकों ने पालकों द्वारा प्रदत्त राशि से किया।

धार्मिक कार्यक्रम के आयोजन में आचार्यों पं.इंद्रशंकरजी झा ने आयोजन में प्राप्त दक्षिणा की राशि वडनगरा नागर मंडल को इस कार्यक्रम व्यय हेतु भेंट कर दी। जिनका अनुसरण श्री गुरुशंकरजी झा ने भी किया। अन्य साथी आचार्यों ने भी दक्षिणा राशि भेंट कर नया उदाहरण प्रस्तुत किया। सामूहिक यज्ञोपवीत को शास्त्र और धर्म के विपरित मानने वालों को यह स्पष्ट संदेश और धर्म के विपरित मानने वालों को यह स्पष्ट संदेश दिया है

कि यह समय की मांग है। अतः शास्त्रार्थ व्यर्थ है। परम्परागत चली आ रही मामेरा प्रथा को भी अनिवार्यता, दिखावा और समाज के ताने से मुक्त करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम की सफलता का प्रमाण जयपुर से पधारे राजस्थान पत्रिका के कार्टुनिस्ट श्री मनोज त्रिवेदी ने अपना कार्टुन बना कर कार्यक्रम के तुरन्त बाद सोशल मीडिया पर अपलोड किया, आगामी कार्यक्रम हेतु 15 बच्चों के अभिभावकों ने स्वीकृति प्रदान कर दी। मेरी समाज के सभी सदस्यों से विनती है कि उनके प्रोत्साहन के दो बोल पूरे समाज के वातावरण को बदल सकते हैं और उसके लिए पहल माताओं और बहनों को ही करना पड़ेगी।

-मंजू प्रमोदराय झा
बांसवाड़ा (राज.)

नागरजीमय 'श्री हाटकेश्वर धाम'

श्री हाटकेश्वर धाम उज्जैन के 13-14 जून 2015 को आयोजित लोकार्पण समारोह में बांसवाड़ा नागर समाज के 20 प्रतिनिधियों के साथ हिस्सा लेने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ। आयोजन में गुरुवर पं.कमलकिशोरजी नागर के दर्शन तो सम्भव नहीं हुए परन्तु वहाँ पूरा हाटकेश्वरधाम ही नागरजीमय प्रतीत हो रहा था। जब उज्जैन का नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर न्यास मंडल पुरानी धर्मशाला तोड़े जाने के पूर्व निर्धारित अवधि में 50 लाख रुपए एकत्रित करने के लक्ष्य पर पहुँचती नहीं दिखी तो निराशा का भाव आना स्वाभाविक था, परन्तु नागरजी ने असम्भव से लगने वाले कार्य से स्वयं और अपने परिवार को जोड़ दिया। धोलपुरी लाल पत्थर से सुसज्जित राजस्थानी कलाकृतियों को आकर्षक रूप से सजाकर यह ऐतिहासिक धरोहर पं.कमलकिशोरजी नागर के सुपुत्र पं.प्रभूजी नागर ने न्यास मंडल के समक्ष श्री हाटकेश्वरजी को समर्पित किया।

गुरुवर के आशीर्वचन पूरे हाटकेश्वरधाम और नागरसमाज को प्रेरणा दे रहे हैं। 'खाकी और खादी कपड़ों पर लगे दाग तो जनता धो देती है, परन्तु भगवा पर लगा दाग भागीरथी भी नहीं धो पाएगी' कितना सामयिक, सत्य और चेतावनी स्वरूप है। लोढ़ी काशी बांसवाड़ा से निकलने वाले तीर्थयात्री सामान्यतः अपनी यात्रा उज्जैन में बाबा महाकालेश्वर, जगतजननी हरसिद्धि माता और पुण्य सलीला शिप्रा माँ के तट पर स्नान करके ही आगे बढ़ते हैं। पूर्व में वे हरसिद्धि माता मंदिर प्रांगण में ही विराम के बाद अगली मंजिल हेतु रवाना होते थे, परन्तु इस हाटकेश्वर धाम के निर्माण से रात्रि विश्राम में भी अब कोई परेशानी नहीं होगी। तीर्थयात्रियों के लिए दो बस के पूरे मुसाफिरों के रुकने के लिए हाल और किचन की व्यवस्था की है। वहीं विश्राम हेतु 13 कमरे, पलंग, बिस्तर, सेन्ट्रल टेबल और अटैच लेटबाथ सुविधा उपलब्ध है। अम्बाजी मंदिर की तरह ही यहाँ भी तीर्थयात्रियों को ठहरने की समस्या का निराकरण हो गया है। जिसका यात्रीगण लाभ उठा सकते हैं। नागरबंधु बाबा हाटकेश्वर की सन्तान होने से सर्वप्रथम भगवान हाटकेश्वर, राधा कृष्ण और नरसी मेहता को गुरु माँ ने विराजित कर हमारी शैव वैष्णव परम्परा को स्थापित करवाया है। जब भगवान महादेव ने नरसी मेहता को वरदान मांगने को कहा था तो उन्होंने महादेव के प्रिय पर न्यौछावर मांगा और यहीं से राधा-कृष्ण की रासलीला और कृष्ण भक्ति का प्रादुर्भाव हुआ। भगवान श्री गणेश, जगतजननी जगदम्बा और ब्रह्माजी की उपस्थिति में यहाँ रुकने का अवसर प्राप्त होना हमारे लिए गौरव का विषय होगा। 2016 में आयोजित महाकुम्भ में इसका अधिकतम उपयोग होगा, अतः निश्चित समय में इसकी बुकिंग कराना आवश्यक होगा। श्री हाटकेश्वर धाम के कण-कण में नागरजी और उनका परिवार विराजित है, सहज भाव से आप इसका लाभ उठाएं, वहाँ रुक न पाने की अवस्था में भी वहाँ दर्शनार्थ अवश्य आएं यह मेरा और न्यास मंडल का सादर अनुरोध है।

-प्रमोदराय झा
20, आशीर्वाद, अम्बा माता मंदिर के पीछे, बांसवाड़ा मो. 8003063616

कोर्ट में केस चल रहा था, केस की सुनवाई शुरू होने लगी
तो वकील उठा और जज से बोला।
वकील- माई लार्ड, कानून की
किताब के पेज नंबर 15 के मुताबिक
मेरे मुवक्किल को बा-इज्जत
बरी किया जाये।
जज- किताब पेश की जाये।
किताब पेश की गयी, जज ने पेज
नंबर 15 खोला तो उसमें
1000 के 10 नोट थे।
जज मुस्कुराते हुए बोला- बहुत खूब,
इस तरह के 2 सबूत और पेश किये जाये।

प्राणप्रतिष्ठा, ध्वजा महोत्सव की छठीं वर्षगांठ मनाई गई

श्री चामुण्डा माताजी मंदिर जसवंतपुरा (राज.)

श्री राजराजेश्वरी, महिषासुर मर्दिनी भगवती माँ चामुण्डा, देवाधिदेव भगवान हाटकेश्वर की प्रतिष्ठा एवं ध्वजा महोत्सव के 6ठें साल का वार्षिक महोत्सव 31-5-2015 को सम्पन्न हुआ। इस भव्य आयोजन के अन्तर्गत श्री चामुण्डाजी का हवन के यजमान श्री गोविन्दलालजी पिताम्बरलालजी, जसवंतपुरा वालों के द्वारा समस्त देवी देवताओं को आह्वान कर आहुतियों द्वारा हर्ष उल्लास सम्पन्न हुआ। ध्वजा महोत्सव अन्तर्गत श्री माताजी की ध्वजा श्री पुरुषोत्तमलालजी मगराजजी उम्मेदाबाद श्री हाटकेश्वर महादेव की ध्वजा श्री ईश्वरलालजी, शंकरलालजी, जसवंतपुरा एवं श्री लक्ष्मीनारायण भगवान की ध्वजा, श्री बाबूलालजी पुनमचन्दजी मंड़वारिया वालों के द्वारा चढ़ाई गई। पूरा महोत्सव उत्साह, उमंग, अबीर, गुलाल, पुष्प वृष्टी एवं आरती से सम्पन्न हुआ। इस आयोजन को सफल एवं सुचारु रूप से करने के लिए समस्त ट्रस्टीयों ने समाज के नव युवा शक्ति को आमंत्रित किया। युवा शक्ति ने इस आयोजन को भव्य एवं सफल करके अपनी सुझ-बुझ एवं अनुभव का परिचय दिया।

-पुरुषोत्तमलाल पी. नागर
जसवंतपुरा (राज.)

युवाओं को प्रोत्साहित प्रेरित करें...

समाज के आदरणीय, पूजनीय, वंदनीय वरिष्ठ सदस्यों को आग्रह करता हूँ कि आप समाज की धरोहर है, आप समाज के आधार स्तम्भ है आपके अनुभव से समाज की चारों और उन्नति हुई एवं भारतभर में पहचान बनी है। आपके अनुभव को समाज के युवा शक्ति को बाँटे उनको आपके उपस्थिति में आगे बढ़ने का मौका दे। आपने समाज की बहुत सेवा की उसके लिए कौटी-कौटी नमन् । मगर समय की दौड़ के अनुसार युवा धन को कार्यभाल संभालने का अवसर दें आज दुनिया में बहुत परिवर्तन आ चुका है। हम भी परिवर्तन के साथ कदम-कदम मिलाकर युवा शक्ति को अपनी शक्ति प्रदर्शन एवं कामकाज की रूप-रेखा तैयार करने का मौका दें। आज शिक्षा का बहुत महत्व है। आधुनिक युग में युवा ही समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं। युवाओं का अनुभव, उत्साह एवं काम करने की लगन ही समाज में उन्नति एवं प्रगति की राह मिल सकती है। युवा के कन्धों पर भार ही समय की मांग है।

समय के अनुसार शिक्षा अनिवार्य है शिक्षित एवं संगठित समाज ही आगे बढ़ सकता है। युवा वर्ग ही अपने अनुभव से महान क्रांति ला सकते हैं।

-ललित कुमार एस. नागर
जालोर (मुम्बई)

तेरा तुझको अर्पण...

13 एवं 14 जून 2015 के दो दिन नागर समाज के स्वर्णिम इतिहास में लिखे जाएंगे। पुरानी धर्मशाला को तोड़कर उसकी जगह नया धाम बनने में लगभग एक वर्ष लगा। यह भगवान हाटकेश्वर का चमत्कार ही कहा जाएगा। समाज में इस नवनिर्मित भवन के प्रति भारी उत्साह था, जाहिर है कि देशभर से इस ऐतिहासिक पल के साक्षी बनने समाजजन उज्जैन पधारे। मालव माटी के लाल पं.श्री कमलकिशोरजी नागर का तन-मन-धन से इसमें किया गया सहयोग चिरस्मरणीय रहेगा।

श्री हाटकेश्वर धाम लोकार्पण के दो दिवसीय आयोजन के अन्तर्गत प्रथम दिवस 13 जून 2015 को सायं 7.30 बजे से संगीतमय सुंदरकांड का कार्यक्रम हुआ। जिसमें बाहर से आए एवं स्थानीय समाजजनों ने भक्तिमय होकर पाठ एवं भजनों का आनन्द लिया। यह कार्यक्रम रात एक बजे तक चला। इस लोकार्पण समारोह का अभिनंदन करने की भगवान इन्द्र ने भी ठानी थी, शाम को मुसलाधार वर्षा हुई तथा सुंदरकांड के पाठ का समय होते ही वर्षा थम गई। अगले दिन 14 जून 2015 को मुख्य आयोजन में प्रातः 9 बजे से ही मेहमानों का तांता लग गया, उनके लिए स्वल्पाहार एवं गर्म काफी की व्यवस्था तो थी ही, उनका सर्वप्रथम मालवी परम्परानुसार मंगल तिलक लगाकर कु.आस्था संजय जोशी एवं कु.माही सूरज मेहता ने स्वागत किया। तत्पश्चात् लोकार्पण एवं मूर्ति अनावरण कार्यक्रम परमपूज्य गुरुदेव पं. श्री कमलकिशोरजी नागर महाराज के आशीर्वाद के साथ एवं पूज्य माताजी एवं पं.प्रभूजी महाराज के सानिध्य में प्रारम्भ किया गया। सर्वप्रथम भगवान श्री हाटकेश्वर के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन, इस धरोहर को वर्ष 1937 से सहेजकर एवं संवारकर समाज के लिए रखा, उन महान आत्माओं के परिवार के बुजुर्ग सदस्यों सर्वश्री पं.चतुर्भुजजी रावल (खजराना), श्रीमती सुशीलादेवी नागर (दडियावाले) उज्जैन, श्रीमती बिरजूबाई शर्मा वरिष्ठ मातृशक्ति उम्र 108 वर्ष एवं (पूर्व अध्यक्ष डॉ.रामरतनजी शर्मा की मातुश्री), श्री शंकरलालजी नागर पूर्व वरिष्ठ संस्थापक सदस्य, इन्दौर के द्वारा तथा श्री नरेश राजा अहमदाबाद, श्री सुभाषभाई भट्ट गांधी नगर, श्री राजेश त्रिवेदी टमटा अध्यक्ष म.प्र. नागर परिषद्, डॉ.प्रदीप व्यास अध्यक्ष म.प्र. नागर परिषद शाखा उज्जैन एवं न्यास के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मेहता उज्जैन के आतिथ्य में रखा गया। पश्चात् परमपूज्य गुरुदेव पं. श्री

श्री हाटकेश्वर धाम के लोकार्पण को नागर समाज की उपस्थिति ने सफल बनाया...

श्री हाटकेश्वरधाम लोकार्पण समारोह में गुजरात, मुम्बई, बैंगलोर, राजस्थान, बिहार राज्यों के साथ मालवांचल के साथ प्रदेश के नागरजनों ने सम्मिलित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

कमलकिशोरजी नागर महाराज के पूज्य पिताजी पं.श्री रामस्वरूपजी नागर एवं माताजी पूज्यनीय श्रीमती रामप्यारी बाई नागर की प्रतिमा एवं शिलान्यास पट का अनावरण श्री महेन्द्रजी नागर बैंगलोर, श्री परेशभाई नागर मुम्बई, श्री प्रवीणजी त्रिवेदी चेयरमेन औद्योगिक न्यायालय इन्दौर, श्री प्रमोदराय झा बांसवाड़ा, श्रीमती रमा मेहता (दैनिक अवन्तिका), श्रीमती गंगादेवी वासुदेवजी नागर, श्रीमती आशा विष्णुप्रसादजी नागर के करकमलों द्वारा किया गया। पं.प्रभुजी नागर ने इस संस्था के आधार स्तम्भ एवं संस्थापक अध्यक्ष स्व.श्री गोवर्द्धनलालजी मेहता के चित्र पर शाल एवं पुष्पहार अर्पित किए।

सरस्वती वंदना कु. सलोनी जय व्यास ने प्रस्तुत की। इष्टदेव भगवान श्री हाटकेश्वर को माल्यार्पण अतिथियों, न्यास के पदाधिकारियों एवं समाजसेवी सर्वश्री जगदीशचन्द्र नागर, राकेश नागर, किरणकांत मेहता, रमेश मेहता 'प्रतीक' लव मेहता, योगेन्द्र त्रिवेदी, अनिल मेहता (भोपाल), अनूप अग्रवाल (बिल्डर) इन्दौर, भुवनेश कुमार शर्मा (बिहार), जमनाप्रसाद पाठक (शुजालपुर वाले), शिव जोशी (राऊ), महेन्द्र शर्मा (माकड़ोन), रमेशचन्द्र रावल (डेलची), शंकरलाल नागर (बाड़ोली), ओमप्रकाश त्रिवेदी (रतलाम), हेमन्त त्रिवेदी, बाबूलाल नागर (पिपल्यामंडी), जयेश नागर (मन्दसौर), गेंदालाल नागर (सुतारखेड़ा), दिनेश शर्मा (इटावा), श्रीमती प्रेरणा किरणकांत मेहता, श्रीमती रमा मेहता, श्रीमती गंगाबाई नागर, डॉ.नीलेश नागर (इन्दौर), युवा टीम सर्वश्री मनीष मेहता, संजय जोशी, गोविन्द नागर, संजय व्यास, अमित पंचोली, अतुल मेहता, नीलेश नागर पत्रकार, सूरज मेहता संदीप मेहता, अभिलाष नागर, देवेन्द्र मेहता, कन्हैयालाल मेहता, संजय नागर, नीतिन नागर, कमल रावल, पं.सतीश नागर, पं. सुनील नागर, पं. अंकित नागर, पं.आनन्द रावल, नवीन नागर इन्दौर विजय नागर (महाकाल फोटो) कैलाश रावल, दिनेश रावल महेश नागर ने किया।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी समाजबंधुओं की ओर से भगवान श्री हाटकेश्वर को माल्यार्पण के पश्चात् स्वागत भाषण श्री दीपक शर्मा सहसचिव द्वारा प्रस्तुत किया गया। विस्तृत जानकारी श्री सुरेश रावल न्यासी सदस्य द्वारा प्रस्तुत की गई। श्री हाटकेश्वर धाम की व्यवस्था एवं भावी योजना की जानकारी न्यास के सचिव श्री संतोष जोशी ने प्रस्तुत की। अतिथि उद्बोधन श्री राजेश त्रिवेदी 'टमटा' ने दिया। अध्यक्षीय उद्बोधन श्री सुरेन्द्र मेहता 'सुमन' ने प्रस्तुत किया। आभार प्रदर्शन श्री किरणकांत मेहता ने तथा सफल संचालन श्री अशोक व्यास (भोपाल) ने किया। कार्यक्रम के समापन दौर में दो मिनिट की मौन श्रद्धांजलि उन महान आत्माओं को दी गई जिन्होंने इस धरोहर को सहेज एवं संवारकर रखा। पश्चात् महाप्रसादी का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम में भगवान हाटकेश, देवालय एवं नवनिर्मित श्री हाटकेश्वर धाम को विद्युत एवं आकर्षण पुष्प सज्जा की गई थी।

सफलतम कार्यक्रम के लिए समाजजनों को आभार के साथ धन्यवाद

14 जून 2015 नागर समाज के लिए गौरवशाली दिन रहा तथा श्री हाटकेश्वर धाम का लोकार्पण समारोह नागर समाज के इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जावेगा।

पूज्य गुरुदेव मालवमाटी के परम संत पं.श्री कमलकिशोरजी नागर महाराज एवं इनके परिवार द्वारा श्री हाटकेश्वर धाम का निर्माण कर समाज को समर्पित किया गया। न्यास मंडल पूज्य गुरुदेव को इस त्याग तपस्या एवं समर्पण के लिए हमेशा याद रखेगा।

इस कार्यक्रम में न्यास ने पूज्य गुरुदेव की भावनानुरुप प्रदेश एवं प्रदेश के बाहर के सभी नागरजनों को आमंत्रण पत्र भेजने के साथ फोन से भी निवेदन किया गया था, न्यास के इस निवेदन पर बाहर के समाज जन वृहद स्तर पर आए जिसमें गाँधीनगर, अहमदाबाद, मुम्बई, बैंगलोर, बांसवाड़ा (राज.) खगडिया (बिहार) तथा प्रदेश के समाजजन गाँव-गाँव से पधारे और कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम में जिन समाजजनों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई वह तो हमारा सौभाग्य था कई स्थानों से जो नागरजन किसी कारणवश कार्यक्रम में नहीं आ सके। उन्होंने न्यास को बधाई प्रेषित की। कार्यक्रम में न्यास मंडल ने युवा टीम के साथ कार्यक्रम में पधारे सभी नागरजनों के लिए समुचित व्यवस्था रखने का प्रयास किया था, ताकि आमंत्रितों को कोई परेशानी न हो। लेकिन इतने भव्य आयोजन में कुछ-न-कुछ त्रुटि हमसे हुई होगी, ऐसा हम मानते हैं तथा इसके लिए न्यास क्षमाप्रार्थी है। ये कार्यक्रम समाज का ही तथा समाज के लिए ही था, हम तो मात्र सेवक के रूप में थे। आप सभी इस कार्यक्रम में पधारे आपने जो सहयोग प्रदान किया, न्यास आपका हमेशा आभारी रहेगा। न्यास आपसे अपेक्षा रखता है कि भविष्य में भी इसी प्रकार सहयोग प्रदान कर इस सेवा यज्ञ में अपनी आहुति प्रदान करें। आपको पुनःधन्यवाद।

सचिव संतोष जोशी
समस्त न्यास मंडल की ओर से

संकल्पों का करिश्मा देखा

पुज्य गुरुदेव श्री श्री 1008 श्री कमलकिशोरजी नागर म.सा. को नमन, वे मेरी, धृष्टता को क्षमा करें उनकी असीम कृपा से उज्जैन में दिव्य धर्मशाला का निर्माण संभव हुआ। ऐसे नागर रत्न, भागवत पुरुष मेरे आराध्य के श्री चरणों में मेरे 'भाव सुमन' सादर समर्पित है।

गुरुदेव की भक्ति देखी, शक्ति देखी।

संकल्पों का करिश्मा देखा।।
आश्रम देखा गोशालाएँ देखी।
दिव्य धर्मशाला का मंजर देखा।।
देख धर्मशाला रह गया दंग।
नई सौगात का गजब है रंग।।
नतमस्तक हूँ, गुरुदेव के आगे।
उपमेय नहीं, बस भाग्य समाज के जागे।।

-रमेश रावल
डेलची (माकड़ोन), उज्जैन
मो. 8085851920

चित्रमय झलकियाँ...

श्री हाटकेश्वर धाम में प्राप्त दान राशि

श्री भेरुलाल मेहता, शाजापुर	5,000/-
श्री भुवनेश दवे	2,010/-
लुनेरा जिला रतलाम	
(स्व.श्रीमती शशिदेवी दवे की स्मृति में)	
श्री बाबुलाल नागर, इटावा	2,521/-
स्व.कन्हैयालाल नागर (मास्टर साहब की स्मृति में)	
श्री मणीशंकर नागर इटावा	5,000/-
स्व.श्री बापुलालजी नागर की स्मृति में	
श्री जगदीशचन्द्र शर्मा, इटावा	11,000/-
पिता स्व.छगनलाल शर्मा, माता स्व. लीलाबाई शर्मा की स्मृति में	
श्री राजेन्द्र नागर, पीपलू	1,001/-
श्री अनिल रामगोपाल नागर, पीपलू	1,000/-
श्री मदनलाल नागर, पीपलू	2,100/-
श्री चन्द्रशेखर, बाबूलाल नागर, पीपलू	501/-
श्री सुरेश वासुदेव नागर, पीपलू	1000/-
श्री राम गोपाल रावल, पीपलू	1000/-
श्री घनश्याम नारायण रावल पीपलू	1000/-
श्री रूपनारायण हीरालाल रावल, पीपलू	1000/-
श्री रमेश वासुदेव नागर पीपलू	501/-
श्री शंकरलाल नागर	3001/-
श्री अशोक रामगोपाल, पीपलू	1000/-
श्री कमल रामगोपाल नागर, पीपलू	511/-
श्री कैलाशचन्द्र नागर, खाचरोदा	5001/-
श्री रमेशचन्द्र नागर, खाचरोदा	5000/-
श्री मनोज नागर, देवास	2000/-
श्री मणीशंकर नागर, मक्सी	5001/-
श्री प्रकाश पौराणिक, देवास	3000/-
श्री ओमप्रकाश नागर, उज्जैन	501/-
श्रीमती भारती शरद नागर, उज्जैन	1101/-
श्री राजेन्द्र नागर, इन्दौर	6000/-
श्री कैलाश नागर, इन्दौर (गणेशाचार्य)	11,000/-
श्री वासुदेव त्रिवेदी, खजराना, इन्दौर	10,000/-
श्री दुर्गाशंकर नागर, उज्जैन	5000/-
श्री ओमप्रकाश नागर, इटावा	5000/-
श्री विनित शर्मा, राऊ	500/-
श्री मोहनलाल नागर (शर्मा) राऊ	10,000/-
श्री रणछोड़लाल रावल डेलची	2,100/-
श्री महेश नागर, छापरी	5,500/-
श्रीमती सुमित्र भालचन्द मेहता, उज्जैन	2,100/-
श्री महेश भट्ट, उज्जैन	1,111/-
श्रीमती शकुन्तला देवी	5,001/-
श्री मनोहरलाल शुक्ला, उज्जैन	2,001/-
श्रीमती सुशीलादेवी नागर, उज्जैन	1,501/-
श्री नन्दकिशोर नागर, सरली	1,100/-
गुप्तदान हस्ते श्री योगेन्द्र त्रिवेदी उज्जैन	11,000/-
श्री विनोद दुर्गाशंकरजी नागर, इन्दौर	10,000/-
श्री हरीश पाण्डे, मक्सी	1000/-
श्री योगेश मेहता सत्यम अपार्टमेन्ट, उज्जैन	555
श्री जनेशचन्द्र नागर, इकलेरा माता	5,511/
श्यामाबाई सुभाषचन्द्र नागर, सखीपुरा, उज्जैन	2,100/-
डॉ.शिवनारायण नागर, पचोर	2,100/-
श्री उमाशंकर रावल, खजराना	1000/-
श्री अशोक रावल, नेवरी	2,500/-
श्री दन्त्रात्रेय दीक्षित, खण्डवा	1,100/-
श्री कैलाश भट्ट, उज्जैन	1,100/-
श्रीमती मनोरमादेवी नागर, उज्जैन	1,000/-
श्री कृष्णकान्त नागर, अलखधाम, उज्जैन	10,000/-
श्री बाबूलाल मेहता	2551/-
मणिकलाल मेहता, गाँधी नगर, गुजरात	
श्री वेणीमाधव त्रिवेदी, खजराना	5000/-
श्रीमती वत्सला नागर, उज्जैन	500/-
श्रीमती सुशीला नागर, उज्जैन	501/-
श्री उमेशचन्द्र दवे, इन्दौर	500/-
श्री विष्णुदत्त नागर, इंदिरा नगर, उज्जैन	1501/-
श्री भूपेन्द्र रावल, पीपलू	1001/-
श्री प्रमोदराय झा बाँसवाड़ा	1000/-
श्री बालमुकुन्द त्रिवेदी, बांसवाड़ा	1000/-
श्री नरेन्द्रकुमार पंड्या, बांसवाड़ा	1000/-
पंडित दीलिप मांगीलाल मेहता (छड़ावद)	1,111/-
श्री देवेन्द्र कुमार पंड्या, बांसवाड़ा	1,000/-
श्री इन्द्रेश याज्ञिक बांसवाड़ा	1000/-
श्री राजेन्द्र त्रिवेदी बांसवाड़ा	1000/-
श्री मधुसुदनजी, बांसवाड़ा	1000/-
श्री कमल याज्ञिक, बांसवाड़ा	1000/-
श्री अरविन्द दवे, बांसवाड़ा	1000/-
श्रीमती भागवन्ती बाई नागर, महालक्ष्मी नगर, उज्जैन	1000/-

श्री चतुर्भुज रावल, खजराना	5000/-
श्रीमती मीराबाई पिताम्बर नागर परिवार जसवन्तपुरा, जिला जालोर	21,001/-
श्री विष्णुदत्त नागर	1,001/-
श्री दिनेश शर्मा, इटावा (भोजन प्रसादी में) पूज्य पं. राजेश्वरजी नागर की प्रेरणा से	11,000/-
श्री जमनाप्रसाद पाठक (शुजालपुर वाले) उज्जैन	511/-
श्री विजयप्रकाश मेहता, न्यासी सदस्य नागदा	501/-
डॉ.अनिल दुबे, नागदा	501/-
श्री जगदीश नागर, धाराखेड़ी वाले, उज्जैन	101
गुप्त दान	100/-
श्रीमती योगिता रावल, उज्जैन	201/-
श्री जगदीश रावल, डेलची	120/-
श्री त्रिभुवन शर्मा, बिहार	111/-
श्रीमती सविता नागर, सखीपुरा, उज्जैन	500/-
पंडित शेषनारायण शर्मा, सिद्धनाथ भैरुगढ़	505/-
श्री प्रकाशशंकर मेहता, उज्जैन	100/-
श्यामादेवी खाराकुँआ, उज्जैन	101/-
मनोहरप्रसाद नागर, ऋषि नगर, उज्जैन	1,000/-
उषा मेहता, ऋषि नगर, उज्जैन	1001/-
श्री पुष्करलाल रावल, रतलाम	2,100/-
श्री अरुण नागर, 44, विद्यानगर, उज्जैन	500/-
श्री नागेश्वर नागर 'सेमदा'	500/-
श्री अमृतलाल नागर, माकड़ोन	500/-
श्री मोहनलाल भट्ट, खजराना	5,000/-
श्री लोकेश शुक्ला नयापुरा, उज्जैन	500/-
श्री ओमप्रकाश नागर, रेवास देवड़ा	1,100/-
शौर्यादित्य नागर, इन्दिरा नगर, उज्जैन	1,100/-
ख्याति वन्दन नागर, उज्जैन	200/-
श्रीमती उषा अभिमन्यु त्रिवेदी, उज्जैन	100/-
श्री अभिमन्यु त्रिवेदी, उज्जैन (गड़बड़ नागर)	50/-
डॉ.अरुण व्यास, उज्जैन	500/-
श्री लोकेश गंगाप्रसाद नागर, सखीपुरा	150/-
श्री प्रकाश नागर, पंथपिपलाई	500/-
श्री डॉ.विजय शंकर त्रिवेदी	501/-
श्री आत्माराम नागर, इंदिरा नगर, उज्जैन	101/-
श्री देवेन्द्र मेहता, इंदिरा नगर	250/-
गुप्तदान हस्ते श्री देवेन्द्र व्यास	500/-
श्री चिन्तामन मेहता, सी-321, विवेकानन्द, उज्जैन	201/-
श्री बालकृष्ण नागर, मंछामन नगर, उज्जैन	151/-
श्री विजय त्रिवेदी	110/-
श्रीमती चमेलीदेवी रावल, त्रिवेदी, मड़ावदा द्वारा श्री राजेन्द्र रावल	11,001/-
श्री सुरेश रावल, न्यासी सदस्य उज्जैन	15,000/-
गुप्त दान	1000/-
डॉ.बालकृष्णजी त्रिवेदी, इन्दौर	75,001/-
श्रीमती पुष्पाबाई कमरा पेटे. बालकृष्ण मेहता	11,000/-
श्री हर्ष रमेश नागर, परोत	5,000/-
श्री नवीन त्रिवेदी, इन्दौर	500/-
श्रीमती हेमलता शर्मा, भोपाल	500/-
श्री मनीष अनिरुद्ध रावल, अहमदाबाद	500/-
श्री शंकरलाल नागर बीमा नगर, इन्दौर	31,000/-
श्री बाबूलाल नागर पत्रकार पिपल्यामंडी	11,000/-
श्रीमती श्यामादेवी नागर (चक्की वाले), राऊ	11,000/-
श्री नारायणप्रसाद नागर, देवास	11,000/-
श्री हर्ष नागर श्री रमेश नागर परोत (उज्जैन)	5000/-
श्री डॉ.शिवनारायण नागर पचोर	1 कमरा निर्माण की घोषणा
श्री रामगोपाल नागर बैंक कॉलोनी, इन्दौर	वाटर कूलर
श्री उमाशंकर रावल, खजराना, इन्दौर	1 एलसीडी 32 इंच
श्री गिरिजाशंकर नागर (न्यासी सदस्य), राऊ	1000 नग स्टील गिलास
श्री महादेव प्रसादजी नागर, सुखेड़ा (रतलाम)	1000 नग स्टील व कटोरी

मालव माटी के लाल...आपने कर दिया कमाल...

पं.कमलकिशोरजी नागर का समर्पण अमर रहेगा...

मालव माटी के लाल पं.श्री कमलकिशोरजी नागर ने अपनी लोकप्रियता के प्रारम्भिक दौर से ही सेवा को अपना लक्ष्य बनाया। दान में प्राप्त राशि से मंदिर, आश्रम गौशालाएँ एवं पवित्र नदियों पर घाट का निर्माण उन्होंने करवाया पश्चात् वे नागर समाज की गतिविधियों से भी जुड़े रहे। वैसे उनका जोर गाँव-गाँव, नगर-नगर में गोशालाओं के निर्माण का ज्यादा रहा।

खासकर उनके प्रवचन जिस-जिस स्थान पर हुए हैं, वहाँ-वहाँ गोशालाओं का निर्माण हो गया है तथा बुढ़ी, बीमार एवं निशक्त गायों को वहाँ रखा जा रहा है। केवल गोशाला के निर्माण तक ही उनका मिशन सीमित नहीं है, बल्कि इन अनेक गोशालाओं का संचालन सुचारु रूप से हो इस हेतु भी वे प्रबंध समितियों के सीधे सम्पर्क में रहते हैं। जिस समय उनके श्रीमद् भागवत् कथा के कार्यक्रम नहीं हो रहे होते हैं तब वे इन गोशालाओं का दौरा कर वहां की व्यवस्थाओं को स्वयं देखते हैं।

चूंकि उनके कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक होते हैं, अतः ग्रामीणों की समस्याओं का निदान वे सर्वप्रथम करते हैं। उनके गृह गाँव सेमली (जि. शाजापुर) में भगवान शंकर पार्वती का मंदिर, गोशाला एवं यदि कहा जाए कि गोतीर्थ का निर्माण करवाया है तथा उज्जैन में चिंतामण में आश्रम, गौशाला का भव्य निर्माण करवाया है। इन्दौर में गोम्मटगिरी पर भव्य गोशाला का निर्माण उन्होंने करवाया है। पवित्र नदी माँ नर्मदा के किनारे औंकारेश्वर तीर्थ में भव्य नागर घाट एवं यात्रियों के ठहरने हेतु विशाल जहाजाकार भवन निर्माण करवाया है। पं. नागरजी का लक्ष्य धर्म के साथ सेवा का रहा है, यात्रियों की सेवा, गोसेवा समाज की सेवा, उसी के मद्देनजर ज्यादातर निर्माण हुए हैं। इसी के साथ अपने नागर समाज के प्रति उनका लगाव बना रहा तथा वे समाज की उन्नति में सहभागी बनने का प्रयास करते रहे। इस हेतु उन्होंने जगह-जगह कार्यक्रम आयोजित कर वृद्धजनों का सम्मान करने का प्रस्ताव दिया एवं इन्दौर, उज्जैन, देवास पीपलरावां आदि शहरों में आयोजित कार्यक्रमों का निर्देशन किया तथा वे स्वयं उपस्थित रहे, उसी दौरान इन्दौर में शिवांजलि ट्रस्ट की सूरज नगर स्थित भूमि भी उन्हें धर्मशाला निर्माण हेतु दिखाई थी, परन्तु वह स्थान उन्हें पसंद नहीं आया तथा

पं. नागरजी का लक्ष्य धर्म के साथ सेवा का रहा है, यात्रियों की सेवा, गोसेवा समाज सेवा उसी के मद्देनजर ज्यादातर निर्माण हुए हैं। इसी के साथ अपने नागर समाज के प्रति उनका लगाव बना रहा तथा वे समाज की उन्नति में सहभागी बनने का प्रयास करते रहे।

बात आगे नहीं बढ़ पाई। फिलहाल भी समस्या यह है कि ऐसा लगता है कि पंडितजी समाज के लिए बहुत कुछ करना चाहते हैं बल्कि उज्जैन में श्री हाटकेश्वर धाम का निर्मण करवाकर उन्होंने इस बात के संकेत भी दिए हैं, लेकिन समाज उनसे जुड़ नहीं पा रहा है। श्रीमद् भागवत् कथा के अनेक कार्यक्रम जो देश के कोने-कोने में होते हैं, अनगिनत गोशालाओं की व्यवस्था में वे अत्यंत व्यस्त रहते हैं, अतः समाज के पदाधिकारी आगे बढ़कर सतत सम्पर्क से ही उनसे जुड़ सकते हैं कोई भी पहल कर सकते हैं। मुझे याद है कि जब हाटकेश्वर धर्मशाला को तोड़कर नई बनाने का प्रस्ताव पूर्व अध्यक्ष श्री रामरतनजी शर्मा की अध्यक्षता वाले न्यास मंडल ने पारित किया था एवं दान प्राप्त करने के लिए जो सूची बनाई थी, उसमें पं. नागरजी का नाम पहला था और उसी परिप्रेक्ष्य में मैं और पवन शर्मा ने सर्वप्रथम गुरुजी से गोम्मटगिरी में मुलाकात कर इस बाबद उनसे चर्चा की, मैं यहाँ स्पष्ट रूप से बताना चाहता हूँ कि पहली मुलाकात में उन्होंने प्रस्तावको समुचित तवज्जों नहीं दी थी, लेकिन उनके ध्यान में यह बात आ जरुर गई थी, बाद में न्यास मंडल के सदस्य भी सतत सक्रिय रहे तथा उस पहले नाम पर पूरा ध्यान बनाए रखा, जहाँ भी गुरुजी से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ, उन्होंने अपनी बात रखी।

तीन-चार मुलाकातों के बाद गुरुजी दूसरी मंजिल पर एक हाल बनाने की बात पर सहमत हुए, फिर उन्होंने सोचा, कब समाज से दानराशि प्राप्त होगी, कब निर्माण होगा, तो उन्होंने भूतल का हाल बनाने की स्वीकृति प्रदान कर दी और जब वे एक बार उस अभियान से जुड़े तो पूरा धाम ही बना दिया। कहने का मतलब यह है कि उन्होंने सेवा को ही अपना उद्देश्य बना रखा है, वे बगैर किसी नाम या फोटो के उसे करना चाहते हैं वे यह भी चाहते हैं कि उनमें कभी भी कर्ता भाव नहीं आए, तेरा तुझको अर्पण का भाव रखते हैं। अब यह सेवा प्राप्त करने वाले के ऊपर भी निर्भर है कि उसकी कितनी रुचि है। पूज्य गुरुदेव ने उज्जैन में श्री हाटकेश्वर धाम का निर्माण कर कीर्तिमान स्थापित किया है तथा यह संकेत भी दिया है कि समाज एक कदम आगे बढ़ाएगा तो वे चार कदम आगे बढ़ेंगे।

-दीपक शर्मा

बटुकों को संस्कार, दिक्षा, संयम एवं अनुशासन से आभामण्डित करने वाला

यज्ञोपवीत संस्कार धूम-धाम से सम्पन्न

उज्जैन। ब्राह्मण समाज उज्जैन के वरिष्ठ एवं चिकित्सा के क्षेत्र में अपनी लंबी सेवा देने वाले डॉ.चन्द्रकांत व्यास के तीनों पौत्र चि. आदित्य (सुपुत्र- श्रीमती वर्षा हेमन्त व्यास), चि.अथर्व (सुपुत्र श्रीमती प्रीति शैलेन्द्र व्यास), एवं चि. आराध्य (सुपुत्र- श्रीमती राधिका संजय व्यास) का यज्ञोपवित संस्कार दिनांक 22 मई 2015 को आनन्द, उल्लास और अपनी श्रेष्ठ यादों के साथ सम्पन्न हुआ। भगवान हाटकेश्वर की असीम कृपा के कारण तपती दुपहरी में भी शीतलता का असहास कराती रही, इसके लिए व्यास परिवार द्वारा अतिरिक्त एवं विशेष इंतजाम किया गया था। बड़ी संख्या में आमंत्रित समाजजनों के साथ नगर की सामाजिक, राजनैतिक, हस्तियां, बटुकों को आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित रही।

उपनयन संस्कार की पूर्व संध्या पर यादगार संगीत संध्या का आयोजन भी किया गया था, जिसमें परिवारजनों की प्रस्तुती के साथ नगर के श्रेष्ठतम कलाकारों ने अपनी प्रस्तुती देकर सबका मन मोह लिया। यह संगीत संध्या विशेष रूप से इसलिये भी याद की जावेगी, क्योंकि इन्दौर नागर समाज के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री आशीष त्रिवेदी एवं श्रीमती प्रमिला त्रिवेदी जो अभिनय के साथ युगल नृत्य किया वह बड़ा अद्भुत एवं आकर्षक था। साथ ही श्री आशीष मेहता ने अपनी अर्धांगिनी श्रीमती मोना मेहता के साथ जबरजस्त आकर्षक नृत्य एवं अभिनव प्रस्तुति देकर खूब तालिया बटोरी, सबका दिल जीत लिया।

दिनांक 22 मई को प्रातः 7 बजे से नागर समाज की आध्यात्मिक हस्ती प्रकाण्ड विद्वान पं. श्री कैलाशजी शुक्ल के आचार्यत्व में यज्ञोपवित संस्कार सम्पन्न कराया गया। उनके सहयोगी के रूप में पं.श्रीराम नागर (शास्त्री) भी इस अनुष्ठान में अपना योगदान दे रहे थे।

व्यास परिवार के पं.हेमन्त व्यास, जो कि अभिनय की दुनिया में भी सक्रिय है, इस अवसर पर उनके फिल्मी मित्र प्रसिद्ध अभिनेता टारजन फैम, श्री हेमन्त बिरजे, 500 से अधिक फिल्मों में कार्य कर चुके हास्य अभिनेता बिरबल साहब, प्रसिद्ध कव्वाल शंकर शंभु के योग्य एवं गुणी पुत्र सुफी गायक, श्री प्रदीप पंडितजी एवं इण्डियन आयडल की विजेता सुश्री कंचन मिश्रा भी अपनी आवाज का जादू बिखेरने के लिए विशेष रूप से माया नगरी मुम्बई से पधारी।

इस अवसर पर नागर समाज की प्रमुख हस्तियां जिसमें पं. विजय शंकरजी मेहता, प्रसिद्ध सुश्री वर्षा नागर, श्री गणेशाचार्यजी महाराज (गुरुजी) का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ।

व्यास परिवार द्वारा आतिथ्य सत्कार के साथ सुस्वादिष्ट व्यंजनों की बगिया सजाई गई थी, उसके साथ आनन्द एवं हर्ष के साथ यह आयोजन निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम उत्कृष्ठ व्यवस्थाओं के साथ ही परिवार के सभी सदस्यों द्वारा आत्मीयतापूर्वक सत्कार एवं अभिनन्दन के लिये लंबे समय तक याद किया जावेगा।

-ओमप्रकाश नागर
वृन्दावन धाम, उज्जैन

नागर ब्राह्मण समाज का प्रथम सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न

मंदसौर। म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद् क्षेत्रिय शाखा मंदसौर एवं धर्मशाला लोक न्यास मंदसौर द्वारा हाटकेश्वर धाम मंदसौर पर समाज के बच्चों का प्रथम सामूहिक यज्ञोपवित संस्कार कार्यक्रम आचार्य श्री पंडित देवेश्वर जोशीजी एवं इनके सुशिष्यों द्वारा सम्पन्न करवाया गया है। इसमें मंदसौर जिले के आसपास अंचलों में निवासरत सामाजिक बन्धुओं के ५ बटूकों आशीष पुत्र श्रीमती सरला-प्रकाश नागर दलौदा, परमेश्वर एवं श्री निलेश पुत्र श्रीमती यशोदाबाई-शिवनारायण नागर उदपुरा, राजेश पुत्र श्रीमती निर्मला-ओमप्रकाश नागर पंचपहाड (राज.), आशुतोष पुत्र राधाबाई-नंदकिशोर नागर शक्करखेडी का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न करवाया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री देवेश्वर जोशी ने बटूको को ब्राह्मणत्व हेतु यज्ञोपवित संस्कार के महत्व की जानकारी देते हुए इसके लिये पूजा एवं सात्विक उच्च संस्कारों पर चलकर ब्राह्मणों के गौरव की सदैव रक्षा करने एवं हमारे ऋषि मुनियों के बताये रास्ते पर चलने की शिक्षा दी गई।

इस अवसर पर बटूकों के परिवारजनों के साथ ही नागर ब्राह्मण समाज परिषद्/न्यास के वरिष्ठ समाजसेवी सर्व श्री जमनाप्रसाद नागर, रमेश नागर दलौदा, जगदीश नागर, श्रीमती विद्यादेवी शुक्ल प्रतापगढ़, भागीरथ नागर, उपाध्यक्ष बालमुकुन्द नागर, कमलेश शुक्ल, ओमप्रकाश दवे, महेश व्यास, जगदीश नागर, सुरेश नागर, समाज अध्यक्ष जयेश नागर, सचिव सतीश नागर, गोविन्द नागर, नीमच इकाई के पूर्व अध्यक्ष रमेश नागर जनकपुर, ओमप्रकाश नागर, राष्ट्रीय परिषद् के डॉ. राजेन्द्र नागर, बाबूलाल नागर, रामस्वरूप नागर, जगदीश नागर, उपाध्यक्ष अलका नागर, कोषाध्यक्ष निर्मला नागर, सचिव संगीता नागर, दिनेश नागर, कमलेश नागर सहित समाजजन उपस्थित थें।

नागर ब्राह्मण समाज द्वारा यह प्रथम प्रयास है। समाज आगामी श्रावण माह में स्थापना दिवस, अभिषेक व परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाह के कार्यक्रमों को रखे जाने पर गंभीरता से विचार कर रहा है। उक्त जानकारी समाज द्वारा जारी एक विज्ञप्ति में समाज अध्यक्ष जयेश नागर ने देते हुए अल्प समय में समाजजनों द्वारा दिये सहयोग हेतु सभी स्नेही, सहयोगी एवं बटूकों का आभार एवं धन्यवाद दिया। साथ ही आचार्य श्री देवेश्वर जोशी द्वारा दिये अमूल्य सहयोग एवं मार्गदर्शन देने पर नागर समाज ने इनका सम्मान कर आभार व्यक्त किया गया।

-जयेश नागर
मो.नं.: 9893252869

पं. श्री राधेश्याम शर्मा द्वारा द्वारका में भागवत कथा

नागर समाज के सुप्रसिद्ध भागवत कथाकार पंडित श्री राधेश्याम जी शर्मा (मवासा) द्वारा दिनांक 2 अगस्त 2015 से 9 अगस्त 2015 तक द्वारकाधाम (गुजरात) स्थित सामवेद भवन में सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। कुरावर जिला राजगढ़, मध्यप्रदेश स्थित श्रीमद्भागवत कथा मंडल द्वारा इस कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है जिसमे पंडित श्री राधेश्यामजी शर्मा जी के मुखारविंद से प्रवाहित श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण करने के लिए राजगढ़ जिले सहित मध्यप्रदेश तथा अन्य राज्यों के अनेक स्थानों से भक्तगण द्वारका पहुंचेंगे। उक्त कार्यक्रम में समाज के सभी प्रबुद्ध भागवत कथा प्रेमियों को भी आमंत्रित किया जा रहा है। जो भी समाज जन चाहे, उक्त अवधि में द्वारका स्थित सामवेद भवन में सत्संग का लाभ ले सकते है।

-ओ.पी.शर्मा भोपाल-9826047546

पं. रवि नागर की भागवत कथा नेनावद में

भागवत कथाकार पंडित रवि नागर लसुर्डिया ब्राह्मण के श्री मुख से ग्राम नेनावद तहसील तराना जिला उज्जैन के महाकाल मंदिर में दिनांक 27 मई से 2 जून तक सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद् भागवत् ज्ञान गंगा का आयोजन किया गया।

जिसके आयोजक समस्त ग्रामवासी एवम् महाकाल मंदिर समिति नेनावद रहे।

पंडित श्री रवि नागर की संगीतमय भागवत् कथा में बड़ी संख्या में आस पास के ग्रामीण क्षेत्र के श्रद्धालु ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेकर कथा का रसपान किया।।।

-हितेश व्यास
लसुर्डिया ब्राह्मण जिला देवास।

क्या आप बनेंगे 'वाणी' प्रकाशन में सहभागी?

क्या आप जानते हैं कि विगत 9 वर्षों से सतत प्रकाशित हो रही जय हाटकेशवाणी के सम्पादन, प्रकाशन एवं वितरण में कितनी परेशानी आती है, कितना आर्थिक बोझ उठाना पड़ता है। यह आसान काम नहीं है। बात करना जितना आसान होता है, काम करना उतना ही मुश्किल। हम भी अनेक समाजजनों से मिलते हैं तथा वे आश्चर्य भी व्यक्त करते हैं कि आखिर 550 रु. में कैसे आजीवन पत्रिका भेजी जा सकती है? सम्पन्न समाजजनों का परामर्श भी रहता है कि इस शुल्क को आप बढ़ाईये, परन्तु उपरोक्त शुल्क बहुत सोच-समझकर तय किया गया है, कि जिसे प्रत्येक परिवार वहन कर सके। इन सब विचारों और सुझावों के बीच हमने तय कर एक योजना बनाई है जिसमें आप 'वाणी' प्रकाशन में सहयोगी बन सकते हैं।

तीन हजार में छः विज्ञापन- आप तीन हजार रुपए हमारे पास अग्रिम जमा करवाएं तथा उसके बदले 6 एक चौथाई कलर विज्ञापन साल भर में कभी भी छपवाएं। ये विज्ञापन जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ, उपलब्धि, बधाई या पुण्य स्मरण के छपवाए जा सकते हैं। यदि आप अन्य किसी को बधाई देना चाहते हैं तब भी ये विज्ञापन प्रकाशित करवा सकते हैं। विज्ञापन हेतु अग्रिम राशि के साथ ही हमें सालभर के 6 विज्ञापन का प्रोग्राम भी दे देवें। यह राशि जमा होते ही 'वाणी प्रकाशन के सहयोगी' सूची में हम आपका नाम पता एवं मोबाइल प्रकाशित करेंगे। क्या आप बनेंगे हमारे सहभागी....समाज के सहयोगी...? तो सम्पर्क करें- 9425063129

म.प्र.नागर निर्देशिका का प्रकाशन अंतिम चरण में

सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में गाँव, शहर में बसे नागरजनों की एक निर्देशिका का प्रकाशन अतिशीघ्र किया जा रहा है, हमारा प्रयास है कि एक भी नागर परिवार निर्देशिका में सम्मिलित होने से छूटना नहीं चाहिए। इसलिए भरसक प्रयास किए गए हैं। निर्देशिका में परिवार के मुखिया का नाम, डाक का पता, फोन, मोबाइल नंबर, ब्लड ग्रुप एवं कार्यक्षेत्र का विवरण प्रकाशित किया जा रहा है। कई परिवारों ने सशुल्क प्रविष्टि के रूप में पूरे परिवार का विवरण फोटो सहित प्रकाशन हेतु दिया है। परन्तु जिन परिवारों ने विशेष प्रदर्शन हेतु निर्देशिका में स्थान आरक्षित करवाकर जानकारी तो उपलब्ध करवा दी है, परन्तु फोटो अभी तक नहीं भेजे हैं, वे फोटो अतिशीघ्र हार्डकापी में या ई-मेल पर भिजवा देवें, क्योंकि अत्यंत संग्रहणीय बहुउपयोगी निर्देशिका ग्लेज्ड पेपर पर रंगबिरंगी प्रकाशित होगी, जाहिर है कि उसमें उनके परिवार की जानकारी तो होगी, परन्तु रंगीन फोटो नहीं होगा, तो उन्हें पछतावा जरुर होगा। अतः फोटो अवश्य उपलब्ध करवा देवें। ज्ञातव्य है कि पूरे 6 वर्षों के पश्चात् ऐसी निर्देशिका का प्रकाशन हो रहा है और भविष्य में पुनः ऐसा अवसर कब आएगा यह अनिश्चित है, अतः इस शानदार अवसर का तुरन्त लाभ उठाएँ।

-सम्पादक

श्री अरूण मेहता के "माय जिम" का केबिनेट मंत्री द्वारा शुभारंभ

श्री लक्ष्मीकातं महेता के सुपुत्र एवं अतंर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ज्योतिष श्री कैलाश नागर गुरूजी के भांजे श्री अरूण मेहता के द्वारा इंदौर के सुखलिया क्षेत्र में स्थित अत्याधुनिक सर्वसुविधायुक्त जिम्नेशियम का 14.6.15 को म.प्र. शासन के वरिष्ठ केबिनेट मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, म.प्र. नागर ब्राम्हण परिषद के अध्यक्ष श्री राजेश त्रिवेदी टमटा, श्री कैलाश नागर गुरूजी व डिप्टी एडवोकेट जनरल श्री दीपक रावल द्वारा अपने बहुमूल्य समय में से समय निकालकर शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्ष श्री केदार रावल, इंदौर शाखा संरक्षक श्री प्रवीण त्रिवेदी, आशीष त्रिवेदी, अध्यक्ष श्री जयेश झा, उपाध्यक्ष श्री हिमांशु पुराणिक, महासचिव श्री राजेंद्र व्यास, निलेश नागर, हर्ष मेहता, प्रवीण नागर देवास, तारकेश्वर व्यास, राजेश पुराणिक सहित अनेक समाज बंधु मित्रगण उपस्थित थे।

नागर महिला मण्डल की नवनिर्वाचित कार्यसमिति की बैठक सम्पन्न

30 जून को गर्मी की छुट्टियों के बाद इन्दौर नागर महिला मंडल की नई कार्यकारिणी समिति की बैठक अध्यक्षा श्रीमती शारदा मंडलोई के निवास स्थान पर सम्पन्न हुई। श्रीमती नीलिमा दवे एवं श्रीमती दुर्गा जोशी सहित सभी सदस्याएं उपस्थित रही। सर्वप्रथम सभी सदस्यों ने आपस में एक दूसरे का परिचय प्राप्त किया। सभी नए सदस्यों के स्वागत के साथ आगामी कार्यक्रमों की रुपरेखा पर चर्चा हुई। धन्यवाद एवं आभार प्रदर्शन के साथ बैठक का समापन हुआ।

आगामी बैठक 11 जुलाई को

जुलाई माह की मासिक बैठक श्रीमती शारदा मंडलोई के निवास 331, विजय नगर पर रखी गई है। इस बैठक में आम के व्यंजन की प्रतियोगिता होगी। दीपाली मित्तल इस बैठक में विशेषरुप से उपस्थित होकर कुकिंग टीप देंगी, इस सूचना को ही प्रत्यक्ष निमंत्रण मानकर पधारें एवं विस्तृत जानकारी हेतु श्रीमती शारदा मंडलोई, श्रीमती सोनिया मंडलोई, नंदा मेहता से 9425085052, 9826344266, 9406826249 पर सम्पर्क करें।

अखबारों में छा गई नागर प्रतिभाएँ

डांस थेरेपिस्ट अदिति मेहता

नागर ब्राह्मण समाज की अनेक प्रतिभाएँ विभिन्न विधाओं में अपना उल्लेखनीय प्रदर्शन कर जन चर्चा में बनी रहती है। समाज की बेटी अदिति मेहता की उपलब्धि शहर के प्रमुख समाचार पत्र में प्रमुख स्थान पर प्रकाशित हुई। जिसमें उन्होंने बताया कि हमारी आधुनिक जीवन शैली में हमारे बॉडी मूवमेंट बहुत सीमित हो गए हैं।

हम अपने बॉडी मुवमेंट के प्रोटेंशियल को खो चुके है तो दूसरी तरफ स्ट्रेस से लेकर डिप्रेशन और अन्य बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। यदि हम अपने माइंड और बॉडी मुवमेंट की रिलेशनशिप को एक्सपोलर कर सकें तो स्ट्रेस और डिप्रेशन से लेकर इमोशनल और साइकोलॉजिक प्रॉब्लम्स से उबर सकते हैं।

इन्दौर में ही शिक्षा ले चुकी अदिति मेहता ने टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल सांईसेस से डांस थैरेपी का प्रशिक्षण लिया है। इस डांस थैरेपी के लिए क्लासिकल से लेकर कंटेम्पटी डांस की कुछ चुनिंदा मूवमेंट्स के जरिये लोगों को अपनी बॉडी के प्रति अवेयर करते हैं। हम जब भी स्ट्रेस या डिप्रेशन में होते हैं तो उसका असर हमारी बॉडी लैंग्वेज रिफ्लेक्ट पर दिखाई देता है और जब हम खुश होते हैं तब भी बॉडी लैंग्वेज होती है। इसलिए आज के तनाव भरे जीवन में डांस थैरेपी उपयोगी बनती जा रही है। हमारी कई बीमारियों का इलाज हमारी बॉडी में ही छिपा है। इस डांस मूवमेंट के जरिए जानकर और एक्सपोलर कर कई बीमारियाँ दूर की जा सकती है।

30 मिनिट के सेशन में लोगों को डांस मूवमेंट के जरिए राह दिखाते हैं कि वे उस पर चलते हुए यहाँ आ जाए जहाँ से हम उनकी थैरेपी कर सके।

वाट्सएप पर रिश्तों की बहार...

नागर ब्राह्मण समाज में कुछ नया करने की ललक हमेशा बनी रहती है, जो कुछ हटकर हो, तथा अन्य समाज भी उससे प्रेरणा ले सके। सोशल मीडिया वाट्सएप पर युवक-युवती चयनिका ग्रुप के माध्यम से दो महीने में 13 रिश्ते होने की खबर इन्दौर के प्रमुख अखबार ने प्रमुखता से प्रकाशित की है। चयनिका के ग्रुप एडमीन डॉ.नीलेश नागर जो बरसों से समाज के सक्रिय कार्यकर्ता है, ने बताया कि उनके एक रिश्तेदार अपनी बेटी की शादी के लिए परेशान थे इसी दौरान उनकी नीलेश नागर से मुलाकात हुई और एक युवक की जानकारी उन्होंने वाट्सएप के माध्यम से मंगाई। उसी समय आयडिया आया कि क्यों न वाट्सएप पर एक ग्रुप बनाकर लोगों के रिश्ते जोड़े जाएँ। उन्होंने जनवरी में नागर समाज का वाट्सएप ग्रुप बनाया, इसमें अविवाहित लड़के-लड़कियों की फोटो और बायोडाटा मंगाना शुरु किया। वाट्सएप ग्रुप के माध्यम से सबसे पहले औद्योगिक न्यायालय के प्रभारी चेयरमेन श्री प्रवीण त्रिवेदी के बेटे शांतनु और डॉ.प्रदीप शर्मा की बेटी आस्था का रिश्ता हुआ, इसके बाद तो लगभग 13 रिश्ते इससे तय हुए। वाट्सएप पर एक ग्रुप में 100 सदस्य ही जोड़े जा सकते हैं शादी कराने वाले इस ग्रुप की मांग बढ़ने के बाद ग्रुप का पार्ट 2 बनाया गया है। उसमें भी 54 मेम्बर हो चुके हैं इस ग्रुप से देशभर के समाजजन जुड़ना चाह रहे हैं। इसी प्रकार के ग्रुप बनाकर जरूरतमंद समाजजनों को आर्थिक सहयोग देने एवं युवाओं को रोजगार हेतु सूचनाओं के आदान-प्रदान के प्रस्ताव भी डॉ.नीलेश नागर को प्राप्त हुए हैं।

एक बहुत बड़े राजनीतिक भ्रष्टाचार कि सुनवाई चल रही थी वकील ने गवाह को जोर से चिल्लाते हुए पूछा- क्या ये सच नहीं कि तुमने इस मुक़दमे के समझौते के लिए 5000 डॉलर लिए हैं? क्या तुम इस बात को स्वीकार करते हो?
गवाह पर उसकी बात का कोई असर नहीं पड़ा और वो खिड़की से बाहर देखने लगा जैसे उसने कुछ सुना ही न हो!
क्या ये सच नहीं कि तुमने इस मुक़दमे के समझौते के लिए 5000 डॉलर लिए हैं वकील ने फिर चिल्लाते हुए कहा-
गवाह ने फिर भी कोई जवाब नहीं दिया!
आखिरकार वो जज के सामने झुक गया और कहा इससे कहें कि ये मेरे प्रश्न का जवाब दे!
तब जज ने कहा कि सर प्लीज इनके प्रश्न का जवाब दे!
गवाह थोड़ा सा हैरानी से कहने लगा सर इतनी देर से मुझे लग रहा था कि वो से ये सब आप पूछ रहा है!

मरणोपरान्त देह दान

चिकित्सा विज्ञान के छात्रों के ज्ञान हेतु अनुकरणीय पहल - डॉ. प्रकाश जोशी

उज्जैन। मरणोपरांत देह दान चिकित्सा विज्ञान के छात्रों के ज्ञान हेतु अनुकरणीय पहल निरुपित करते हुए शा. आयुर्वेद महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. प्रकाश जोशी ने बताया कि सांची दुग्ध संघ उज्जैन से एकाउंट अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त श्री योगेश कुमार मेहता एवं उनकी धर्मपत्नी शिक्षिका श्रीमती इंदिरा मेहता ने मरणोपरांत अपनी देह दान हेतु आर.डी. गार्डी मेडिकल कॉलेज उज्जैन के एनाटॉमी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनीष पाटिल को घोषणा पत्र प्रस्तुत किया। मेहता दम्पति को मेडिकल कॉलेज की ओर से आभार एवं अभिवादन पत्र प्रेषित किया गया है।

मेहता दम्पति ने अपने इस अनोखे दान की घोषणा कर सामाजिक चेतना की दिशा में अनुकरणीय पहल की है। धार्मिक मान्यताओं एवं परम्पराओं का आजीवन निर्वहन करने वाले मेहता दम्पति ने मरणोपरान्त देहदान कर चिकित्सा छात्रों के प्रात्यक्षिक ज्ञान हेतु बहुत बड़ा त्याग किया है। मीडिया प्रभारी डॉ. प्रकाश जोशी ने बताया कि ब्राह्मण समाज में इस तरह के देह दान की घोषणा से चेतना फैलेगी और अन्य समाज के लोग भी प्रेरित होकर चिकित्सा जैसे पुण्य कार्य के लिए मरणोपरांत अपनी देह दान के लिए जागरुक होंगे। मेहता दम्पति को समाज की ओर से साधुवाद के साथ-साथ अभिनंदन भी किया गया।

-डॉ. प्रकाश जोशी, मो. 9406606067

सहयोग के लिए तत्पर है नागर बंधू

नागर ब्राह्मण समाज में आपसी सहयोग के प्रति जागरुकता बढ़ी है। इन्दौर में चिकित्सा में सहयोग हेतु श्रीमती प्रभादेवी शर्मा आकस्मिक चिकित्सा कोष समय-समय पर आकस्मिक अवस्था में सहयोगी साबित होता है, अब सोशल मीडिया को भी इस हेतु सक्रिय एवं कारगर किया जा रहा है। विगत 5 जून को म.प्र. नागर परिषद् शाखा इन्दौर के महासचिव श्री राजेन्द्र व्यास ने मुझे बताया कि बाहर से इन्दौर आकर रह रहे एक परिवार के वरिष्ठ सदस्य का किडनी का इलाज स्थानीय गीता भवन में चल रहा है, तथा उनके पुत्र की चूंकि प्रायवेट नौकरी है तथा वे अस्पताल का खर्च उठाने में असक्षम है अतः मैं एवं छोटे भाई पवन शर्मा तुरन्त अस्पताल पहुँचे तथा भर्ती मरीज के सुपुत्र से सम्पर्क किया। उन्हें अस्पताल अधीक्षक डॉ.रमाकांत पंचोली से मिलवाकर पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिलवाया तथा उन्हें श्रीमती प्रभादेवी शर्मा आकस्मिक चिकित्सा कोष से 5000 रु. का सहयोग दिया। मैंने डॉ.नीलेश नागर से सम्पर्क किया कि सोशल मीडिया के द्वारा भी उपरोक्त पेशेंट के लिए सहयोग मांगा जाए, उन्होंने वाट्सअप पर यह सूचना जारी की तथा परिणाम स्वरूप अनेक नागरजन सहयोग हेतु आगे आए। श्री राजेश त्रिवेदी 'टमटा' ने 1000, डॉ.अरुण जोशी ने 2000, श्री निखिल व्यास ने 500, हर्ष मेहता 500, गुप्त दान- 500 एकत्र कर स्वयं डॉ.नीलेश नागर ने डिस्चार्ज के समय उपस्थित रहकर अस्पताल का देयक भुगतान करवाया। सुखद यह रहा कि उपरोक्त पेशेन्ट स्वस्थ होकर अपने घर पहुँच गए। यह वास्तविकता है कि जहाँ कहीं जरुरत हो समाज को आगे बढ़कर सहयोग देना चाहिए। हमारा सभी समाजजनों से आग्रह है कि वे इस तरह के जरूरतमंद लोगों को ध्यान में लाएं ताकि उनका यथासंभव सहयोग हो सके।

-दीपक शर्मा मो. 09425063129

जय हाटकेश वाणी का प्रयास

ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को इन्दौर में शिक्षण व्यवस्था में सहयोग

जैसा कि आप सब जानते हैं कि इन्दौर में शिक्षण एवं आवास दोनों महंगे हो गए हैं। दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे यहाँ आकर पढ़ाई तो करना चाहते हैं परन्तु यह आसान नहीं रहा। इसी समस्या का समाधान जय हाटकेश वाणी इस शैक्षणिक वर्ष से प्रस्तुत करने जा रही है, जिसके अंतर्गत प्रथम प्रयास के रूप में पांच ग्रामीण बच्चों को इन्दौर में आवास सुविधा देकर उनकी पढ़ाई की व्यवस्था हेतु होनहार एवं जरुरतमंद बच्चे सम्पर्क कर सकते हैं। याद रहे कि दसवीं या बारहवीं उत्तीर्ण बच्चों को तथा कामर्स या सी.ए. पढ़ाई करने वाले बच्चों की आवश्यकतानुसार उन्हें आवास, भोजन एवं शिक्षण की सुविधा दी जाएगी। विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें - **दीपक शर्मा, मो. 9425063129**

विदेश में जाकर अनिरुद्ध ने समाज एवं देश को गौरवान्वित किया

शाजापुर में श्री गोवर्द्धननाथ मंदिर के मुखिया स्वा. श्री कृष्णदासजी मेहता के पौत्र एवं श्री बी.जी. मेहता (संभागीय उपायुक्त इन्दौर) के पुत्र श्री अनिरुद्ध मेहता ने द युनिवर्सिटी) ऑफ टेक्सास एट डालास (युएसए) में मास्टर ऑफ साईंस-इंफरमेशन टेक्नॉलॉजी एंड मैनेजमेन्ट में जीपीए 3.5 ऑफ 4 (88 प्रतिशत) अंक प्राप्त किए हैं। अनिरुद्ध ने शुरुआत से ही अच्छे से अच्छे स्कूल तथा संस्थान से शिक्षा प्राप्त की एवं उपलब्धि भी श्रेष्ठ प्राप्त की। शाजापुर में महर्षि विद्या मंदिर, रतलाम में गुरु तेग बहादुर धार में सेन्ट्रल स्कूल और इन्दौर में एमरल्ड हाईट्स इंटरनेशनल स्कूल। इसके बाद बी.टेक., आयटी, एमीटी युनिवर्सिटी राजस्थान से किया। उसके बाद बहुत कठिन परीक्षा मानी जाने वाली जी.आर.ई. और टफेल टॉप स्कोर से क्लीयर की। जी.आर.ई. में 340 में से 318 अंक तथा टफेल में 120 में से 103 अंक प्राप्त किए। युनिवर्सिटी में स्टेटिस्टिक्स, प्रोजेक्ट मैनेजर आर्गेनाईजेशन बीहेवीअर जैसे सब्जेक्ट में 100 अंक प्राप्त किए और बिजनस इंटिलीजेंस, अकाउंटिंग फॉर मैनेजर्स जैसे सब्जेक्ट में अव्वल नम्बर लिए। इसके अलावा युनिवर्सिटी से प्रमाण पत्र भी हांसिल किया।

एसएएस, युटीडी सर्टिफिकेशन इन बिजनस इंटिलीजेंस एंड डाटा माईनिंग, अनिरुद्ध पढ़ाई के अलावा अन्य गतिविधियों में भी आगे रहे हैं। इन्होंने बचपन से लेकर अभी तक स्पोर्ट्स में कई गोल्ड मेडल जीते हैं जैसे कि शॉट पुट, डिस्क थ्रो, लांग जम्प, हाई जम्प, 100 मीटर रेस, टग फार वार आदि।

अनिरुद्ध एमिटी युनिवर्सिटी ओवरआल कबड्डी टीम के कैप्टन रह चुके हैं 2008 में अनिरुद्ध साफ्टबाल में स्टेट लेवल कम्पीटिशन खेल चुके हैं। अनिरुद्ध एमिटी युनिवर्सिटी के डिसीप्लीन को-ऑर्डिनेटर 2008-2009 एवं जीम को-आर्डिनेटर, परफेक्ट 2009-2012 रह चुके हैं। अनिरुद्ध मॉडलिंग का भी थोड़ा बहुत शौक रखते हैं इन्होंने अभी तक 30 से ज्यादा माडलिंग शो किये हैं। जिनमें से ज्यादातर शोज में शोजटॉपर रहे हैं। अनिरुद्ध अमेरिका में युनिवर्सिटी में इंटरनेशनल वीक सेलिब्रेशन प्रोग्राम में भी ओवर ऑल शोज टॉपर बने और इंडियन आउटफिट को प्रजेन्ट किया। इस आयोजन में विभिन्न देशों ने हिस्सा लिया था। अनिरुद्ध का व्यवहार बहुत ही सोम्य और विनम्र है। वो सभी लोगों को मान-सम्मान की नजर से देखते हैं। वे अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखते हैं तथा व्यस्तता के बावजूद प्रतिदिन जिम जाते हैं। क्योंकि स्वस्थ तन ही, स्वस्थ दिल-दिमाग और आत्मा का प्रमाण है।

प्रस्तुती- सौ. बिन्दु-प्रदीप मेहता, इन्दौर

श्री दीपक रावल डिप्टी एडवोकेट जनरल नियुक्त

श्री भोलेश्वर रावलजी के सुपुत्र एवं म०प्र० नागर ब्राम्हण परिषद के उपाध्यक्ष श्री केदार रावल के अनुज इंदौर नागर ब्राम्हण परिषद के संरक्षक तथा असिस्टेंट सालीसीटर जनरल केंद्र सरकार श्री दीपक रावल को म०प्र० सरकार द्वारा भी उनके अनुभव एवं वरिष्ठता को देखते हुए म०प्र० उच्च न्यायालयय इंदौर बेंच के लिए डिप्टी एडवोकेट जनरल उपमहाधिवक्ता नियुक्त किया गया हैं। उल्लेखनीय है कि श्री दीपक रावल केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार दोनों की ओर से उच्च न्यायालय में पैरवी करने वाले प्रथम व्यक्ति हैं श्री रावल की इस उपलब्धि पर म०प्र० नागर ब्राम्हण परिषद सहित इंदौर, शाजापुर, उज्जैन, खंडवा, मंदसौर, रतलाम, प्रतापगढ आदि की नागर ब्राम्हण परिषद शाखाओं द्वारा हर्ष व्यक्त किया जाकर उन्हें बधाई प्रेषित की गई है। श्री दीपक रावल सदैव समाज के लोगों की मदद करने हेतु हमेशा तत्पर रहते हैं

अभिषेक नागर ने इंफोसीस ज्वाईन की

मंदसौर। नागर समाज मंदसौर के मेघावी छात्र अभिषेक नागर पुत्र श्री सतीश नागर-श्रीमती निर्मला नागर ने देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर से बी.ई. की वर्ष 2015 में 76 प्रतिशत अंकों में आनर्स डिग्री प्राप्त की गई। अभिषेक शुरू से पढने में अव्वल रहते हुए कक्षा 10वीं व 12वीं सीबीएसई सेन्ट्रल स्कूल, मंदसौर में उत्तीर्ण होने पर इन्हें नागर समाज मंदसौर एवं राज्य स्तरीय नागर परिषद् उज्जैन द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में प्रशस्ती पत्र एवं ट्राफी से पुरस्कृत किया जा चुका है। अभिषेक का चयन (केम्पस सिलेक्शन) बी.ई. (आई.टी.) में अंतिम वर्ष में अध्ययनरत रहते हुए तीन कम्पनियों में चयन होने पर दिनांक 18 मई 2015 को इम्फोसीस कम्पनी मैसूर में इनके द्वारा कार्य पर उपस्थित होकर प्रशिक्षु इंजीनियर के रूप में कार्य करेंगे।

-जयेश नागर

मो.नं.: 9893252869

डॉ.मुकेश मेहता को मिला श्रेष्ठ शिक्षक अवार्ड

महू स्थित वेटरनरी कॉलेज में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत डॉ.मुकेश मेहता सुपुत्र श्री कृष्ण वल्लभ मेहता को वर्ष 2013-14 के लिये महाविद्यालय के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक का पुरस्कार प्रदान किया गया। ज्ञातव्य है कि यह महाविद्यालय नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय जबलपुर के अन्तर्गत आता है।

दिनांक 30 मार्च 2015 को जबलपुर में आयोजित एक समारोह में उन्हें यह सम्मान कुलपति द्वारा दिया गया। महाविद्यालय के अधिष्ठाता, प्राध्यापक गण एवं छात्रों ने इस उपलब्धि पर डॉ. मेहता को बधाइयां दी। नागर समाज भी उन्हें इस सम्मान को प्राप्त होने पर बहुत-बहुत बधाईयाँ देता है एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

परिक्षित नागर श्रीराम सेना के प्रदेश उपाध्यक्ष मनोनीत

दिनांक 13 मई 2015 को श्रीराम सेना की जोधपुर में स्थानीय बैठक रखी गई जिसकी अध्यक्षता प्रदेशाध्यक्ष श्री किशोर पालीवाल ने की। उस बैठक में प्रदेश के श्रीराम सेना के अनेको सैनिक उपस्थित थे। इस बैठक में हिन्दुवादी विचार धारा के सशक्तीकरण व सशक्त भारत के निर्माण के लिये विचार गोष्ठी हुई जिसमें वक्ताओं ने अपने-अपने विचार रखें। कार्यक्रम के अंत में प्रदेशाध्यक्ष श्री किशोर पालीवाल ने सिरोही जिला के अध्यक्ष पद के लिये श्री परिक्षित नागर पुत्र श्री चम्पालालजी नागर शिवगंज को सर्वसम्मति से मनोनीत किया एवं राजस्थान प्रदेश के उपाध्यक्ष पद पर उन्हें मनोनीत किया।

दिनांक 13.5.15 श्री नागर के लिये हिन्दुवादी विचार धारा के सशक्ति करण व सशक्त भारत के निर्माण का मील का पत्थर साबित होगा। वर्तमान में श्री नागर भारतीय जनता युवा मोर्चा शाखा शिवगंज जिला सिरोही के महामंत्री पद का कार्यभार संभाल रहे हैं। श्री नागर के श्रीराम सेना जिला सिरोही के अध्यक्ष पद की नियुक्ति के बाद पहली बार शिवगंज पधारने पर श्रीराम सेना के कार्यकर्ताओं ने ढोल नगाड़ों की मधुर ध्वनि में माल्यार्पण कर गुलाल के गुब्बारे से गर्म जोशी के साथ भव्य स्वागत किया।

अखिल भारतीय नागर परिषद् शाखा सुमेरपुर (राज.) की बुहत-बहुत बधाई व उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ।

-दयाराम नागर

चि. शुभम शर्मा का सुयश

इंडियन ऑईल कार्पोरेशन लिमिटेड, नासिक में मुख्य व्यवस्थापक के पद पर कार्यरत श्री राजीव शर्मा एवं सौ. अपर्णा शर्मा के सुपुत्र चि. शुभम शर्मा ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा दसवीं वर्ष 2015 की परीक्षा में C.G.P.A. 10 (1 out of 10) प्राप्त कर अपनी शाला एवं परिवार का नाम गौरवान्वित किया। चि.शुभम शर्मा ने अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान सभी विषयों में A-1 Grade हांसिल कर C.G.P.A. 10 प्राप्ति की विशेष उपलब्धि हासिल की है। चि.शुभम को पढ़ाई के अतिरिक्त खेलकुद में विशेष रुचि है। चि.शुभम, श्री शरदकुमार शर्मा एवं सौ.मोहिनी शर्मा के सुपौत्र है। चि. शुभम को सभी शुभचिंतकों एवं हितैषियों की ओर से ढेरों बधाइयों एवं स्वर्णिम भविष्य हेतु अनेकोनेक शुभकामनाएँ और आशीर्वाद।

-सौ.निधि दवे एवं श्री राकेश दवे
दीपनगर, भुसावल

प्राची नागर, सुमेरपुर

प्राची नागर सुपुत्री सौ.हेमलता नटवरलाल नागर सुमेरपुर की (राजस्थान) ने राजस्थान बोर्ड सीबीएसई बोर्ड की दसवी परीक्षा में 95 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रदेश की मेरिट सूची में दसवां स्थान प्राप्त किया।

चि. मयूर नागर कोटा

चि. मयूर नागर सुपुत्र राजेश्वरी नरेश नागर कोटा (राज.) ने कक्षा आठवी सीबीएसई में 95 प्रतिशत अंक प्राप्त कर कक्षा 9वीं में प्रवेश लिया। बधाई- आदर्श नागर (भाई)।

चि. हर्षित शर्मा की नियुक्ति

चि. हर्षित शर्मा की नियुक्ति माइलेन कम्पनी (मल्टीनेशनल कम्पनी में) परचेस डिपार्टमेन्ट में हुई। आपने बी.ई. मेकेनिकल एम.आय.टी. उज्जैन से व सी.एफ.डी. कोर्स बैंगलोर इंस्टीट्यूट से किया।

चि. शिवेश शर्मा को सुयश

चि. शिवेश ने सेन्टमेरी कान्वेन्ट स्कूल उज्जैन से 12वीं सीबीएसई 90 प्रतिशत से पास किया। उन्हें 22 जून को कालीदास अकादमी में विद्यार्थी मंच समिति की ओर से प्रमाण पत्र एवं शिल्ड प्रदान का सम्मानित किया गया।

कु. निष्ठा को अंग्रेजी ओलम्पियाड में स्वर्ण पदक

चि. रोहित नागर की सुपुत्री कु. निष्ठा नागर ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की दसवीं की परीक्षा में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अपने परिवार एवं नगर समाज का नाम रोशन किया। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी ओलम्पियाड में गोल्ड मेडल प्राप्त कर अपने परिवार का नाम गौरवान्वित किया। ये मेधावी छात्रा डॉ.मथुरावाला (महू) की सुपौत्री एवं सौ.अरुणा नागर की पौत्री है। ये विंध्याचल अकादमी की नियमित छात्रा है।

-अरुणा नागर
बी-42, कालानी बाग, देवास
फोन 07272-252014

चि. हिमांशु एवं कु. मोक्षदा को शैक्षणिक सुयश

देवास। सौ.शकुन्तला-वरिष्ठ पत्रकार श्री हरिनारायण नागर के पौत्र-पौत्री तथा सौ.सुनीता श्री मोहन नागर के पुत्र चि. हिमांशु नागर एवं पुत्री कु. मोक्षदा नागर ने केन्द्रीय विद्यालय बीएनपी देवास से सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम अंग्रेजी माध्यम से चि.हिमांशु नागर ने 10वीं परीक्षा में अंग्रेजी एवं गणित विषय में शत-प्रतिशत अंक अर्जन के साथ 9.4 (94 प्रतिशत) सी.जी.पी.ए. अंक अर्जित किए हैं।

इसी प्रकार कु.मोक्षदा नागर ने 8वीं परीक्षा में 9.3 (93 प्रतिशत) सी.जी.पी.ए. अंक अर्जित कर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

-सौ. बिन्दुबाला नागर

कु. दीपाली, कु. आस्था एवं चि. प्रतीक की उपलब्धि

दीपाली नागर, आस्था नागर, प्रतीक नागर सुपुत्री-सुपुत्र अरुप संगीता नागर ग्राम दड़ोली-जिला नीमच (म.प्र.) ने कक्षा-4 कक्षा-3 व एलकेजी A+ग्रेड से सनफ्लावर, इंग्लिश मीडियम स्कूल मोरवन से उत्तीर्ण होने पर दादा-दादी जय प्रकाश-कमला नागर चाचा-चाची प्रेम प्रकाश रीना नागर, ज्योति-धर्मेन्द्र शर्मा, दीपक शर्मा द्वारा सफलता पर हार्दिक बधाई उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ।

-जय प्रकाश नागर
दड़ोली, जिला नीमच मो. 9165059666

कु.रिद्धि को परीक्षा में सफलता

कुमारी रिद्धि नागर, सुपौत्री श्रीमती किरण प्रो.आर.एस. नागर एवं सुपुत्री श्रीमती अनिता श्री अमित नागर ने सी.बी.एस.ई. की 12 की परीक्षा 2015 में वाणिज्य संकाय में 88 प्रतिशत अंक एवं 3 विषयों में डिस्टिंगशन प्राप्त किया है।

नागर ब्राह्मण समाज की ओर से हार्दिक बधाई।

सुयश

स्व.श्री रमेशचन्द्र रामप्रसाद राजा की पौत्री और स्व.श्री राजेन्द्र प्रसाद वैद्य की नातिन तथा देवांग राजा तथा निराली (नेहा) की सुपुत्री ने 12वीं साईंस विषय में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त कर दोनों परिवारों एवं समाज का गौरव बढ़ाया है।

कु. सिद्धि नागर की उपलब्धि

कु. सिद्धि नागर (सुपुत्री- सौ. मिनाक्षी- नीरज नागर) ने दसवीं की परीक्षा में ए-ग्रेड प्राप्त की। इंग्लिश एवं हिन्दी कोर्स में ए1 ग्रेड प्राप्त कर परिवार एवं समाज का गौरव बढ़ाया।

आशीष त्रिवेदी
प्रखर व्यक्तित्व, संरक्षक म.प्र. नागर परिषद् शाखा, इन्दौर
अध्यक्ष- शिवांजलि पारमार्थिक ट्रस्ट
-शुभाकांक्षी- पी.आर. जोशी परिवार, इन्दौर

शुभांग शर्मा, खंडवा - 6 जुलाई
ताशी मेहता, मुम्बई - 8 जुलाई
देवयानी मेहता, इलाहाबाद - 9 जुलाई
योगिता नागर, पुणे - 25 जुलाई
नेहा शर्मा, बैंगलोर 26 जुलाई
अर्णव मेहता, हैदराबाद - 28 जुलाई
शुभकामनाएँ- गायत्री मेहता, इन्दौर

उत्कर्ष नागर
सुपुत्र- सौ.दीपिका-जितेन्द्र नागर, देवास
6 जुलाई

मनिषा नागर
सुपुत्री-सरिता-सुनिल नागर खाचरौदा (धार)
24 जून, 2015 को नौवे जन्म दिन की बधाई
दादा-दादी कैलाशचन्द सविता नागर, अंकल-विकास नागर, भाई-निखिल नागर खाचरौदा (धार)
88270 83858/9977883

दिक्षांशी नागर
भाई-निखिल नागर, नानीजी-गायत्री मेहता, पापा मम्मी-हरीश-मेघा नागर
मामाजी-पं यश मेहता- मो.-7748017100

सौ.राजेश्वरी-नरेश नागर

19वीं विवाह वर्षगांठ के शुभ अवसर पर हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाएँ।

बधाईदाता- श्री अम्बालाल नागर (पिता), कुलेन्द्रजी, अनिलजी, प्रेमजी, प्रभाशंकरजी (भाई), आदर्श व मयूर नागर (पुत्र), एवं समस्त नागर परिवार कोटा (राज.)।

510, बसन्त विहार कोटा
मो. 8058912750

विवाह की वर्षगांठ पर बधाई
9 जुलाई
एल.एन-सौ.सावित्री नागर
49वी विवाह की वर्षगांठ पर हार्दिक हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाए ।

जन्मदिन की हार्दिक बधाई
श्री राजेश नागर
17 जुलाई

दैनिक अवन्तिका शाजापुर के जिला प्रतिनिधी, नागर समाज के युवा सक्रिय सदस्य श्री राजेश नागर की पुत्री कु. दिपिका नागर ने कक्षा 12वी (कामर्स विषय से प्रथम श्रैणी मे उत्तीर्ण हुई है।

खण्डवा निवासी श्री शरद भट्ट
की पुत्री सौ.अक्षता
का विवाह जामनगर (गुज.) के
श्री द्विजन भाई आचार्य के पुत्र
चि. रितेश के संग
07 जून 2015 को
जामनगर में संपन्न हुआ है,
नवयुगल को ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ

अक्षता संग रितेश

साथ ही श्री शरद-मंजू भट्ट को 11 जून 2015 को विवाह वर्षगाठ पर बहुत सारी बधाईयां

बधाईकर्ता:
विक्रेश-नताशा याज्ञनिक (दीदी-जीजाजी),
उमेश-अल्पना दवे
एवं
कमलेश-शिखा दवे
09753799389

श्री शरद-मंजू भट्ट

वैवाहिक (युवक)

जय शैलेष कुमार भट्ट (मांगलिक)
जन्मदि. 24-9-1985
6.45 प्रातः, स्थान- रायचूर (कर्नाटक)
शिक्षा- बी.कॉम.
कद- 5'11', 65 किलोग्राम गौत्र- भारद्वाज
कार्यरत- व्यापार
सम्पर्क- 08532655418, 09036550414

हार्दिक गिरीशचन्द्र पंड्या
जन्मदि. 12-7-1983
3.05 पी.एम. खण्डवा
शिक्षा- एम.कॉम., पीजीडीसीए
कद- 5'7", वजन- 68
कार्यरत- एम.आय.टी. कॉलेज, उज्जैन
सम्पर्क- 0734-2517824, मो. 9827348396

दर्पण वरुणप्रकाश झा
जन्मदि. 9-4-1988,
समय- 2.55 पी.एम.
बूंदी (राज.) कद- 5'11"
शिक्षा- बी.टेक. (आय.टी.)
कार्यरत- सॉफ्टवेयर इंजीनियर (पुणे)
सम्पर्क- 9929456508, 8094713390

धवल दीपक देसाई

जन्मदि. 26-10-1990, खंडवा
शिक्षा- बी.ई. इलेक्ट्रीकल, एम.बी.ए. (पावर मैनेजमेन्ट), कद- 5'11"
कार्यरत- पावर मैनेजमेन्ट (भुवनेश्वर)
आय- 25,000 मासिक
सम्पर्क- कापडवंज, जिला खेड़ा (गुजरात)
मो. 09824403402, 07046394598

तन्मय मुकेश दीक्षित

जन्मदि. 20-10-1990
(5.30 ए.एम.)
स्थान-ध्रांगंध्रा जिला सुरेन्द्र नगर, कद- 6'1"
शिक्षा- बी.कॉम., एम.बी.ए. (आय.टी.)
कार्यरत- फ्रंट इन डेवलपर (सायबर इंफ्रास्ट्रक्चर, इन्दौर), सम्पर्क- इन्दौर
मो. 7582910361, 7581819320

जन्म दिनांक 25-9-1987
समय- 2.20 पी.एम. स्थान- आगरा
शिक्षा- बी.टेक. एम.बी.ए.
कार्यरत- बैंगलोर, कद- 5'11'
सम्पर्क- 09414284068, 09530152456

विकास कैलाशचन्द्र नागर

जन्मदि. 10-7-1983
शिक्षा- हायर सैकण्डरी
कार्यरत- स्वव्यवसाय किराना दुकान
मासिक बचत- 15,000
सम्पर्क- 8827083858, 9977883376

स्वरीश भेरुशंकर दशोरा

जन्मदि. 17-6-1988, इन्दौर
शिक्षा- एमटेक कम्प्यूटर साईंस- कद- 5'11"
कार्यरत- एरिक्सन ग्लोबल चैन्नई
सम्पर्क- उदयपुर
मो. 09461915274

जयेश शुक्ला

जन्मदि. 7-1-1986
स्थान-रतलाम
12.30 ए.एम.
कद- 5'3"
कार्यरत- शासकीय सेवा शिक्षा विभाग
सम्पर्क- मो. 9907650012

उम्र 27 कद-6'
शिक्षा- BSC, I.T., M.B.A. Marketing
कार्यरत- सीनियर एक्जीक्यूटीव, गोवा
सम्पर्क- 07417984404

सर्व ब्राह्मण समाज के सदस्य नागर ब्राह्मण समाज से अत्यंत प्रभावित हैं तथा अपने बच्चों के सम्बंध नागर ब्राह्मण समाज में करना चाहते हैं, ऐसे परिवारों की विशेष मांग पर उनके विवाह योग्य बच्चों के बायोडाटा यहाँ यदा-कदा प्रकाशित कर रहे हैं- यदि आप इच्छुक है तो इनसे सम्पर्क कर सकते हैं-

कु. नेहा विजय व्यास
जन्मदि. 14-8-1985
(3.40 ए.एम. स्थान शहडोल
शिक्षा- बी.एस.सी. बायोटेक. एमएससी (बायोकेमेस्ट्री) बी.एड.
कार्यरत- शिक्षण, प्रज्ञा गर्ल्स हा.से. स्कूल, इन्दौर
सिखवाल ब्राह्मण,
गौत्र- कंकेश (मंडोरा व्यास)
सम्पर्क- 09329430312, 9407704368

दिल्ली से भोपाल का रिश्ता

मासिक जय हाटकेश वाणी के माध्यम से प्रदेश की राजधानी भोपाल का रिश्ता देश की राजधानी दिल्ली से जुड़ा है। इसी माह दिल्ली में कृषि मंत्रालय में उपायुक्त (गुणवत्ता नियंत्रण) श्री राजेन्द्र त्रिवेदी के सुपुत्र चि.हर्षल का विवाह सम्बंध म.प्र. नागर परिषद् शाखा भोपाल के अध्यक्ष श्री प्रमोद मेहता की सुपुत्री कु. नीना मेहता के साथ तय हुआ है। बधाई।

वैवाहिक (युवती)

कु.सलोनी ज्योतिषचन्द्र पंड्या (मांगलिक)
जन्मदि. 21-7-1989, समय 12.15 रात्रि, स्थान- नडियाद
शिक्षा- एम.ई. डिजिटल कम्युनिकेशन
कद-5'4", वजन-60 किलो
कार्यरत- कोचिंग क्लास
सम्पर्क- उज्जैन फोन 0734-2521688, मो. 09426605600

यामिनी मेघशंकर नागर
जन्मदि. 15-12-1991 (1.48 ए.एम.)
माताजी बडायला, रतलाम
शिक्षा-एम.ए. इंग्लिश लिट.
सम्पर्क-सवाई माधोपुर (राज.)
मो. 09413567915, 08233923337

सोनाली मुकेश त्रिवेदी

जन्मदि. 3-11-1989
6.42 ए.एम., रतलाम
शिक्षा- बी.ई. (सीएस)
कार्यरत- सॉफ्टवेयर इंजीनियर एसेन्चर (पुणे)
आय- 8 लाख परएनम, कद- 5'5"
सम्पर्क- इन्दौर 09424551656, 8349246326

अलंकृता भैरुशंकर दशोरा

जन्म दि. 5-3-1987, इन्दौर
शिक्षा- पी.एच.डी. वनस्पति विज्ञान
कद- 5'3"
सम्पर्क- उदयपुर (राज.)
मो. 09461915274

विनाली मुकेश त्रिवेदी

जन्मदि. 12-2-1991
1.10 पी.एम, इन्दौर
शिक्षा- ग्रेज्युएट
कार्यरत- सिनीयर सॉफ्टवेयर इंजीनियर माईंड ट्री (मेनचेस्टर यु.के.)
सम्पर्क- इन्दौर 09424551656, 08349246326

पूर्वा महेन्द्र कुमार दशोरा (दशोरा ब्राह्मण)

जन्मदि. 11-11-1988
कद- 5'4"
शिक्षा- एम.एस.सी. (एक्सटेंशन एजूकेशन एंड क्यू यु ए कम्युनिकेश मैनेजमेन्ट
सम्पर्क- भिलवाड़ा मो. 09824403402, 07046394598

कविता महेश नागर (मांगलिक)

जन्मदि. 21-4-91, कद- 5'2"
11.10 ए.एम., ब्यावरा
शिक्षा- बी.ए. फायनल
सम्पर्क- ब्यावरा
09993057492, 09826238434

जुही मकरंद नागर

जन्मदि. 27-1-1986
11.30 ए.एम., इलाहाबाद
शिक्षा- मास्टर डिग्री इन कम्युनिकेशन पी.आर.
एक्जीक्युटिव इन नई दिल्ली
सम्पर्क- इलाहाबाद मो.07309319020

निकिता शैलेन्द्र मंडलोई (मांगलिक)

जन्मदि. 24-7-1988
4.20 पी.एम., जबलपुर
शिक्षा- एम.कॉम., पीजीडीसीए
सम्पर्क- 0761-4064500, 09329003583

उम्र- 24, कद- 5'3"
शिक्षा- आय.एच.एम.
कार्यरत- गेटवे होटल, बैंगलोर में ड्यूटी मैनेजर,
सम्पर्क- 07417984404

यामिनी धर्मेन्द्र भट्ट

जन्म दि. 28-03-1989
समय-10.33 रात्रि, इन्दौर
शिक्षा- बी.बी.ए.
(हास्पीलिटी एण्ड होटल मैनेजमेन्ट),
गौत्र- शांडिल्य
कार्यरत- ड्यूटी मैनेजर

अति धर्मेन्द्र भट्ट

जन्म दि. 21-07-1990
समय-6.30 सुबह,
शिक्षा-बी.ई. (आई.टी.)
कार्यरत- आई.बी.एम. पुणे (महाराष्ट्र) सहायक इंजी.
सम्पर्क-खजराना, 7869078309

शहरी समृद्धि का उजाला गाँव तक क्यों नहीं?

क्या जबर्दस्त विसंगती है, कभी हम सब गाँवों में रहते थे। अवसर मिला, पढ़ने या पिताजी की नौकरी अथवा किसी बहाने शहरों में आ बसे। कालांतर में यहीं स्थापित हो गए, समृद्ध हो गए। लेकिन यह क्या? आज हमें गाँवों की सुध क्यों नहीं? वहां की समस्याओं से हम बेखबर क्यों? म.प्र. के कई जिलों के ग्रामीण क्षेत्र में हमारे समाज के घर है। उन घरों में रहने वाले युवा वर्ग के समक्ष नए प्रकार की समस्याएं उभरी हैं, जिनसे हमारा सरोकार भी बेशक होना चाहिए। यह कि गांवों में मुख्य कार्य कृषि का होता है, युवाओं में कृषि कार्य के प्रति कम आकर्षण है। कारण मौसम की अनिश्चितता, भरपूर परिश्रम के बावजूद मनचाही आय न होना। वहां के युवाओं के पास विकल्प के रूप में पंडिताई, कर्मकांड ही बचता है, थोड़े पढ़ गए तो शिक्षा विभाग में संविदा नियुक्ति। इसी मान से उनका स्तर भी तय होता है, जो लोग केवल कृषि पर आधारित है, उनसे अच्छा स्तर उनका है, जो नौकरी या पंडिताई का अतिरिक्त कार्य करते हैं। लेकिन वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या कृषकों और पंडितों को विवाहादि में आ रही है। वह यह कि लोग दो मुहे होते हैं। एक तरफ तो वे अपने पारंपरिक पेशे को जीवित रखने की वकालात भी करते हैं, दूसरी तरफ पंडिताई करने वालों को अपनी लड़की देना पसंद नहीं करते। गांव की लड़कियां गांवों में ब्याह करने के बजाय शहरों में ब्याह करना पसंद करती है। ऐसे में गांवों के लड़कों का क्या होगा? गांवों में आज इन सब विसंगती के चलते अजीब तरह का वातावरण है। जो किसान सम्पन्न है वे तो अपने बच्चों को शहरों में भेजकर पढ़ा रहे हैं, परन्तु जो सक्षम नहीं है वे गांवों में घुट रहे हैं। ऐसी स्थिति में शहरों के समृद्ध परिवारों में सामने आना चाहिए तथा गांवों में जो प्रतिभाशाली बच्चे हैं, उनकी खोज कर उन्हें पढ़ाई में आर्थिक सहयोग देना चाहिए। जिसकी आज सबसे ज्यादा जरूरत है, उनके मन में यह बात है कि समाज आखिर हमारे लिए क्या कर रहा है? शहर के समृद्ध नागर परिवार एक कोष की स्थापना करे तथा उसमें से पढ़ने के इच्छुक बच्चों को बगैर ब्याज ऋण दिया जावे। जो रोजगार प्राप्त होने के पश्चात् आसान किश्तों में चुकाया जा सके। आज गाँव-गाँव से यह पुकार है कि वहां बसे नागर परिवारों की सुध ली जाए, विसंगतियों को दूर करने का प्रयत्न किया जाए। इस बारे में माहौल तैयार किया जाए।

-सम्पादक

इस सम्बंध में सभी पाठक अपने मन के विचार 25 जुलाई तक हमारे पास भिजवा देवें। उनका प्रकाशन अगस्त अंक में किया जावेगा।

यमदूत

यमदूत एक आदमी को अपने साथ ले जाने धरती पर पहुंचे।

यमदूत- चल बेटे, तेरा समय खत्म हुआ! आदमी- नहीं, यमदूत जी अभी फेसबुक अपडेट कर रहा हूँ! (थोड़ा रुक कर हंसकर)

अच्छा, आप तो बहुत दयालु हैं, क्या आप मेरी आखिरी इच्छा भी नहीं पूरी करेंगे?

यमदूत- अवश्य, बोल क्या है तेरी आखिरी इच्छा?

आदमी- मैं चाहता हूं कि ऊपर चलने से पहले आप मेरे साथ एक बार पिज्ज़ा खाएं और कॉफी पिएं।

यमदूत- ठीक है।

आदमी ने चुपके से कॉफी में नींद की गोलियां मिला दीं, जिससे यमदूत को कॉफी पीकर नींद आ गई। फिर आदमी ने फटाफट यमदूत की लिस्ट से अपना नाम ऊपर से हटा कर आखिर में जोड़ दिया। बाद में नींद से उठ कर यमदूत बोले- पुत्र, तूने मुझे पिज्ज़ा खिलाकर और कॉफी पिलाकर आज खुश कर दिया।

अब मैं, अपनी लिस्ट ऊपर के बजाए नीचे से देखना शुरू करूंगा!

निःस्वार्थ सेवा कभी निष्फल नहीं जाती...

मधुर और मृदु वाणी भी एक प्रकार की सेवा है

बेंजामिन डिजराइली के अनुसार- कर्म भले ही सुख न दे सके, किन्तु सुख बिना कर्म किये प्राप्त नहीं होता।

इस संसार में कोई भी व्यक्ति जन्म से ही जीवन जीने की निर्देशिका लेकर नहीं आता। उसे अपने माता-पिता, गुरु व बड़ों से मार्गदर्शन तो मिलता है इसके बावजूद भी वह जीवन में कुछ अच्छा (कार्य) करने का अपना स्वयं का मार्ग ढूंढ ही लेता है।

रूमी ने ठीक ही कहा है- दीपक तो कई हैं, किन्तु प्रकाश एक ही होता है।

जॉर्ज बर्नार्ड शा के अनुसार- धर्म एक ही है- सेवा- यद्यपि उसके रूपांतर अनेक हो सकते हैं।

अल्बर्ट आइन्सटीन ने कहा- व्यक्ति की उच्चतम नियति है सेवा करना।

वेदना (केयर) ही सेवा उदगम स्थल है, जिसमें वेदना है उसकी चेतना सघन होती है। जहाँ वेदना नहीं हैं वहां चेतना विरल होती है।

ईश्वर ने बहुत सारे भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग बनाये हैं। तब फिर वह अपनी सेवा एक ही प्रकार से करने की इजाजत कैसे दे सकता है।

निःस्वार्थ सेवा के अनेको उदाहरण है-

श्री सत्यसाँई बाबा के अनुसार- मानव सेवा ही, माधव सेवा है।

स्वामी विवेकानंद से किसी ने पूछा- ईश्वर को पाना है तो कहाँ जाएँ?

उनका जवाब था- जाओ दीनदुखियों व कमजोर की सेवा में जुट जाओ, उन्हीं में तुम्हें ईश्वर मिलेगा।

नारद पुराण में कहा गया है- विप्रवर! जहाँ वृक्ष भी अपने फल व शीतल छाया से दूसरों का उपकार (सेवा) कर रहे हैं, वहां मनुष्य यदि सेवा कार्य न करें तो वह मृतक सदृश ही है।

महात्मा गाँधी ने कहा-पीड़ित व असहाय की सेवा ही धर्म है। इनके रूप में ही ईश्वर से हमारा साक्षात्कार हो जाता है। गाँधीजी ने कुष्ठरोगियों की खूब निःस्वार्थ सेवा की तथा स्वच्छता संबंधी

कई सेवा कार्य भी किये।

मदर टेरसा ने कहा- आइये ईश्वर को पाने के लिये हम कुछ सुंदर कार्य करें। क्यों न हम सड़क किनारे मरणासन्न अवस्था में छोड़ दिये गये व्यक्तियों को बिना जातपात व लिंग भेद किये आश्रय दें, ताकि वे सम्मान के साथ मर सके।

मदर टेरसा के अनुसार- जब मैं किसी पीड़ित के घाव साफ करती हूँ तो मुझे महसूस होता है मानो मैं जीसस क्राइस्ट के घाव साफ कर रही हूँ, यही उनसे मेरा साक्षात्कार है, व इसी में मुझे आनंद आता है।

फ्लोरेंस नाइटेंगल (लेडी विथ द लेम्प)- एक गूंगी बहरी नर्स थी जो सारी रात, कराहते हुए मरीजों की सेवा में रह रहती थी, निःस्वार्थ।

ईशवास्य उपनिशद में कहा गया है- 'ईश वास्यं मिद्म सर्वम्' अर्थात् ईश्वर सब जगह है।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा- 'अहम् सर्वभूतस्य स्थिता' मैं सभी प्राणियों में हूँ।

ईसा मसीह ने 'गॉस्पेल ऑफ थॉमस' में कहा- तुम एक पत्थर उठाकर देखोगे, तो तुम मुझे वहां भी पाओगे।

'मानव सेवा ही सच्चा धर्म है' महात्मा गाँधी, विवेकानन्द, मदर टेरसा, सत्य सांई बाबा.... आदि ने उक्त आधारों पर ही यह कहा है।

अब्राहम लिंकन ने कहा- जब मैं अच्छा कार्य करता हूँ तो अच्छा महसूस करता हूँ और जब बुरा काम करता हूँ तो बुरा महसूस करता हूँ। धर्म की मेरी यही अवधारणा है अतः मैं सेवा को ही धर्म मानता हूँ।

दलाई लामा कहते हैं- ना तो किसी मंदिर की आवश्यकता है और न किसी तत्व-ज्ञान की। हमारा स्वयं का मन और मस्तिष्क ही हमारे मंदिर है और प्राणी मात्र के प्रति सेवा-भाव ही तत्वज्ञान है यही मेरा सीधा सा धर्म है।

ऋग्वेद में कहा गया है दूसरों के प्रति उपकार (सेवा) निष्पक्ष भाव से करना चाहिये, क्योंकि पक्षपात से बुराई ही पैदा होती है। संत तुलसीदास ने मानस में लिखा है-

परहित सरिस धरम नहीं भाई।
पर-पीड़ा सम नहीं अधमाई।।

किसी व्यक्ति को हम स्वार्थी इसलिये नहीं कहते कि वह सदैव अपना स्वयं का ही भला सोचता है वरन् इसलिये कि वह अपने पड़ोसी की भी उपेक्षा करता है।

निःस्वार्थ सेवा करने का एक तरीका यह भी हो सकता है कि हम दूसरों के साथ मधुर और भद्र (ओबलाइजिंग) वाणी ही बोले, क्योंकि लोग हमारी वाणी को न केवल सुनते हैं वरन् उसमें छिपी हुई हमारी मनोवृत्ती को महसूस भी करते हैं।

कहते हैं दया (काइंडनेस) वह भाषा है जो एक बहरा भी सुन सकता है व एक अंधा भी महसूस कर सकता है। हमारे मुहं से निकला हुआ एक भी अपशब्द छः छोड़ों के कोच द्वारा भी वापस नहीं लाया जा सकता। अपशब्दों को कहे बगैर उन्हें निगल लिया जाय तो क्या कोई पेट दर्द की शिकायत कर सकता है? अतः कबीर कहते हैं-

ऐसी बानी बोलिए मनका आपा खोय।
औरन को शीतल करे आप ही शीतल होय।।

अतिथि सेवा (खिदमत) भी निःश्वार्थ सेवा का एक नमूना है, आतिथ्य में थोड़ी गरम जोशी, थोड़ी खातिर दारी किन्तु अपरिमित शांति अवश्य होनी चाहिए। शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय के अनुसार- अतिथि सेवा में मिठास अवश्य होना चाहिए, किन्तु उसका ढकोसला नहीं केवल निःस्वार्थ।

क्योंकि स्वार्थ की भावना से जो सेवा की जाती है वह सेवा नहीं प्रवचना है।

सबसे अच्छी निःस्वार्थ सेवक है-

'माँ'

व्याकरणतः माँ एक 'संज्ञा' नहीं 'क्रिया' है, क्योंकि घर-परिवार में माँ ही अनवरत रूप से सेवा में रत (क्रियाशील) रहती है। यह निखालिस निःस्वार्थ सेवा का एक अच्छा उदाहरण है, क्या सुन्दर परिभाषा है माँ की-

ममता और अपनत्व से भरा प्यार है माँ।
तपते मरुस्थल में एक ठंडी बयार है माँ।।

एक चीनी कहावत है- जो हाथ फूल बांटते हैं उनमें सदा सुगंध बनी रहती है। जब किसी की सेवा के लिए हम हाथ बढ़ाते हैं तो यह जीवन के गद्य में एक पद्य बन जाता है।

निःस्वार्थ सेवा मूक भी करते हैं। हमने देखा है पेड़ों को शीतल छाया व फल देते हुए, नदियों को निरन्तर कल-कल बहते हुए अपने शीतल जल से लोगों की सेवा करते हुए। गाय को अपने दूध व बछड़ों के द्वारा मानव की निःस्वार्थ सेवा करते हुए। आइये पेड़, नदी व गाय से हम सीखें कि मोन रहकर निःस्वार्थ सेवा कैसे की जाती है।

सबसे उत्तम निःस्वार्थ सेवा है अपने माता-पिता की। हम सभी ने ये पंक्तियाँ अवश्य सुनी है-

जिन माता-पिता की सेवा की, उन तीरथ-स्नान कियो न कियो,

जिनके हिरदय श्री राम बसे, उन और को नाम लियो न लियो।

झोरोस्टर कहते हैं- सेवा आपसे सिर्फ तीन कदम दूर खड़ी है। पहला कदम उसके विचार के साथ बढ़ाओ, दूसरा कदम मरहम भरी मधुर वाणी के साथ बढ़ाओ और तीसरा कदम सेवा में तत्पर हो जाने के साथ बढ़ाओ, तब आप सेवा तक पहुंच पाओगे और फिर उसका आनंद भी आपका ही होगा।

अगर ये तीन कदम भी नहीं बढ़ा सकते तो कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं कि 'मनसा-वाचा-कर्मणा' हम दूसरों के साथ ऐसा कुछ भी न करें कि पर पीड़ा पहुँचे। यह भी आपके द्वारा निःस्वार्थ सेवा ही साबित होगी।

और अब चलते-चलते कवि दुष्यंत की ये पंक्तियाँ-

हो गई है पीर, पर्वत सी, पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।।

-मोरेश्वर मंडलोई, खंडवा

संता किसी नेता के
भाषण समारोह में गया।
नेता- यह धरती मेरी माँ है।
संता खड़ा हुआ और बोला,
तो अपनी माँ को संभाल कर रखो।
यह सूरज के इर्द-गिर्द
चक्कर लगाती रहती है।

ऐ कलम रूक के एक अदब मुकाम आया है....

सन्त वह जो शान्त है। क्रोध नहीं करते, कठोर वचन नहीं बोलते। वे अमानी होते हैं मन में मानव जाति के कल्याण का भाव होता है, उनमें कर्तापन का अभिमान नहीं होता। वे किए गये सत्कर्मों का श्रेय हमेशा दूसरों को देते हैं। निन्दा-स्तुति में सम रहते हैं। तुलसीजी ने ठीक ही कहा है 'सन्त हृदय जस निर्मल बारी।' वे संसार में रहते हैं किन्तु संसार उनके अन्दर नहीं रहता। दिव्य अलौकिक ज्ञान उनके डर में स्वप्रगट होता है। पुस्तकीय ज्ञान केवल अभिमान को जन्म देता है व मात्र जुठन ही है।

सन्त में स्नेह, शीतलता, शीलता, सहनशीलता, दया, आत्मियता, सरलता, सरसता, समता, विकार शून्यता निअहंकारिता तो होती ही है, ममता मोह माया से दूर। उनमें आसक्ति का भाव नहीं होता। त्याग, वैराग्य, तपसी पर दुःख कातरता कूट-कूटकर भरी होती है।

सन्तों में वृक्षवत्, सहिष्णुता, आश्रयता, नदी समान, निर्मलता, शीतलता, पहाड़ सी निश्चलता, पृथ्वी सी क्षमाशीलता, पोषणता उर्वरता जैसे परोपकारी भाव होते हैं। कहा भी है- सन्त सदा सुखदाई। ये संसारी क्लेशों से मुक्त, सर्दी-गर्मी, हानि-लाभ, जय-पराजय, मान-अपमान, हर्ष-शोक, कांच-कंचन, महल-मसान, कांटे-पुष्प को समान समझते हैं। इनके आचरण व उपदेश अनुकरणीय होते हैं। इनके उपदेश वेदवाणी बन जाते हैं।

ये द्वेष रहित दयालु नवनीत समान होते हैं। अहित करने वाले का हित ही करते हैं। लोक हितार्थ जीवन व इनका मन इन्द्रियों पर नियंत्रण होता है। सन्त तो भगवन्त है, तभी तो इन्हें देवदूत, पैगम्बर की उपमा दी जाती है। आर्त-प्राणियों के उद्धार हेतु ही संतों की संसार यात्रा होती है। संत की प्रत्येक क्रिया किसी अज्ञात उद्देश्य से बड़ी विलक्षण हुआ करती है।

संत संसार के जीवन स्वरूप प्राणवायु के समान होते हैं। उनका आश्रय मंगलप्रद होता है। संतों के संग से देवी सम्पदा में वृद्धि, देव की ओर चित्तवृत्तियों का प्रवाह बन पड़ता है। सच्चे सन्त अप्रकट रहते हैं। हमारे बीच रहते भी हम पहचान नहीं पाते। वे साधारण से ही लगते हैं। वे न तो आदर की याचना करते हैं न वाच्छा। प्रतिष्ठा को वे विष्ठा व विषवत् मानते हैं। भगवान से स्वामी, सखा कोई एक रिश्ता जोड़ उसी भाव से सेवा, समर्पण में रत रहते हैं। उन्हीं पर निर्भरता, निरर्भयता बनी रहती है। वैराग्यवृत्ति, संसार की अनित्यता, करुणा, अनिन्दा निष्ठा से ओत-प्रोत ये भक्ति भाव के झरने हैं। इनका परम ध्येय भगवत कृपा प्राप्त करना होता है। ये पूर्ण पुरुष अर्थात् संत, अनगढ़ होते हैं प्रसिद्ध प्रकाण्ड विद्वान श्री देवतीर्थ स्वामीजी की सटिक उक्ति प्रसंग वश प्रस्तुत है।

अनगढ़मत है पूरों का, यहाँ न काम धतुरो का।

कचड़ा औभटमैला रस्ता, झूठे कायर क्रुरो का।।

निर्भय साफ अमीरी रस्ता, सच्चे साहिब शूरों का।

मुश्किल अगम पंथ का चलना, जैसे खांडे छूरों का।।

अज बैगी यह मता बनाया, भेंदिया चकना चूरो का।

जप तप करके स्वर्ग बनाया, सो तो काम मजूरों का।।

करना सही न लेना कुछ भी, बाना झाँखर-झूरों का।

बड़ों देव गादी जब पाई, तब क्या ढोना घूरों का।।

मस्त हुआ जब अनहद सुनके, तब क्या सुनना तुरों का।।

कहने का तात्पर्य यह है कि संत अलोकिक महापुरुष लोक कल्याण में रत रहते हैं। सन्तों के तप व दीक्षित जीवन से राष्ट्र व समाज में बल, ओज व आनन्द भर जाता है। संत की महिमा अपार व असीम है। ये ऋषि, मुनि, महर्षि, दयालु धर्मात्मा, महात्मा, फकीर गृहस्थी, त्यागी, तपस्वी, या गुरुदेव सभी उदात्त आत्माएँ समाज के लिए कवच है। संतों के दर्शन, स्पर्श वन्दन व चिन्तन से जीव पवित्र व निष्पाप हो जाता है। सन्तों के चरण जहाँ पड़ते हैं। वह भूमि पावन व पुण्यवती हो जाती है। उनकी जन्मभूमि तीर्थ रूप हो जाती है। ऐसे सन्त गुरुदेव को वन्दन है। थोड़े बदलाव के साथ एक शेर अर्ज है-

ए कलम रुक के एक अदब मुकाम आया है।

कि तेरी नोक पर मेरे गुरुदेव का नाम आया है।।

क्या गुण गायें, कि क्या महिमा गायें, यहाँ तो बुद्धि बठारा जाती है। उनकी महिमा गरिमा के आगे नतमस्तक हैं ऐसी महान आत्मा विलक्षण सन्त को बस कोटिशः नमन।

-रमेश रावल
डेलची (माकड़ोन), उज्जैन
मो. 8085851920

ईश्वर के दो निवास स्थान है एक बैकुण्ठ में और दूसरा नम्र और कृतज्ञ हृदय में।

समाज के प्रति 'कर्तव्यबोध'

सद्नागरजनों, हमारा प्रिय भारत देश धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। इस देश की धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक सहिष्णुता एवं श्री सम्पन्नता विश्व में प्रसिद्धी के शिखर पर है। इस देश की धरती पर भारत माता की कोख से एक से बढ़कर एक महान विभूतियों, विद्वान धर्म उपदेशक को तथा समाज सुधारकों ने समय-समय पर जन्म लिया है और अपने देश जाति व समाज की समृद्धि अखण्डता व सम्पन्नता को अर्थात गरिमा को बनाए रखा है।

इस परिप्रेक्ष्य में उक्त कथित महानता की प्राप्ती के लिए हमारे नागर समाज के प्रबुद्धजनों को भी भुलाया नहीं जा सकता जैसे हमारा प्राचीन इतिहास बतलाता है कि हम नागर जाति के लोग कलम-कड़छी एवं बरछी के धनी थे तथा चौसठ कलाओं के जानने वाले ज्ञाता थे। इसी उक्त आधार शिला पर हमारे नागर समाज में भी कई समाजसेवी नागर बन्धु हो चुके हैं और आज के इस युग में भी एक अच्छे समाज सेवक के रूप में विद्यमान है जिन्होंने समाज देश व जाति की सेवा करते-करते जीवन को सार्थक बनाया है। हमें आज के इस युग में भी उक्त प्रबुद्धजनों से कुछ प्रेरणा लेना चाहिये उनका अनुसरण करना चाहिए।

बन्धुओं 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है' समाज से पृथक रहकर या रहने पर उसका कोई अस्तित्व ही नहीं है। समाज को समृद्धि, उन्नति एवं उत्कर्ष उसके अपने सद्प्रयत्नों उच्चादर्शों पर निर्भर है और यदि मानवता के लिए कसौटी है तथा इन्हीं भावनाओं से समाज का सर्वांगीण विकास होता है।

जाति अर्थात समाज की सेवा करना हमारा कर्त्तव्य है क्योंकि इसका क्षेत्र

विस्तृत एवं व्यापक है तथा दो वर्ष में समाज का सम्मेलन करना हमें एकता व बन्धुत्व भावना की प्रेरणा देता है। अपने लिये या स्वयं के लिए तो सब जीते हैं व अपने सब कार्य करते हैं परन्तु समाज के लिये जीना उसके लिये कुछ कार्य करना मनुष्य का अपना ध्येय होना चाहिए।

विशेष- उपरोक्त लेख वर्ष 1983 में खंडवा नागर मंडल के तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय नागर ब्राह्मण समाज सम्मेलन की स्मारिका में प्रकाशित हुआ था, वर्तमान में यह लेख युवा पीढ़ी के लिए समसामयिक है अतः इसे यहाँ पुनः प्रकाशित किया जा रहा है।

भारतीय सामाजिक जीवन दर्शन का प्रतिबिम्ब निष्काम कर्म व निष्काम भाव से सेवा करना ही हमारी पूजा अर्चना है। 'हाटकेश्वर भगवान' की पूजा करने वाला भक्त अर्थात् अपने ईष्ट देवता की पूजा-अर्चना करने वाला अहम् भाव की आहुति देकर स्नेह से समर्पण करता है और अपने ईष्ट से सहयोग की अर्चना (कामना) करता है। समाज की व मानव की सेवा भी स्नेह, समर्पण, त्याग और परमार्थ का बाना पहनकर संघर्षों एवं विषमताओं से जूझते हुए की जा सकती है। जिससे पूरे समाज में समानता व एकता से नैतिक मानवीय मूल्यों की प्रतिस्थापना की जा सके व इस ओर हम सभी को कटिबद्ध रहना चाहिये।

जिस प्रकार परिवार को सुखी एवं समृद्ध बनाने के लिये उसके प्रत्येक सदस्य को दूसरे सदस्यों की सुख-सुविधा का ध्यान रखना पड़ता है उसी तरह समाज जो एक विस्तृत परिवार है कि समृद्धि के लिये यह आवश्यक है कि उसका प्रत्येक सदस्य स्वार्थ प्रेरित न हो। मनुष्य जब केवल अपनी स्वयं की अच्छाइयों के लिए प्रयत्न करता है तब वह स्वार्थी नहीं कहलाएगा। जब समाज रुपी परिवार के अन्य सदस्यों की अवहेलना करेगा। प्रत्येक मनुष्य को अपने सुख व समृद्धि एवं उन्नति के साधनों का उपयोग करने का पूर्ण अधिकार है। परन्तु उसे कदापि यह अधिकार नहीं कि वह अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिये दूसरों को दुख पहुचाएँ तकलीफ दे, इसलिए यह आवश्यक एवं जरुरी है कि समाजरुपी परिवार के सर्वांगीण विकास के लिये व उसको समृद्धि एवं उन्नति के लिये मनुष्यों के विचारपूर्ण 'कर्त्तव्य बोध' एवं सद्प्रयत्नों के साथ-साथ सेवा भाव से प्रेरित हो इन्हीं आदर्शों के आधार पर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक सुखी एवं सफल बना सकता है। यही 'कर्त्तव्य बोध' का सरल मार्ग है।

समाज की ओर देखने की जैसी हमारी भावना होगी वैसा ही समाज भी हमें दृष्टिगोचर होगा। As you Sow so shall your reep.

आज भी हमारे समाज में कई मनुष्य विशेषकर पुरानी व दकियानुसी प्रवृत्ति एवं

विचारधाराओं के हैं अतः ऐसी विचारधारा के लोगों को अपने तहि झांककर आधुनिक युग के परिप्रेक्ष को दृष्टव्य करना चाहिये।

मनुष्य चाहे किसी भी क्षेत्र में कार्यरत हो उसके जीवन में ऐसे अनेक अवसर आते हैं जब वह अपनी सेवाएं समाज के लोगों के लिए या अपने समाजरुपी परिवार के सदस्यों के लिए उन्हें ऊँचा व योग्य स्थान दिलाने के लिये अर्थात् उनको ऊँचा उठने के लिये अर्पित कर सकते हैं। समाजसेवा के क्षेत्र में शिक्षित विद्वान तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोगों ने अपने उत्तरदायित्वों को सोचना व समझना चाहिये तथा तन मन धन से सहयोग करना चाहिये।

वैसे आज भी हमारे समाज या जाति के प्रबुद्धजनों, समाज सेवकों एवं दानदाताओं आदि सुलझी हुई विचारधारा के लोगों को भुलाया नहीं जा सकता, जिन्होंने नैतिक शिक्षा एवं समाज कल्याण हेतु कई कल्याणकारी योजनाओं को प्रस्ताव रूप में लेकर प्रत्यक्ष में उसे प्रतिपादित कर दिखाया है एवं समाज के प्राणियों ने उक्त योजनाओं व सामाजिक आदर्शों को सहर्ष स्वीकार किया है, यदि एक-दूसरे व्यक्ति के लिए परस्पर रूप में समाज सेवा के क्षेत्र में प्रेमभाव सहित अविस्मरणीय योगदान रहा है एवं रहेगा।

हमारा अपना उद्देश्य होना चाहिए समाज व जाति का भला करना अर्थात् अपने समाजरुपी परिवार के एक आदर्श स्थापित करना न कि अपने स्वयं के नाम का ढोल पीटना और इसी बात की आवश्यकता हमें हमारे समाज देश व जाति को है।

मेरे विवेक सेवा रहित जीवन अप्रिय अकर्म एवं निष्ठुर जीवन है जीवन की सार्थकता अपने समाज व जाति की सेवा में हैं और यदि प्रत्येक मानव का सम्पूर्ण जीवन आदर्श 'कर्त्तव्य बोध' का मार्ग है इस ओर हमें पूर्ण रूप से सन्मार्गी होना चाहिये। धन्यवाद एवं क्षमा के साथ।

-गोपालकृष्ण श्यामलाल दीक्षित
सिर्रा जिला खंडवा (पूर्व निमाड़)

नवदुर्गा थारे सभी मनावा रे...

तर्ज- ढोला ढोल मजीरा...

स्थाई- थारा चरणों में शीश झुकावा रे... झुकावा रे
नवरात्रि है माँ नवदुर्गा थारे मनावा रे... (टेक)
अन्तरा- प्रथम हिमालय की पुत्री के रूप में जन्म लिया है...
1. इसलिए माँ शैलपुत्री का, प्रथम पूजन किया है...
थारे वृषभ वाहन पे बिठावा रे... बिठावा रे
नवरात्रि...
2. दूसरी ब्रह्मचारिणी माँ, ब्रह्मा का आचरण का,
तपस्या करके पति रूप में, शंकरजी को है पाना,
अरे शिवशक्ति नो ध्यान लगावा रे... लगावा रे।
3. तीसरी शक्ति चन्द्रघटा, शांति दायी कल्याणकारी,
मस्तक इसके अर्द्धचन्द्र सोहे, भक्तों की तारणहारी
थारे सिंह पे भैया बिठावा रे... बिठावा रे
नवरात्रि...
4. चौथे दिन माँ कुमाण्डा के स्वरूप का पूजन होवे
अष्ट पुजा माँ अष्ट सिद्धि, जयमाला कर में सोहे
आयु, यश, वृद्धि माँ से पावां रे पावां रे...
नवरात्रि है....
5. कार्तिकेय की माता तुम हो...
स्कन्द माता कहलाती....
स्कन्दमाता सृष्टि की पहली
प्रसूतामाता मानी जाती
दुर्गा रूप माँ शीश झुकावा रे...
झुकावा रे..
6. कात्यगौत्र में जन्में महर्षि माँ की करी तपस्या
कात्यायनी पुत्री के रूप में, जन्म ले ऐसी थी इच्छा
चारों फलों की प्राप्ति पावा रे... पावा रे... (टेक)
7. सातवीं सिद्धि माँ कालरात्रि के सभी मार्ग है खुलते
सांवली सूरत माँ की भक्ति से,
शुभ फल फूल है मिलते
भक्ति से भयमुक्त हो जावा रे... जावा रे
8. घोर तपस्या कर-कर सावलो रंग थारो हो
शिवजी ने गंगा जल जब छिड़का जाव
गौरवर्ण थाने छुड़ावे
महागौरी सिंह पे तने बिठावा रे... बिठावा रे ।।टेक।।
9. नौवा रुप सिद्धिदात्री आध्या शिवजी का भावे
माँ की कृपा से सारी सिद्धि शिवजी के मन भावे।
नवदुर्गा थारे सभी मनावा रे...
'धर्मेन्द्र....' जन मिल सब चरणा में
भजन सुनावा रे...

-डॉ.धर्मेन्द्र कुमार
विकास क्लिनिक
अवन्तिपुर बड़ोदिया मो. 9926761673

संघर्ष से जी न चुराएं

चौदह वर्ष के वनवासी जीवन के संघर्ष ने ही राम को भगवान बना दिया। द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन संघर्ष की महान गाथा है।

संसार में उपस्थित सभी प्राणियों में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ माना गया है इसका मूल कारण है उसका पूर्ण विकसित मस्तिष्क तथा विवेक। मनुष्य अपने इस अनमोल दुर्लभ जीवन की महत्ता को समझने की अनदेखी कर जरा सी भी विषम परिस्थिति या प्रतिकुल दशा आने पर अपना मनोबल खो बैठता है तथा कभी-कभी जीवन में हताश हो आत्महत्या जैसे जघन्य अपराध कर अपने परिजनों को दारूण दुख में ढकेल देता है। मानव जीवन सुख-दुख के ताने-बाने से बना होता है। जीवन में सुख-दुख धूप-छाँव की तरह आते-जाते रहते हैं।

एक मनुष्य तभी मनुष्य कहलाता है, जब वह संघर्षों पर विजय पा लेता है। इस संसार में शायद ही कोई ऐसा मनुष्य होगा जिसने अपने जीवन में संघर्ष न किया हो यह अवश्य है कि किसी को जीवन में कम और किसी को जीवन में अधिक संघर्ष करना पड़ा हो। जिस प्रकार कोयले की खदान से निकला हीरा तराशने पर ही चमकता है उसी प्रकार मनुष्य जीवन भी संघर्ष की अग्नि में तपकर निखरता है। जिस व्यक्ति को जीवन में सब कुछ बिना परिश्रम के प्राप्त हो जाता है उसे जीवन का सच्चा अर्थ ज्ञात नहीं हो पाता है।

मनुष्य जीवन की चार अवस्थाएँ होती हैं- बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रोढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था। अधिकांश व्यक्तियों के जीवन की ये चारों अवस्थाएँ एक समान नहीं होती हैं उसे किसी न किसी अवस्था में संघर्ष करना पड़ता है यदि मनुष्य बाल्यावस्था (शिक्षाकाल) या युवावस्था (व्यवसाय काल) में संघर्ष करता हैं तो उसका शेष जीवन सुखद एवं आनन्दमय व्यतीत होता है। परन्तु यदि उसकी बाल्यावस्था या युवावस्था ऐशो आराम अथवा बिना संघर्ष के गुजरती हैं तो उसे प्रोढ़ावस्था/वृद्धावस्था में कठिनाईयों का सामना करना भारी पड़ता है। संसार के विभिन्न क्षेत्र जैसे- आध्यात्मिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक, खेल

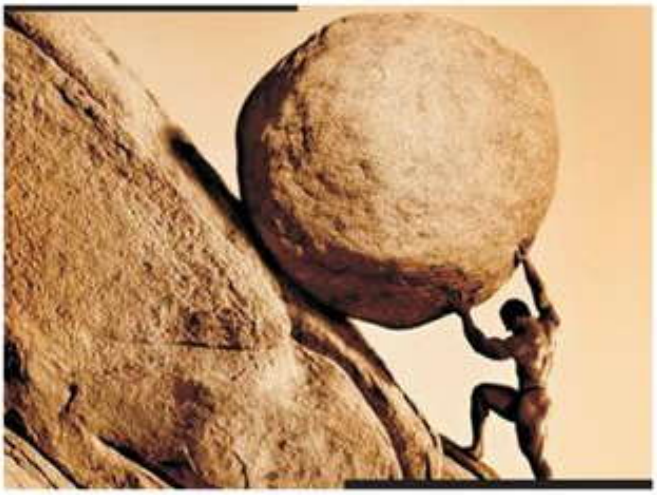

इत्यादि के अधिकांश महान व्यक्तियों के जीवन चरित्र पर दृष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि असाधारण उपलब्धियों के परिदृष्य में उनके संघर्ष की कहानी छुपी है। इस संदर्भ में उपवर्णित क्षेत्रों के महान व्यक्तियों के जीवन संघर्ष की गाथा को उल्लेखित करना समीचीन होगा।

आध्यात्मिक क्षेत्र- आध्यात्मिक जगत के श्रेष्ठ महापुरुषों जैसे- भगवान, श्रीकृष्ण, गौतमबुद्ध, महावीर स्वामी, ईसामसीह, गुरुनानक, मोहम्मद पैगम्बर इत्यादि की महानता संघर्षों की देन है। अयोध्या के ज्येष्ठ राजकुमार रामचन्द्र यदि पिताश्री राजा दशरथ की आज्ञा का पालन न कर चौदह वर्ष के वनवास का संघर्ष न कर यदि अयोध्या के राजसिंहासन पर आरूढ़ हो जाते तो वे भी अन्य राजाओं के समान अयोध्या नरेश बनकर रह जाते। चौदह वर्ष के वनवासी जीवन के संघर्ष ने ही उन्हें भगवान बना दिया। द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन संघर्ष की महान गाथा है। जन्म मथुरा के कारागृह में, बाल्यकाल सौतिली माँ की देखरेख में गोकुल में, शिक्षाकाल, उज्जैन में, शासन द्वारिका में, ज्ञानोपदेश गीताज्ञान कुरुक्षेत्र की रणभूमि में तथा निर्वाण सोमनाथ में। अपने जीवन काल में अनेक दानव शक्तियों से संघर्ष कर धर्म की स्थापना में किये गये अक्षुण्य योगदान ने उनको अजर अमर कर दिया। राजकुमार सिद्धार्थ तथा राजकुमार वर्द्धमान के रूप में जन्में गौतम बुद्ध तथा महावीर स्वामी की युवावस्था (ग्रहस्थाश्रम) शाही शान शौकत में गुजरी परन्तु वैराग्य होने पर ज्ञानप्राप्ती एवं आत्मकल्याण के पथ में अनेक शारीरिक यातनाओं को सहना पड़ा। इसी संघर्ष ने उनको भगवान बना दिया। ईसामसीह, गुरुनानक, मो.पैगम्बर इत्यादि को भी ईश्वर की सार्वभौम सत्ता प्रतिपादित करने के कारण अनेक प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक प्रतारणा का सामना करना पड़ा था।

राजनैतिक क्षेत्र- भारत की आजादी से लेकर आजतक इस महान गणतंत्र के उत्थान का इतिहास अनेक महापुरुषों के संघर्ष, समर्पण, बलिदान की अमर गाथा से भरा पड़ा है। बेरिस्टर एम.के. गाँधी के भारत की आजादी में योगदान तथा

बलिदान ने उन्हें महात्मा गाँधी एवं राष्ट्रपिता बना दिया। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद एक साधारण से किसान परिवार में जन्में थे। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम का बचपन अत्यन्त ही गरीबी में गुजरा था, वे रामेश्वरम की गलियों में अखबार बांटा करते थे। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का बचपन में चाय की दुकान में काम करना जग जाहिर है।

वैज्ञानिक क्षेत्र- महान वैज्ञानिक सर आइज़क न्यूटन जिन्होंने गुरुत्वाकर्षण के नियम तथा गति के सिद्धांत की खोज ; का बाल्याकाल अत्यन्त ही कठिनाइयों में गुजरा था। उनका जन्म पिता की मृत्यु के तीन माह पश्चात एक अपरिपक्व शिशु के रूप में हुआ था। उनके तीन वर्ष की उम्र में माँ द्वारा दूसरी शादी करने के कारण उनका लालन-पालन नानी के घर हुआ था। प्लेग की महामारी के कारण 1665 में जब न्यूटन ने अपनी उपाधि प्राप्त की तब विश्वविद्यालय बन्द कर दिया गया था तथा दो वर्ष तक उन्होंने घर पर ही अध्ययन किया था। इसी प्रकार महान भौतिकविद नोबेल पुरुस्कार विजेता सापेक्षता के सिद्धांत के जनक तथा द्रव्यमान ऊर्जा समीकरण (E=Mc2) के जनक अल्बर्ट आइंस्टीन बचपन में पढ़ने-लिखने में अत्यन्त कमजोर थे। वे यूनिवर्सिटी के दाखिले की प्रवेश में फेल हो गये थे। उनको नोबेल पुरुस्कार में मिली राशी को उन्हें तलाक हुई बीबी को मुआवजे के रूप में देना पड़ा था। इस जर्मन वैज्ञानिक को इजराइल के राष्ट्रपति का प्रस्ताव दिया गया था जो कि उन्होंने विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया था।

खेल जगत- इस क्षेत्र के अधिकांश महान खिलाड़ियों को विशिष्ट उपलब्धियाँ हांसिल करने के पूर्व कठिन संघर्ष करना पड़ा था। धावक मिल्खासिंह के संघर्ष की कहानी सर्वविदित हैं। हाकी के जादूगर ध्यानचन्द जिनके कारण ओलम्पिक में भारत को तीन बार गोल्ड मेडल मिला था वे प्राथमिक शिक्षा से आगे नहीं पढ़ पाये थे। भारतीय सेना में एक सामान्य सैनिक के रूप में सेवा कर भारत का नाम रोशन किया। महिला बॉक्सर मेरीकाम जो कि मेट्रिक की परीक्षा में फेल होने के कारण शिक्षा में अवरोध आने के बावजूद बॉक्सिंग में असाधारण उपलब्धि हासिल कर भारत का नाम रोशन किया। क्रिकेट के महान खिलाड़ी भारतरत्न सचिन तेन्दुलकर ने बचपन में ग्रीष्मावकाश शिवाजी पार्क के निकट रहने वाली अपनी चाची के यहाँ बिताया। चाची कुर्सी पर बैठकर बालिंग करती तथा सचिन बेटिंग करते चूंकि उनकी चाची बाल को स्पीन नहीं कर पाती थी अतः सचिन ने गोल्फ की बाल को छीलकर ओवल शेप की कर दी ताकि जमीन पर गिरने पर वह स्वतः स्पीन हो जाती इस प्रकार स्पीन बाल को खेलने की प्रेक्टिस की। यह उनकी क्रिकेट के प्रति जुनून की एक छोटी सी कहानी है।

इसी प्रकार संसार की ऐसी अनेक विभूतियाँ हैं जिन्होंने संघर्ष के पथ से गुजर कर अपनी विलक्षण प्रतिभा का परचम लहराया।

-राजेन्द्र नागर (मुमुक्षु)
बी-40, चन्द्रनगर, इन्दौर

पूजा-पाठ में दीपक क्यों जलाते हैं?

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करने की परंपरा है। ऐसी मान्यता है कि अग्निदेव को साक्षी मानकर उनकी उपस्थिति में किए कार्य अवश्य ही सफल होते हैं। हमारे शरीर की रचना में सहायक पाँच तत्वों में से एक अग्नि भी है। दूसरे अग्नि पृथ्वी पर सूर्य का परिवर्तित रूप है। इसीलिए किसी भी देवी-देवता के पूजन के समय ऊर्जा को केन्द्रीभूत के लिए दीपक प्रज्वलित किया जाता है।

नारियल शुभ, समृद्धि एवं सम्मान का प्रतीक क्यों?

ऐसा कहा जाता है कि जहाँ मानव की बलि दी जाती थी, वहाँ नारियल की भेंट चढ़ा देने से बलि के समकक्ष ही फल की प्राप्ति होती है, क्योंकि इसे मानव सिर का पर्याय भी माना गया है। इसकी भेंट को रक्त की बलि के समान ही मान्यता प्रदान की गई है। तंत्र साधना के लिए भी नारियल एक महत्वपूर्ण फल है। शास्त्रों की सीख के अनुसार व्यक्ति को नारियल की तरह ही ऊपर से कठोर तथा भीतर से नरम और दयालु होना चाहिए। ऊपर से कठोर आवरणयुक्त नारियल भीतर से नरम, मुलायम और अमृततुल्य जल लिए होता है।

इसीलिए हिन्दूओं के प्रत्येक धार्मिक उत्सवों, पूजा-पाठ और शुभ कार्यों की शुरुआत में सर्वप्रथम नारियल को याद किया जाता है। इसे शुभ, समृद्धि, सम्मान, उन्नति और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। देवी-देवताओं को नारियल की भेंट चढ़ाने का प्रचलन आम है। प्रत्येक शुभ कार्य में नारियल पर कुंकुम की पाँच बिंदियाँ लगाकर कलश पर चढ़ाया या पूजन में रखा जाता है। किसी व्यक्ति को सम्मानित कर कुछ भेंट दी जाती है, तो उसके साथ पवित्रता का प्रतीक नारियल ऊपर रखकर दिए जाने की परंपरा है।

-गायत्री मेहता, इन्दौर
मो. 9407138599

पहला रिश्ता 'माँ' का

माँ शब्द में न जाने कितने संसार समाहित हैं। मैंने यहाँ संसार शब्द का इसलिये प्रयोग किया है कि माँ का अस्तित्व अकेला नहीं वरन् वह अपने बच्चों के बिना अपने अस्तित्व को अधुरा समझती है। बच्चों के बिना उसका अपना कोई संसार ही नहीं।

प्रत्येक बच्चे के साथ उसका अपना एक अलग अस्तित्व व संसार होता है। उसके हर बच्चे का स्वभाव, आदतें, विचार व पसन्द अलग-अलग होती है, लेकिन प्रत्येक बच्चा अपनी माँ से उनके ही अनुरुप होने की कल्पना या परछाई होने की चाह रखता है। अतः माँ के जितने बच्चे उतने संसार। माँ और बच्चे का रिश्ता संसार के हर रिश्ते से पुराना होता है, क्योंकि जैसे ही वह इस संसार में अपनी आँखे खोलता है चारो ओर रिश्तों ही रिश्तों से घिर जाता है। सभी नये रिश्ते लेकिन माँ का सबसे पहला 9 माह पुराना रिश्ता जो सभी रिश्तों से पहला रिश्ता होता है। स्वाभाविक है वह ज्यादा माँ से ही जुड़ा होगा।

समय के साथ सामाजिक दायरे भी बढ़ने लगते हैं। बड़े होने पर रिश्तों की अहमियत समझ आने लगती है। बच्चों का दायरा बढ़ता है, लेकिन माँ का दायरा बच्चों के आसपास सिमटता सा प्रतीत होता है। माँ कितनी जिम्मेदारियों से घिर जाती है, सभी जिम्मेदारियाँ निभानी होती है, बच्चों को सुसंस्कारित शिक्षित करना सबसे बड़ी जिम्मेदारी होती है। हर क्षण यही चाह कि उसका बच्चा सुसंस्कारी बनें। सभी उसकी तारीफ करें। लेकिन बचपन तो बचपन ही होता है, वो बचपन कैसा जहाँ शरारत न हो।

पहले तो वे शरारतें माँ के हृदय को आनन्दित करती है, माँ फूली नहीं समाती, शरारतों पर न्योछावर होकर बार-बार गले से लगाती रहती है। लेकिन जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होने लगता है और जब उसकी शरारते, उसका व्यवहार किसी को आहत करता है, तब वह स्वयं अपने बच्चों को सजा देना अपना कर्तव्य समझती हैं, लेकिन यदि दूसरे ने कभी कुछ कह दिया तो इतनी आहत होती है कि फिर बार-बार उसका ध्यान वहीं रहता है कि बच्चा कोई गलत कार्य तो नहीं कर रहा। माँ सिर्फ यही चाहती है कि उसका बच्चा सर्वश्रेष्ठ हो।

किशोरावस्था आने पर माँ की जिम्मेदारियों में और वृद्धि हो जाती है। अब बच्चा बाहर की दुनियाँ से परिचित होने लगता है, जैसे कि मनुष्य की प्रवृत्ति है बुराइयाँ अपनी ओर ज्यादा आकर्षित करती है, उस समय माँ को हर पल, हर क्षण यही चिन्ता रहती है कि कहीं मेरा बच्चा बुरी सोहबत में तो नहीं पड़ रहा, अपने उद्देश्य से विचलित तो नहीं हो रहा, इसी सोच के साथ प्रत्येक क्षण उसकी मार्गदर्शिका बन उसके सामने खड़ी होती है। ये सब बातें जितनी कहने सुनने में आसान व सरल लगती है, वे कितनी कठीन है। यह एक माँ ही बता सकती है। सोते, जागते, खाते, पीते कोई भी ऐसा पल नहीं होता जब बच्चे का ध्यान न हो। और यदि बच्चा घर से दूर पढ़ने गया हो तो बस! फिर तो आधी रात को उठकर भी वह सिर्फ अपने बच्चे के बारे में ही सोचेगी।

अपने बच्चे के पसन्द की कोई वस्तु मुँह में डालते ही आँखें भर आएगी कि यह मेरे बच्चे को बहुत अच्छी लगती है। उसने न जाने कब खाया होगा? भूखा तो नहीं, ओर चाहते हुए भी वह उस वस्तु को खा नहीं पाती है। समाचार पढ़ते हुए या सुनते हुए जब समाज में आई विकृति के बारे में ज्ञात होने पर भी जाने अनजाने में उसके सामने सिर्फ अपने बच्चे का ही चेहरा दिखाई देता है, वह व्याकुल होकर ईश्वर से यही प्रार्थना करती है कि हे ईश्वर मेरे

माँ और बच्चे का रिश्ता संसार के हर रिश्ते से पुराना होता है, क्योंकि जैसे ही वह इस संसार में अपनी आँखे खोलता है चारो ओर रिश्तों ही रिश्तों से घिर जाता है। सभी नये रिश्ते लेकिन माँ का सबसे पहला 9 माह पुराना रिश्ता जो सभी रिश्तों से पहला रिश्ता होता है। स्वाभाविक है वह ज्यादा माँ से ही जुड़ा होगा।

बच्चे की रक्षा करना, सद्बुद्धी देना, हमेशा सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देना।

जब माँ का बेटा या बेटी युवावस्था की देहलीज पर पाँव रखता है, तब तक माँ के दिये हुए संस्कार उसमें घर कर जाते हैं तब माँ की चिन्ता का विषय होता है यह कब अपने पैरो पर खड़ा होगा। कब, कैसे यह स्वावलम्बी बनेगा, क्योंकि आज जब समाज में आरक्षण का समय है उसे देखते हुए तो वह कभी-कभी बहुत विचलित हो जाती है, लेकिन मेरा ऐसा मानना है कि उस समय भी माँ का विश्वास विफल नहीं होता। वह ईश्वर पर अगाध विश्वास रखती है, और जब उसके बच्चे अपने पैरों पर खड़े होते हैं तो वह ईश्वर को धन्यवाद देते हुए फूली नहीं समाती है।

अपने बच्चों के विवाह के लिये चिन्तित होना भी माँ की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है बेटा हो तो कैसी बहू चाहिये ओर बेटी हो तो कैसा दामाद चाहिये। इसी उधेड़बुन में लगी रहती है। किसी को सुन्दर सुशील बहू चाहिए, किसी को गृहकार्य में दक्ष बहू चाहिये और न जाने कितनी पसन्द। एक बार एक माँ की यह बात मेरे दिल को अन्दर तक छू गयी कि मुझे तो ऐसी बहू चाहिये जो मेरे प्यार को समझे, मैं उसे जितना प्यार दूँ, उसके बदले में मुझे उससे भी उतना ही प्यार मिले। वह मेरे हृदय की भावनाओं को समझे, जिस तरह वह ससुराल में भी रिश्तों की अहमियत को समझे, मायके पक्ष के रिश्तेदारों की गलतियों को जिस तरह नजरअंदाज कर उनसे सम्बन्धों में किसी तरह का दुराव पसन्द नहीं करती, उसी तरह वह ससुराल पक्ष के रिश्तों को भी अपनी ही समझे। यह तो हुई एक माँ की अपनी बहू में इन विशेषताओं को देखने की इच्छा, अब दामाद में भी वह अपने लड़के का अक्स ही देखना चाहती है, ऐसा दामाद जो ससुराल को ससुराल न समझे सभी के साथ इस तरह घुल-मिल जाये जैसे परिवार का अभिन्न अंग हो। वर्तमान में 'जमाई जी' का जमाना नहीं रहा, परिवार के सुख के समय भी और दुःख के समय भी पारिवारिक सदस्य की तरह भागीदारी करे। एक माँ बस यही चाहती है कि मेरे बच्चे दोनों परिवार में सुखी व प्रसन्न रहें।

माँ की खुशी उस समय दुगनी क्या चौगुनी हो जाती है जब वह अपने पोते-पोती, नाती-नातिन से घिरी होती है। उनके मुँह से जब दादी या नानी शब्द सुनती है तो उस सम्बोधन को सुन अपने जीवन को धन्य समझने लगती है।

माँ की इस सकारात्मक सोच में जब थोड़ी भी नकारात्मकता अपना कदम रखती है, तब माँ का हृदय चित्कार कर उठता है, उसके दुख की कल्पना कोई आसान बात नहीं है, जिसने अपने जीवन का एक-एक क्षण सिर्फ अपने बच्चों के लिये जिया हो, वही उसकी अवहेलना करे, माँ कैसे सहन करे? वह मन ही मन में टूटने लगती है, माँ की कैसी विवशता। ईश्वर से जिसके लिये जीवन भर दुआएँ माँगी है उसको कैसे बद्दुआ दे। अपने अन्त समय में भी वह अपनों के द्वारा दिये गये दुख, अपमान एवं अवहेलना को समेटे हुए एक माँ की तरह ही मरना चाहती है। वह चाहती है अन्त समय में उसके पास उसके बच्चे रहे, अपने बच्चों की गोद में सर रख कर मरना उसके लिये स्वर्गीय सुख से कम नहीं होता। इसीलिये माँ जैसा कोई नहीं।

-श्रीमती सुधा प्रेम व्यास
हरिगंज, ब्राह्मणपुरी, मंगूदादा गली, खण्डवा
मो. 9425495512

सूरज

सूरज निकला चिड़ियां बोली
कलियों ने भी आँखे खोली
आसमान में छाई लाली हवा बही सुख देने वाली
नन्ही-नन्ही किरणे आई फूल हंसे कलिया मुस्काई
ऊँचे पर्वत गहरी खाई देता तेरा रूप दिखाई
तू ही जल में तू ही थल में अपनी माया तू ही जाने
हम बालक कैसे पहचाने हमें देना विद्या का ज्ञान
जिससे हम कर सके इस जगत का कल्याण।

-समर्थ सचिन नागर
मंगलपुरा झालावाड़
मो. 9166186777

जीवन उपयोगी पंचामृत धारा

बोलो- इतना मीठा कि शहद बिखर जाये।
सोचो- इतना अच्छा कि चरित्र निखर जाये।
करो- तो इतना नेक कि खुद रामजी हर्षाये।
सुनो- तो इतना सच कि झूंठ और पाप भी घबराये।
कहो- तो ऐसी बात कि सारा जग तुम्हे चाहे।
तू गुलाब होकर महक कि जमाना तुझे चाहे।

-अक्षत (मोनू) अभिलाषा नागर
उज्जैन खिलचीपुर

भिखारी (कार में बैठी सेठानी से)-
मैडम, 10 रुपये दे दो..!
मैडम ने पैसे दे दिये... भिखारी जाने लगा तभी ...
मैडम बोली- बाबा, दुआ तो देते जाओ ..!
भिखारी- बीएमडब्लू में तो बैठी है मोटी,
अब क्या ...रॉकेट में बैठेगी .

मंगलमय शुभयात्रा

सोमवार- दर्पण में अपना मुँह देखकर
मंगलवार- गुड़ खाकर
बुधवार- धनिया खाकर
गुरुवार- जीरा खाकर
शुक्रवार- दही खाकर
शनिवार- अदरक खाकर
रविवार- पान खाकर यात्रा पर निकले तो सभी प्रकार के अनिष्टो का निवारण होगा।
श्री यात्रा मंगलमय होगी।

आइये हम सभी हनुमान बनें

रामचरित मानस में हनुमान का प्रवेश या प्रगटीकरण किशकिंधा काण्ड में सुग्रीव के भयग्रस्त कथन के साथ होता है।

अति सभीत कह हनुमाना। पुरुष जुगल बल रुप निधाना।।

हनुमान का सम्पूर्ण व्यक्तित्व तुलसी ने सुन्दरकाण्ड के प्रथम श्लोक में प्रतिपादित किया है।

अतुलित बल धामं, हेमशैलाभि देहम,
दनुजबन कृशानुं, ज्ञानि नामग्रण्यम।।
सकल गुण निधानं, वानराणाम धीशमं,
रघुपति प्रिय भक्तं, वातजातम नमामि।।

उक्त श्लोक से पवनपुत्र के चरित्र के 7 बिन्दु उभरकर सामने आते हैं। इन्हीं बिन्दुओं पर हम चिंतन करेंगे।

अतुलित बल धामं- किशकिंधा काण्ड में श्रीराम-हनुमान मिलन उपरांत श्री हनुमान ने श्रीराम एवं लक्ष्मण दोनों को कंधों पर बैठाया और सुग्रीव के पास ले चले।

एहि विधि सकल कथा सुनाई। लिए उठा दुऔ पीठि चढ़ाई।।

किशकिंधा कांड से ही हम देखते हैं कि जैसे ही जामवंत ने हनुमान को उनकी बल तथा रामकाज के लिये उनके अवतार की कथा कही तो उनका शरीर फूल कर पर्वत के समान हो गया। उदाहरण देखिये।

कहहिं रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेउ बलवाना।।

पवन तनय बल पवन समाना। बुधि विवेक विज्ञान निधाना।।

कवन से काज कठिन जग माही। जो नहि होइ तात तुम्ह पाही।।

रामकाज लगितव अवतारा सुनतहि भयउ पर्वता कारा।।

विशाल समुद्र को लांघना यह तो अतुलितबल निधान वाले व्यक्ति के लिये ही सम्भव है। चोरों का आहार करने वाली लंकनी को एक ही प्रहार में नासिका और मुँह से रक्त स्त्राव होने लगा। शत्रु की नगरी (लंका) में राजपुत्र अक्षय कुमार को स्वर्ग भेज दिया और रावण के दरबार में निर्भिक होकर उसे खूब खरी-खोटी सुना डाली। अंत में लंका दहन कर सकुशल रामादल में वापस आकर सीता की कुशल क्षेम कही। लंका काण्ड में हम देखते हैं जब लक्ष्मण को शक्ति लगी तो हनुमान सुषेण वैद्य को लाने के लिये उसको उसके पूरे घर सहित उठा लाये। इतना ही नहीं संजीवनी बुटी के लिये भी पूरा पर्वत ही उठा लाये।

देखा शैल न औषध चीन्हा। सहसा कपि उपारि गिरिलीन्हा।।

पवन पुत्र के ये कृत्य ही उन्हें 'अतुलित बल धामं' की उपाधी से विभूषित करने के लिए क्या कम है?

हेम शैलाभिदेहं- पवन पुत्र का पूरा शरीर स्वर्णिम था। सुनहरी कोमल-कोमल रोमावली युक्त, कांती युक्त सुमेरु पर्वत की तरह सुशोभित हो रहा था। यथा

कनक भूधरा कार शरीरा। समर भयंकर अति बल वीरा।।

दनुजबन कृशानु- समादल से शत्रुपुरी लंका में प्रथम प्रवेश करने वाले व्यक्ति हनुमान ही थे। लंका में प्रवेश करते ही उन्होंने रावण की अशोक वाटिका तो उजाड़ी ही साथ ही अक्षय कुमार के साथ अन्य राक्षसों को भी मृत्यु के घाट उतार दिया।

कछु मारेसि कछु मर्देसि, कछु मिलए सि धरि धूरि।

कछु पुनि जाय पुकारे, प्रभु मर्कट बल भूरि।।

इस प्रकार युद्ध में भी कई को मृत्यु के घाट उतार दिया।

ज्ञानी नामग्र गण्यम- पवनात्मज के ज्ञान का परिचय किशकिंधा काण्ड से ही हो जाता है। श्री राम-लक्ष्मण का परिचय जानने के लिये सुग्रीव ने हनुमान को ही क्यों चुना? हनुमान ने ब्राह्मण का रूप धारण कर श्रीराम की प्रशंसा करते हुए उनसे पूछा।

कठिन भूमि कोमल पदगामी। कवन हेतु विचरहु बन स्वामी

जग कारन तारन भव, भंजन धरनी भार।

की तुम्ह अखिल भुवन पति, लीन मनुज अवतार।।

जब हम परिचय के पूर्व ही किसी अज्ञात व्यक्ति की प्रशंसा में कसीदे गढ़ने लगे तो स्वाभाविक रूप से वह व्यक्ति प्रसन्न होकर अपने मन की बात बता देता है। पवन पुत्र ने ऐसा ही कर न केवल श्रीराम को प्रभावित किया। अपितु उनके परिचय के साथ वन गमानगमन का कारण भी जान लिया। और लगे हाथ यह विचार कर कि श्री राम और सुग्रीव दोनों ही नारि-विरह के दुःखी हैं। इसलिए दोनों को उनकी समस्या समाधान का उपाय भी लगे हाथ बतला दिया देखिये-

तेहि सन नाथ मयत्री कीजै। दीन जानि तेहि अभय करीजै।।

सो सीता कर खोज कराइहि। जँह तँह मरकट कोटि पठावहि।।

हनुमान की ज्ञानी नामग्रगण्यमं समझकर ही सीता की खोज के लिये दक्षिण दिशा में जामवंत, अंगदादि को भेजते समय श्रीराम ने हनुमान को ही मुद्रिका क्यों दी? तथा उन्हें ही क्यों समझाईश दी।

यथा बहु प्रकार सीतहि समझाईहु। कहिबलं बिरह बेगितुम्ह आयहु।।

हनुमान को श्रीराम ही बुद्धिमान मानते है ऐसा नहीं है। जामवंत की दृष्टि में भी पवनात्मज बुद्धि विवेक और विज्ञान के सागर है। जामवंत के शब्दों में देखिये।

पवन तनय बल पवन समाना। बुधि विवेक विग्यान निधाना।।

यद्यपि जामवंत ने पवनपुत्र को सीता को देखकर उनकी स्थिति की ही खबर लाने का कहा था, लेकिन पवन पुत्र श्री रामाज्ञा भी नहीं भूले। श्रीराम ने कहा था...

बहु प्रकार सीतहि समझाएहु। कहि बल बिरह वेगितुम्ह आएहु।।

और इसीलिये उन्होंने न केवल राम और वानरों की मित्रता व प्रमाण (मुद्रिका) सहित अपना परिचय दिया। अपितु अपने बल का प्रदर्शन कर सीताजी को आश्वस्त भी कर दिया।

समुद्र लांघने के समय सुरसा के मुँह में समाकर समयाभाव के कारण संघर्ष टालकर लघुरूप धारण कर सुरक्षा का आशीर्वाद प्रदान कर तुरन्त चल दिये।

रामकाज सबु करिहहु। तुम बल बुद्धि निधान।।

यहाँ भी सुरसा ने हनुमान को बल-बुद्धिवान का प्रमाण पत्र दे दिया। गगनाचारादि प्राणियों की छाँह पकड़ कर उन्हें खा जाने वाली निशिचरी को भी उन्होंने अपनी वैज्ञानिक सुझ-बुझ से परम धाम पहुँचा दिया। यह उदाहरण हनुमान के वैज्ञानिक होने का प्रमाण है। विज्ञान निधान होना प्रमाणित होता है।

इस प्रकार पूरा का पूरा सुन्दरकाण्ड पवन पुत्र के बुद्धिचातुर्य एवं विवेक से भरा पड़ा है।

रामादल के समुद्र लंघन के समय समुद्र के खारा होने पर उनका तर्क स्वागत योग्य है।

तव रिपु नारि रुदन जल धारा। भरेउ व होरि भयउ तेहि खारा।

इसी प्रकार चन्द्रोदय देखकर श्रीराम ने पूछा कि चन्द्रमा में काला धब्बा क्यों है? सभी ने अपनी अपनी मति अनुसार विचार रखें। लेकिन हनुमान के तर्क के सामने सभी तर्क निरापद हो गये।

कह हनुमंत सुनहु प्रभु, ससि तुम्हार प्रिय दास।

तव मूरति विधु उर बसति, सोई श्यामलता अभास।।

संजीवनी का बिना चयन किये पूरे के पूरे पहाड़ को उठाकर ले आना यह उनकी दूरदर्शिता का परिचय है। पहाड़ इसलिए उठा लाये कि पता नहीं युद्ध कितने दिन चलेगा और कब किसको किस जड़ी-बुटी (औषधि) की आवश्यकता लगे। इसलिए औषध के भंडार पहाड़ को ही पवन पुत्र ने उठा लिया।

सकल गुण निधानं- उपरोक्त वर्णित सभी प्रसंगों में हनुमानजी में सभी गुणों का समावेश स्पष्ट दिखाई देता है और फिर जिस जगदम्बा सीता ने हनुमान को अजर अमर गुण निधि सुत होउ, करहुँ बहुत रघुनायक सोहू। का वरदान दे दिया उसे गुण-निधि तो होना ही है। जब हनुमानजी सीताजी को रावणवध, रामविजय का समाचार सुनाया तो उन्होंने वरदान दिया।

सुनुसुत सद्गुण सकल तन। हृदय वसहुँ हनुमंत।

सानुकूल कोसल पति, रहहुँ समेत अनंत।।

और अंत में

हनुमान का शाब्दिक अर्थ है, हनु = हनन = नष्ट। मान = घमंड, अभिमान। अर्थात जिसने अपने अभिमान को नष्ट कर दिया हो। जो अभिमान रहित हो। पवन पुत्र ने अपने आराध्य राम की सेवा पूर्ण दास्य भाव से की। हनुमान ने जितने भी बड़े से बड़े और दुष्कर कार्य किये हैं। उनका श्रेय स्वयं ने न लेकर श्रीराम के चरणों में समर्पित कर दिया।

संक्षेप में बानगी देखिये-

जब श्रीराम ने हनुमान से पूछा कि

कहु कपि रावन पालित लंका, के हि विधि दहेउ दुर्ग अति बंका।।

तब हनुमंत ने लंका दहनादि का सारा श्रेय स्वयं के बल, पौरुष को न देकर कहा...

सो सब तब प्रताप रघुराई। नाथ न कछु मोरि प्रभुताई।।

इस प्रकार मानस में जहाँ-जहाँ भी हनुमान के बल, पौरुष, विवेक बुद्धि की प्रशंसा की गई है। उसका सारा श्रेय एवं निमित्त उन्होंने रामकृपा को ही दिया है। कहीं भी उनका अहं प्रगट नहीं होता। इसलिए यदि हम हनुमान बनना चाहते हैं तो अपने अहं, अभिमानादि दुर्गुणों का परित्याग कर प्रभुचरणों में अर्पित कर देना चाहिए।

-हरिनारायण नागर
वरिष्ठ पत्रकार
13, पं. रविशंकर शुक्ल नगर,
पिपलेश्वर महादेव परिसर,
स्टेशन रोड़, देवास

1. सन्डे को पति अगर देर तक सोया रहे तो-

बीवी- अब उठ भी जाओ ! तुम्हारे जैसा भी कोई है क्या ? छुट्टी है तो इसका मतलब यह नहीं कि सोते ही रहोगे।

2. सन्डे को पति अगर जल्दी उठ जाये तो-

बीवी- पिछले जन्म में मुर्गे थे क्या ? एक दिन तो चैन से सोने को मिलता है, उसमें भी ठीक 5-30 बजे उठ कर कुकड़ू-कू करने लगते हो। इतना जल्दी उठकर क्या पहाड़ तोड़ लाओगे ?

3. सन्डे को पति अगर घर पे ही रहे तो-

बीवी- कुछ काम भी कर लिया करो। हफ्ते भर बाट देखते है तुम्हारे सन्डे की, उसे भी तुम केवल नहाने धोने में ही लगा देते हो।

आओ शादी में चले

विवाह या शादी एक ऐसा रोमांचकारी शब्द है जिसकी सूचना मात्र से ही मन में उत्साह का संचार हो जाता है। इस अभ्योजन में शामिल होने की हर उम्र को अलग-अलग अनुभुति होती है। अलग-अलग विचार होते हैं। बच्चों में जहाँ नये-नये कपड़े बनवाने का और मस्ती करने का उत्साह होता है, बड़े बुर्जुगों को नाते रिश्तेदारों से मिलने का उत्साह होता है।

समय परिवर्तनशील है। अतःवैवाहिक कार्यक्रमों में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक है। इतिहास के पन्नों को पलटा जाए तो पता चलेगा कि पहले राजा लोग कोई भी शुभ सूचना हरकारे से भिजवा दिया करते थे। पत्राचार का जमाना नहीं था। जमाना बदला पत्र या फोन द्वारा सूचना दे दी जाने लगी। शादी का समय पास आने पर एक कार्ड भेज दिया जाता था। पूरा परिवार शादी में इकट्ठा हो जाता था। कितने समय रुकना है इसका तो प्रश्न ही नहीं उठता था। शादी वाले परिवार को बिना कोई परेशानी में डाले खुद का बिस्तर भी खुद लेकर चलते थे। शादी वाले घर में पूरी जिम्मेदारी और बराबरी से काम करते थे।

कालान्तर में फिर स्थिति बदली। मनुहार पत्रिका का चलन शुरु हुआ। फिर कार्ड भेजा जाने लगा। अगर शादी शहर (लोकल) में ही है तो मिठाई का डिब्बा या काजु किश्मिश का डिब्बा भेजा जाने लगा। कई बार पंजाबी या बनियों की शादी में कार्ड के साथ का डिब्बा ऐसा होता है जैसे गहनों का डिब्बा। उन डिब्बों की कीमत लगाई जाये तो शायद एक-एक डिब्बा 1000/-रुपये का अवश्य होगा। जितनी बड़ी पार्टी उतना तामझाम।

अब खाना बनाने का काम भी केटरिंग वालों या रसोइयों ने ले लिया था। बराती और घराती दोनों को ठहराने और आवभगत की जिम्मेदारी शादी वाले परिवार पर ही आ गई थी। मेहमान तो शादी के नाम पर दो चार दिन मोजमस्ती या Sight-Seene के लिये आते थे।

हमारे गुजराती समाज में वरमाला पहले द्वार पर ही हो जाया करती थी। उसका भी स्वरूप बदल गया। अब जयमाला पूरे तामझाम के साथ स्टेज पर होने लगी। जो वधु कुमकुम के छीटे लगी सफेद साड़ी में पवित्रता की मूर्ति लगती थी, वह भारी भरकम लहंगे (जो कभी कभी उसके वजन से भी भारी हो जाता है) भारी गहने, मेकअप, हाथ में भारी वरमाला। अब वह लहंगा संभाले, वरमाला या खुद को, इसके लिये सहेलियों की जरूरत पड़ने लगी है। दूसरी तरफ दुल्हा जहाँ पहले वह धोती और पीताम्बर में राम या विष्णु की प्रतिमूर्ति लगता था। उसने अचकन और शेरवानी में अपनी नागर होने की पहचान ही खो दी है।

प्रसाद जी ने ठीक ही कहा है-

मकान चाहे कच्चे थे
रिश्ते सारे सच्चे थे
पैसा चाहे कम था
माथे पर न गम था
जीवन की भाग दौड़ में
क्यूं वक्त के साथ
रंगत खो जाती है।

अब स्टेज पर नजारा देखिये। वर-वधू को आपस में माला डालनी है वह सीधे तरीके से क्यों हो जाये। वर-वधू को गोद में उठाने का जो काम पहले मामा करता था वह अब दोस्त या सहेलियाँ करते हैं। वर-वधू को उनके दोस्त एक-दूसरे से इतना ऊँचा उठाने की कोशिश करते हैं कि माला डालना मुश्किल हो जाता है। शायद आज की पीढ़ी यह भूल गई है कि नतमस्तक होकर सम्बन्ध स्वीकारना बड़प्पन की निशानी है। सिर उठाना अहम की निशानी। शादी तो दो आत्माओं के समर्पण की निशानी है। अहम का तो वहाँ स्थान ही नहीं होना चाहिए। एक सच्ची घटना है कि वरमाला के समय दोस्तों द्वारा वर को बार-बार ऊँचा कर देने के कारण वधू जब दो बार वर के गले में माला डालने में असफल हो गयी तो उसने शादी से ही इंकार कर दिया। बाद में पुलिस केस बन गया और शादी का माहौल बिगड़ गया।

शादी के नाम पर इतनी फिजूल खर्ची होने लगी है कि पूछो मत। संगीत की अलग पौशाक, मेहंदी की अलग पौशाक, फेरो की अलग, डी.जे. के शोर से हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। द्वार पर बारात आने पर वर पक्ष वाले इतनी देर तक नाचते रहते हैं कि वो खुद तो पसीने-पसीने हो जाते हैं, मेहमानों को भी परेशानी होने लगती है। पिछले महीने एक शादी में जाने का मौका मिला, वरपक्ष नाचने में इतना व्यस्त था कि कन्यादान का समय हो गया और दो चार लोगों के सामने ही शादी सम्पन्न हो गयी। कई बार वर-वधू Revolveing stage से आसमान से उतरते नजर आते हैं। जमीन

पर पाँव ही नहीं पड़ते। लाखों की साड़ियाँ, जेवर खरीदे जाते हैं पर शादी में बाद हनीमून (आज हनीमून का जमाना है) हाथ में चूड़े से जरुर यह पता चलता है कि नई-नई शादी हुई है। मैं आधुनिकता के विरुद्ध नहीं हूँ। Old is Gold पर आधुनिकता में हर चीज बुरी है ऐसा नहीं है। समय के साथ हर चीज शोभा देती है। शरीर को उघाड़ कर दिखाने के बजाए उसे ढक कर भी आधुनिक बना जा सकता है। लाज नारी का गहना है। आज यह गलत साबित हो गया है। शायद पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव हो। सौन्दर्य आवरण में शोभा देता है। जयशंकर प्रसादजी ने कहा है-

हे लाज भरे सौन्दर्य बता दो
मौन बने रहते हो क्यों?

हो सकता है इस लेख की कई बाते किसी को नागवार लगे पर पुरानी और नई पीढ़ी में हमेशा से टकराव होता आया है और होता रहेगा। दोनों पीढ़ियों में आपसी सामंजस्य हो दोनों एक-दूसरे के विचारों का मान रखते आगे बढ़ें तो आधुनिकता भी माथा टेकेगी।

परिवर्तन ही जिन्दगी है।

-सविता (नीलू) दवे
29, शांति विहार,
दिल्ली

Mental Attitude

By changing your mental "ATTITUDE" you can become 100% successful
If-
ABCDEFGHIJKLMNOPQRSTUVWXYZ =
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26
Then HARDWORK
8 + 1 + 18 + 4 + 23 + 15 + 18 + 11 = 98%
KNOWLEDGE
11 + 14 + 15 + 23 + 12 + 5 + 4 + 7 + 5 = 96%
Then LOVE
12 + 15 + 22 + 5 =54%
LUCK
12 + 21 + 3 + 11 = 47%
None of them makes 100%
Then what makes 100% ???
Is it Money ? No !!!
Leadership? No !!!
Every problem has a solution only if we perhaps chang our 'ATTITUDE'. It is there fore our 'ATTITUDE' towards Life and work that makes our life 100% successful.
Then ATTITUDE
1 + 20 + 20 + 9 + 20 + 21 + 4 = 5 = 100%
It is our mental 'ATTITUDE'

- Ramesh Nagar
66, Trapti Parisar, Ujjain
Mob.: 9977050413

सोने का पिंजरा

एक दिन एक चिड़िया को मैंने सोने का पिंजरा दिखलाया।
चांदी की प्याली में रखकर दूध मलाई से ललचाया।
चिड़िया रानी नीड छोड़कर सोने के पिंजरे में आओ
मत भटको दाने दाने को आओ, दूध-मलाई खाओ।
चिड़िया ने उस ओर नहीं पर पलभर को भी आँख उठाई
किसी लोभ-लालच में आकर न डिगी वह और न ललचाई।
बोली 'अपना तिनके चुनकर बना घोंसला ही अच्छा है।
मुक्त गगन में उड़कर वन से दाने चुग लाना अच्छा है।
सोना-चाँदी तुम्हें मुबारक मुझे डाल पर सुख पाने दो
आजादी सोने-चाँदी से अच्छी मुझे मस्त होकर गाने दो।

-सौ.रश्मि मनीष मेहता
राजीव नगर, भोपाल मो. 9827070219

अभी तक का सबसे खतरनाक जोक

ट्रिंग... ट्रिंग... हैलो- आंटी
जी पायल है? हां बेटा! दोनों पैरों
में है! और चप्पल भी है।

चाहत न थी

(1)
चाहत न थी देखूँगा ऐसा मंजर भी,
लहू जब एक है, क्यूं चुभते नश्तर भी,
इन्सानियत कहाँ गई अफसोस बहुत?
नफरतों के दौर, चले कैसे हँसकर भी?
बहुत चाहा बाहे भरी, पर क्या हुआ?
बहारे कब लौटे, खुश हो रहबर भी?
वो तो कुरबां हुए थे, वतन के लिए
खुश रहे अहले वतन गये कहकर भी
आती याद बार-बार गुजरे फसानों की
'भारती' वो रंग भी क्या था, गये रंगकर भी।

(2)
अब तक वो आया नहीं
मन को भी लुभाया नहीं
कौन जाने कब आयेगा?
घर को भी सजाया नहीं
सोचा जाऊँ सरगम पर
मैंने अभी कुछ गाया नहीं
कैसे-कैसे चित्र बनाये पानी पर
पर हाथ कभी वो आया नहीं
चल ढूंढने किस दिशा में
'भारती' मन को समझाया नहीं

-सुभाष नागर भारती, अकलेरा

देवों के देव महादेव

धर्म शास्त्रों में भगवान शिव को जगत पिता बताया गया है क्योंकि शिव सर्वव्यापी एवं पूर्ण ब्रह्म हैं। शिव शक्ति का ही आदि रूप है शिव अनादि व अजन्मा है, सृष्टि के आदि में ब्रह्माजी ने सर्वप्रथम मानसिक सृष्टि की सनकादि, 04 कुमारों की, इन पुत्रों ने प्रारंभ में ही सृष्टि रचना की आज्ञा अस्वीकार कर दी। इस पर ब्रह्मा ने रोष प्रकट किया इस कारण भूमध्य से लोहित कुमार प्रकट हुए व रोने लगे रोने के कारण उनका नाम रुद्र पड़ा।

शिव शक्ति शब्द की उत्पत्ति वंश कातो धातु से हुई है जिसका अर्थ है सबको चाहने वाला और जिसे सभी चाहते हो निराकार होते हुए भी शिवलिंग के रूप में साकार मूर्ति के रूप में पूजा होती है प्रलय के पश्चात सृष्टि के आरंभ में भगवान नारायण की नाभी से एक कमल प्रकट हुआ व उस कमल पर ब्रह्मा प्रकट हुए, ब्रह्मा अपने कारण का पता लगाने के लिए कमल नाल से नीचे उतरे यहां उन्होंने शेषशायी नारायण भगवान को योग निद्रा में लीन देखा। उन्होंने नारायण को जगाकर पूछा आप कौन है? नारायण ने कहा मैं लोको का उत्पत्ति स्थान व लय स्थल पुरुषोत्तम हूं, ब्रह्मा ने कहा किन्तु सृष्टि की रचनाकर्ता मैं हूं। ब्रह्माजी के ऐसा कहने पर भगवान विष्णु ने अपने शरीर में व्याप्त सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का दर्शन कराया, ब्रह्माजी ने कहा इसका तात्पर्य है कि इस संसार के सृष्टा मैं व आप दोनों हैं तब विष्णु ने कहा आप ब्रह्म है सबसे परम कारण परमेश्वर ईशान भगवान शिव को आप नहीं देख रहे हैं, आप अपनी योग्य दृष्टि से उन्हें देखने का प्रयत्न कीजिये हम सबके आदि कारण भगवान शिव आपको दिखाई देंगे। जब ब्रह्माजी ने योग दृष्टि से देखा तो उन्हें त्रिशूल धारण किए परम तेजस्वी नीलवर्ण की एक मूर्ति दिखाई दी, उन्होंने नारायण से पूछा यह कौन है नारायण ने बताया यही देवादि देव महादेव है यही सबको उत्पन्न करने के बाद सबका भरण पोषण करते हैं व अंत में सब इनमें विलीन हो जाते हैं इनका न आदि है न अंत इस प्रकार ब्रह्मा ने भगवान विष्णु की कृपा से सदाशिव का दर्शन किया।

पूर्व में वैदिक काल में भी विश्व के अनेक देशों में शिव उपासना प्रचलित थी। इस्लाम एवं ईसाई धर्म के प्रादुर्भाव के पूर्व दक्षिण अमेरिका, मैक्सिको, मिश्र, मंगोलिया आदि देशों में शैव मत का प्रचार था। इस्लाम के पूर्व अरब में 360 मुख्य शिव लिंग थे। सूर्य, शिव और अग्नि की पूजा प्रचलित थी सूर्य उपासना के आधार पर ही विश्व प्रसिद्ध पीरामिड का निर्माण हुआ 'यमन का बाग' में प्रसिद्ध शिवालय था।

शिव 05 तरह से कार्य करते हैं जो ज्ञानमय है। सृष्टि की रचना सृष्टि का भरण पोषण, सृष्टि का विनाश करना, परिवर्तनशीलता रखना और सृष्टि से मुक्ति प्रदान करना।

शिव राष्ट्रीय एकता के प्रतीक है वह स्वयं उत्तर निवासी है और वरण करते है धुर दक्षिण में कन्या कुमारी में रहने वाली पार्वती का। शिव के द्वादश ज्योर्तिलिंगों के विभिन्न प्रान्तों के बिखरने के बाद भी एक ही साथ सम्पूर्ण देश को एकत्र कर दिया है। भगवान की आराधना दक्षिण में रामेश्वरम् से लेकर उत्तर में काशी तक होती है।

शिव परिवार में सभी जीव जन्तु (शेर, चीता, भालू, मोर, बैल, चूहा) एक साथ रहकर सद्भाव का परिचय देते हैं शिव जहां एक ओर उत्तर में है हिमालय पर विराजमान है तो उनका स्वरूप श्मशान में निहित है शिव ने तन पर भस्म लगाकर समूची मानवता को संदेश दिया कि भस्मातम शरीराभाव, की इंसान का शरीर एक दिन भस्म हो जाएगा। शिव ने वहीं उपेक्षित वर्ग को भी जोड़कर रखा शिव बारात में उपेक्षित वर्ग या समाज जिनसे डरता है भूत-पिशाच आदि भी शामिल हुए। शिव पुराण में दशावतार का वर्णन है शिव के अन्य 11 अवतार भी है।

सृष्टि के आदि में महा शिवरात्रि की मध्य रात्रि में शिव का ब्रह्म से रूद्र रूप में अवतरण हुआ इसी दिन प्रलय के समय प्रदोषण स्थिति में शिव ने तांडव नृत्य करते हुए सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने तीसरे नेत्र से नष्ट कर दिया, इसलिए महा शिवरात्रि पर्व के रूप में मनाने की प्रथा का प्रचलन है इस संदर्भ में शिव पुराण की विद्धेश्वर संहिता तथा श्रीमद् देवी भागवत् की कथाओं का सारांश यह है कि अनेक वर्षों की समाधि के बाद जब शिव ने अपने नेत्र खोले तो कुछ आंसू पृथ्वी पर गिरे उसी रुद्राक्ष के महान वृक्ष की उत्पत्ति हुई। शिव के आभूषण में जटायें वेदों की रिचायें हैं आकाश उनकी जटा का स्वरूप है व जटायें वायु मण्डल का प्रतीक है मस्तक पर चन्द्रमा मन का प्रतीक है शिव का मन भोला पवित्र व सशक्त है, उनका विवेक सदा जागृत रहता है शिव त्रिनेत्रधारी भूत, भविष्य व वर्तमान के ज्ञाता हैं गले में सर्प जैसे क्रूर विध्वंशक जीव महाकाल के अधीन है त्रिशूल सृष्टि में मानव भौतिक दैविक व आध्यात्मिक तीनों पापों को नष्ट करता है शिव एक हाथ में डमरू है, जिसका नाद ही ब्रह्म रूप है गले में मुण्ड माल है जो

बताता है कि शिव ने मृत्यु को वश में कर रखा है। वृषभ शिव वाहन है वृषभ का अर्थ है धर्म, महादेव चार पैरों वाले बैल की सवारी करते हैं अर्थात धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, उनके अधीन है। शिव का तीसरा नेत्र कामदेव को भस्म करने के लिए ललाट के मध्य भाग में खुला था इसलिए शिव को त्रिलोचन भी कहते हैं। हर व्यक्ति के मस्तिष्क में तीसरा नेत्र छुपा होता है यदि इसका 10वां भाग भी जागृत हो तो व्यक्ति त्रिकालदर्शी हो जाएगा। एक फूल शिव पर चढ़ाना स्वर्णदान का फल देता है वह है आक का फूल हजार आक के फूलों की अपेक्षा एक कनेर का फूल, हजार कनेर के फूलों की अपेक्षा एक बेलपत्र हजारों बेलपत्रों की बराबर एक द्रोर्ण या गूमा फूल फलदायी है। हजार गूमा के बराबर एक चीचड़ा, हजार चीचड़ा के बराबर एक कुश का फूल, हजार कुश के फूलों के बराबर एक शमी पत्र व हजार शमी पत्रों के बराबर एक नीलकमल व हजार नीलकमल से बराबर एक धतुरा व हजारों धतुरों से भी ज्यादा एक शमी फूल शुभ पुण्य देने वाला होता है कमल फूल शापित होने के कारण शिव को नहीं चढ़ता।

प्रेत, पिशाच, भैरव, विनायक यातुधान, डाकीनी, कुश्माण्ड, बैताल, योगिनी आदि शिव के गण है योगिनी संख्या 64 है।

त्रिपुर, योगिनी आदि शिव के गण है योगिनी संख्या 64 है।

त्रिपुर, मय, रावण, बाणासुर, भस्मासुर आदि दानवों ने भी तपस्या से शिव को प्रसन्न कर अक्षय शक्ति प्राप्त की। भगवान शिव सुर और असुर दोनों के उपास्य है शिव के अनेक स्वरूप व अनंत नाम है। शिव पुराण स्कंध पुराण लिंग पुराण आदि में शिव महिमा का विस्तृत वर्णन है। शिव के 108 नाम है व रुद्राक्ष के 108 दानों की माला उनके एक-एक नाम का प्रतीक है। शिव स्वरूप अणु परमाणु में व्याप्त है परमाणु के 03 कर्ण है- प्रोट्रॉन, न्यूट्रॉन, इलेक्ट्रॉन। प्रोट्रॉन धनावेश युक्त है सजृक है, न्यूट्रॉन तटस्थ है यदि प्रोट्रॉन ब्रह्म है तो न्यूट्रॉन विष्णु का व शिव इलेक्ट्रॉन है जो ऋणावेश युक्त है यह शिव का संहारक रूप है।

ऊँ = अ + ऊ + म (ब्रह्मा+विष्णु+महेश) शिवोळहम् यह पंचाक्षर मंत्र शिव भक्ति का प्रतीक है। वैज्ञानिक शिव को परमाणु ऊर्जा के रूप में भी देख सकते हैं। शिव लिंग परमाणु का प्रतीक है व ताण्डव नृत्य परमाणु ऊर्जा का विनाशकारी स्वरूप। सम्पूर्ण विद्याओं तथा कलाओं के शिव आदि आचार्य है अभी तक इतना बड़ा सर्जन कोई नहीं हुआ इन्होंने दक्ष को बकरे का सिर लगाकर तथा पुत्र गणेश को हाथी सिर लगाकर इंसान का काम करवाया, बल्कि गणेश बुद्धि के देवता भी कहलाये। शिव के मुख से 28 तंत्रों की उत्पत्ति हुई विश्व की भौतिक व्यवस्था तंत्रों से ही हुई है। संगीत शिव डमरू के नाद की ही देन है ताण्डव उनके रौद्ररूप का प्रतीक व आयुर्वेद, धनुरवेद आदि समस्त ज्ञान उनके द्वारा ही मानव व देवताओं को प्राप्त हुई।

अत: भगवान शिव को सर्वश्रेष्ठ सर्वशक्तिमान व देवों के देव महादेव कहा गया है।

कर्पूरगौरं करूणावतारं संसारसारम् श्रेजगेन्द्रहारम्।

सदावसन्तं हादयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि।।

अर्थात :- कपूर की तरह शुद्ध, करुणा के अवतार, अस्तित्व का सार, सर्पराज जिनके गले का हार है, जो हमेशा हृदयकमल में वास करते हैं, ऐसे भगवान शिव और शक्ति को मैं नमन करता हूं।

प्रो. आर.के. शर्मा
खण्डवा, 9424549184

लघुकथा

आधी रात में मुसीबत

पुरातत्व विभाग के दो अधिकारी ऐतिहासिक स्थल की खुदाई के लिए गांव में पहुंचे। मजदूर सुबह आने वाले थे। उन्होंने टेन्ट लगाया, खाना खाया और सो गए। आधी रात को अचानक रवि की नींद खुली आसमान की तरफ देखा तो दिल धक से रह गया। उसने नीलेश को जगाया। रवि को हर बात दिलचस्प अंदाज में कहने की आदत थी , बोला- नीलेश ! आकाश की ओर देखो, चांद तारे चमक रहे हैं।

''सोने दो यार ! रात को सूरज दिखने से रहा, तुम भी सो जाओ।'' नीलेश करवट बदलते हुए बोला।

''उठो यार, ध्यान से देखो क्या हो गया है?''

''यार एक तो आधी रात को नींद खराब कर दी और एक के बाद एक वाहियात सवाल किये जा रहे हो।'' नीलेश झल्लाया, तुम्हें भी यार, मजाक के लिए यही वक्त सूझा!

''मजाक नहीं कर रहा, सिरियस हूं। सावधानी से देखो और बताओ।''

''अरे यार, तारे दिख रहे हैं, बादल नहीं हैं, सो जाओ, अभी बारिश नहीं होगी।''

''और कुछ देखो, दिमाग में शायद कुछ क्लिक कर जाए !''

''हद हो गयी यार, मैं न तो खगोलशास्त्री हूं और न ही ज्योतिषी। अब एक शब्द भी बोले तो मैं अपने बाल नोच लूंगा।'' नीलेश के सब्र का बांध टूट गया था।

''तो सुनो, रवि ने कहा, हमारा टेन्ट किसी ने चुरा लिया है।''

नीलेश ने अपना सिर थाम लिया।

-आशा नागर, ऋषिनगर,
उज्जैन 9926573054

पत्नी मायके जाती है और पति को शायराना अंदाज में मेसेज भेजती है-

मेरी मोहब्बत को अपने दिल में ढूंढ़ लेना;
और हां, आटे को अच्छी तरह गूंथ लेना!
मिल जाए अगर प्यार तो खोना नहीं;
प्याज़ काटते वक्त बिलकुल रोना नहीं!
मुझसे रूठ जाने का बहाना अच्छा है;
थोड़ी देर और पकाओ आलू अभी कच्चा है!
मिलकर फिर खुशियों को बांटना है;
टमाटर जरा बारीक़ ही काटना है!
लोग हमारी मोहब्बत से जल न जाएं;
चावल टाइम पे देख लेना कहीं गल न जाएं!
कैसी लगी हमारी ग़जल बता देना;
नमक कम लगे तो और मिला लेना!
पति ने हंसते हुए रिप्लाई किया-
तुम्हारी यही अदा तो दिल को भा गई;
तुम्हारे जाते ही, पड़ोसन खाना पकाने आ गई!

अमृत मन्थन और उज्जैन में सिंहस्थ

दशावतारों के अनुक्रम में अपेक्षित संशोधन - श्रीमद् भागवत महापुराण१ के अनुसार चाक्षुष मन्वन्तर में वैराज की पत्नी 'सम्भूति' के गर्भ से 'अजित' ने अंशावतार धारण कर समुद्रमन्थन सम्पन्न करवाया। दुर्वासा ऋषि के शाप से श्रीहीन हुए इन्द्र 'मन्त्रद्रुम' ने असुरों के अधिपति बलि से सुलह की। इसलिये समुद्रमन्थन की घटना वैशाखशुक्ल पूर्णिमा के दिन 'कूर्मावतार' से प्रारम्भ हुई। निष्कर्ष यह भी निकलता है कि मत्स्यावतार में हयग्रीव वध और वराह अवतार में हिरण्याक्ष के वध के बाद हिरण्यकश्यपु का वध नृसिंह अवतार में हुआ। तदनन्तर प्रहलाद पुत्र विरोचन के पुत्र बलि ने असुरों का अधिपति बन त्रिलोक पर विजय प्राप्त की। और कूर्मावतार में समुद्र मन्थन से 'अमृतकलश' प्राप्ति के पश्चात् ही वामन अवतार होने की सम्भावना बनती है। तदनुसार दशावतार अनुक्रम में संशोधन अपेक्षित है।

समुद्रमन्थन की कालावधि - समुद्रमन्थन की घटना चाक्षुष मन्वन्तर में घटित हुई। परन्तु पंचाग की प्रविष्टियों के आधार पर दशावतार जयन्ती२ की मास व तिथियों का उल्लेख एक तरफ भारतीय ज्योतिर्विज्ञान की समृद्ध परम्परा का पुष्ट करता है तो दूसरी तरफ प्रत्येक चतुर्युगी में इन अवतारों की एक निश्चित तिथि-मास की निरन्तर पुनरावृति की भी पुष्टि करता है। । तदनुसार वैवस्वत मन्वन्तर के अठठ्ाईसवें कलियुग की गणना यह संकेत देती है कि इस मन्वन्तर के सतयुग में भी वैशाख शुक्ल पूर्णिमा के दिन समुद्रमन्थन का प्रारम्भ हुआ और पूर्णिमान्त कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (अर्थात अमान्त आश्विन कृष्ण त्रयोदशी) के दिन धन्वन्तरि जयन्ती के दिन देवों तथा दानवों केा अपने चरमलक्ष्य अमृत की प्राप्ति हुई। इस प्रकार समुद्रमंथन कुल १६४ दिन यानी लगभग साढे पांच महीने तक चला। मोहिनी अवतार (संभवत: वैशाख शुक्ल एकादशी) में अमृत वितरण के समय देव-दानव युद्ध और कलश की छीना झपटी प्रारम्भ हुई। कलश की सुरक्षा का मुख्य दायित्व सूर्य, चन्द्र, गुरू का था। इसीलिये इनकी खगोलीय स्थिति कुम्भ पर्व और सिंहस्थ पर्व के लिये निर्णायक मानी जाती है।

क्षीरसागर से नासिक, उज्जैन, प्रयाग तथा हरिद्वार तक की कलश यात्रा का समय बारह दिव्य दिवस (यानी मानवीय बारह वर्ष) माना जाता है। इस आधार पर समुद्रमन्थन के एक सौ चौंसठ दिन भी दिव्य दिवस माने जाएं तो अमृत मन्थन की अवधि ५९०४० मानव वर्ष बनती है। प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या इतनी लम्बी अवधि तक देवता और दैत्य मिलकर दही की तरह क्षीर समुद्र को ही मथते रहे ?

क्षीरसागर का तट - औषधि निर्माण में सामान्यत: Distilled water प्रयुक्त किया जाता है। प्रतीत होता है कि क्षीरसागर का पानी अपने विशिष्ट गुणों के कारण सबसे अधिक उपयुक्त था। भारतवर्ष का वर्तमान केरल प्रदेश का तट क्षीरसागर की प्रयोग शाला का मुख्यालय माना जा सकता है। मन्थन के लिये आधारभूमि होना अनिवार्य है। इस दृष्टि से यदि केरल तट पर देवताओं का समुदाय उपस्थित था तो दूसरा तट तत्कालीन लंकाद्वीप या अफ्रीका महाद्वीप का क्षेत्र होना संभव है। वस्तुत: देवसंस्कृति मन्त्र-तन्त्र युक्त अध्यात्मप्रधान थी तो दैत्य संस्कृति भौतिकता प्रधान (भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, वनस्पति शास्त्र आदि से समृद्ध विषयों के विशेषज्ञों से युक्त थी।) हिमालय की तराई का कुमायूं क्षेत्र कूर्माचल कहलाता है। अर्थात् प्रयोगशाला का क्षेत्र अतिविस्तृत होना चाहिए।

समुद्र मन्थन और चतुर्दश रत्न - मेरी समझ में अमृत प्राप्ति के मुख्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये दोनों समुदाय के विशेषज्ञों के अलग-अलग समूह बनाये गये और उसकी उपलब्धियां संक्षेप में इस प्रकार रहीं -

१. रसायन शास्त्रीय विशेषज्ञों को १. सुरा (वारुणी) २. हालाहलविष प्रारम्भ में प्राप्त हुए

२. पशुशास्त्रियों द्वारा cross-breeding परीक्षण कर ३. कामधेनु ४. सप्तमुखी श्वेतवर्ण का उच्चै:श्रवा घोडा और ५. चार दांतो वाले श्वेत वर्ण के ऐरावत हाथी की प्रजाति विकसित की गई।

३. रत्नविज्ञानवेत्ताओं ने 'कौस्तुभमणि' प्राप्त किया।

४. शस्त्रायुधनिर्माताओं की उपलब्धि थी ७. शार्ङ्गधनुष।

५. भूगर्भशास्त्रीय परीक्षणों से ८. 'चन्द्रमा' ग्रह उत्पन्न होकर पृथ्वी की परिक्रमा करने लगा।

६. औद्योगिकी परीक्षण से विकसित हुआ पारिजात' वृक्ष।

७. आयुर्विज्ञान तथा सौन्दर्य प्रसाधन के क्षेत्र में किये गये विविध प्रयोगों ने १० अप्+सरा - बहती जलधारा सी चपलता और स्फूर्तियुक्त अप्सराओं के रूप में महिलाओं को परिवर्तित कर दिया और ११. सर्वांग सुन्दरी लक्ष्मी ने विष्णु भगवान का वरण किया।

८. जल विशेषज्ञों ने १२. शंख प्राप्त किया

९. पूरे मंथन कार्य का नेतृत्व कर रहे थे १३ धन्वन्तरि जो धन्वन्तरि जयन्ती पर समुद्रमन्थन के चरमलक्ष्य १४. अमृतकलश सहित अवतरित हुए। उस समय सूर्य तुला राशि में थे।(क्रमश:)

-श्रीमती शशिकला रावल
(एम.ए. (ज्योतिर्विज्ञान, अंग्रेजी), एम.एड.)
डी-11, आश्रय ऋषिनगर, उज्जैन फोन -(0734)2510397

देव परिक्रमा या प्रदक्षिणा कितनी, क्यों और कैसे?

ईश्वर पूजा में अगाध श्रद्धा होनी चाहिये। श्रद्धारहित पूजा-अर्चना एवं परिक्रमा सदैव निष्फल हो जाती है। श्रद्धा का ही चमत्कार था, जिसके बल पर श्रीगणेशजी ने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को शिव स्वरूप और माता को शक्ति रूप मानकर अपने ही माता-पिता की परिक्रमा कर भगवान शिव एवं माता पार्वती से सर्वप्रथम पूजे जाने का आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रदक्षिणा या परिक्रमा करने का मूल भाव स्वयं को शारीरिक तथा मानसिक रूप से भगवान के समक्ष पूर्णरूप से समर्पित कर देना होता है। भारतीय संस्कृति में परिक्रमा या प्रदक्षिणा का अपना एक विशेष महत्व एवं स्थान है। परिक्रमा से अभिप्राय है कि स्थान या किसी व्यक्ति के चारों ओर उसके बांयी तरफ से घूमना। इसे ही प्रदक्षिणा कहते हैं। यह हमारी संस्कृति में अतिप्राचीन काल से चली आ रही है। खानाए काबा मक्का में परिक्रमा करते हैं, बोध गया में भी परिक्रमा की परम्परा आज भी यथावत है। विश्व के सभी धर्मों में परिक्रमा का प्रचलन हिन्दू धर्म की देन है। ''प्रगतं दक्षिणमिति प्रदक्षिणां'' इसका अर्थ है कि अपने दक्षिण भाग की ओर गति करना प्रदक्षिणा कहलाता है। प्रदक्षिणा (परिक्रमा) में व्यक्ति का दाहिना अंग देवता की ओर होता है। इसे ही परिक्रमा या प्रदक्षिणा कहा जाता है। 'शब्दकल्पद्रुम' में बताया गया है कि देवता को श्रद्धा-आस्था एवं उद्देश्य से दक्षिणावर्त भ्रमण करना ही प्रदक्षिणा है। वैदिक दार्शनिकों-विचारकों के अनुसार अपने धार्मिक कृत्यों को बाधा-विघ्नविहीन भाव से सम्पादित करने के लिये प्रदक्षिणा का विधान किया गया है।

परिक्रमा करने का व्यावहारिक और वैज्ञानिक पक्ष वास्तु और वातावरण में व्याप्त सकारात्मक ऊर्जा से जुड़ा है। वास्तव में ईश्वर की पूजा-अर्चना, आरती के पश्चात् भगवान के उनके आसपास के वातावरण में चारों ओर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होता है और नकारात्मकता घटती है। इससे हमारे हृदय में पूर्ण आत्मविश्वास का संचार होता है तथा जीवेष्णा में वृद्धि होती है।

परिक्रमा का धार्मिक पहलू यह है कि इससे अक्षय पुण्य प्राप्त होता है। जीवन में कष्ट-दु:ख का निवारण हो जाता है। पापों का नाश हो जाता है।

किसी भी देव की परिक्रमा या

प्रदक्षिणा करने पर अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त होता है। परिक्रमा से शीघ्र ही मनवांछित मनोकामना पूर्ण हो जाती है। परिक्रमा प्रारम्भ करने के पश्चात् बीच में रूकना निषेध है। परिक्रमा वहीं पूर्ण करें जहाँ से प्रारम्भ की गई थी। परिक्रमा करते समय आपस में वार्तालाप नहीं करना चाहिये। जिस देवता की आप परिक्रमा कर रहें हैं उनका ध्यान करें तभी आपको परिक्रमा का शीघ्र मनोवांछित फल प्राप्त होगा। परिक्रमा पूर्ण हो जाने पर भगवान को दण्डवत प्रणाम करें। परिक्रमा करते समय देव पीठ को प्रणाम करना चाहिये। परिक्रमा का पूरे ब्रह्माण्ड के लिये भी विशेष महत्व है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है, इसलिये ऋतुएँ आती-जाती हैं। ब्रह्माण्ड के अन्य ग्रह भी अपने-अपने पथ (कक्षा) पर परिक्रमा करते हैं और पूरी व्यवस्था का एक सन्तुलन बना रहता है। इसी प्रकार देव मंदिरों के दर्शन करने के बाद परिक्रमा का विधान है। इससे मानव मन एवं हृदय देवत्व से जुड जाता है और जीवन में परम् पिता परमेश्वर की कृपा का संचार होने लगता है। परिक्रमा से मन पवित्र हो जाता है। विकार नष्ट हो जाते हैं। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का प्रत्येक ग्रह-नक्षत्र किसी न किसी तारे की परिक्रमा कर रहा है। यह परिक्रमा ही जीवन का शाश्वत सत्य है। व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन ही एक चक्र है। इस चक्र को आसानी से समझने के लिए परिक्रमा जैसे प्रतीक को निर्मित किया गया है। भगवान में ही सारी सृष्टि समाई है, उनसे ही सब उत्पन्न हुए हैं, हम उनकी परिक्रमा लगाकर यह मान सकते हैं कि हमने सम्पूर्ण सृष्टि की परिक्रमा कर ली है।

प्रदक्षिणा या परिक्रमा का एक ओर रूप

प्राय: प्रदक्षिणा या परिक्रमा किसी भी देवमूर्ति के चारों ओर घूमकर की जाती है लेकिन कभी-कभी देवमूर्ति की पीठ दीवार की ओर रहने से प्रदक्षिणा के लिये फेरे लेने की जगह पर्याप्त नहीं होती है। हमारे घरों में भी पूजन करते समय देवमूर्ति की स्थापना किसी दीवार के सहारे से ही की जाती है। ऐसी दशा में देवमूर्ति के ही समक्ष अर्थात् आप जहाँ खड़े हैं वहीं दांयी तरफ से गोल घूमकर अपने खड़े रहने के स्थान पर भी परिक्रमा या प्रदक्षिणा कर लेना चाहिये। ऐसी परिक्रमा का फल भी मंदिर की पूरी की गई परिक्रमा के बराबर होता है।

-डॉ. नरेन्द्र कुमार मेहता 'मानस शिरोमणि'

दुनिया में जितना गम है, हरि के भजन में उतना ही दम है।

तर्ज : दुनिया में कितना गम है...

दुनिया में जितना गम है, हरि के भजन में उतना ही दम है 2
प्रभु का भजन कर देखा जो मैंने, मन को बहुत आनन्द मिला।
राम भजन कर देखा तो मेरे, मन को बहुत सुख चैन मिला ओ। दुनिया....
(1) श्याम दीवानी मीरां भक्तों पी गई वो विष का प्याला।
विष प्याले में देखा उसने मोहन वो मुरली वाला।
जहर के लड्डू को मोहन ने मोहन भोग बना डाला।
विष को अमृत किया श्याम ने मीरा का गम दूर किया। दुनिया ....
(2) श्याम भक्त थी देखो लोगों वो थी विदुर की विदुरानी।
श्याम को घर में आते देखा, तन, मन की सुध बिसराई।
कच्चे केले के छिलको को खिला रही वो मस्तानी।
केले के छिलकों को खिलाकर मोहन का मन जीत लिया। दुनिया..
(3) करती करुण पुकार सभा में लोगों थी द्रोपदी रानी।
दुष्ट दुशासन खींच रहा था उसके सिर पर से साड़ी।
साड़ी ही बन गए श्याम ने लाज बचाई गम दूर किया।
लाज बचाई थी द्रोपदी की, दुष्ट दुशासन हार गया। दुनिया..
(4) राम भक्त की सुनो कहानी वन में थी भिलनी रानी।
राम दरस के खातिर वन में बिता रही थी जिन्दगानी।
राम लखन को आते देखा चरणों में रही लिपटानी।
झूंठे बेरों को खा के राम ने मिलनी को अपना धाम दिया। दुनिया...
(5) प्रेम के वश अर्जुन रथ हांक्यो, भूल गये सब ठकुराई।
पग-पग पर तो किन्हीं सहाई, पांडवों पर विपदा आई।
गीता ज्ञान सुना अर्जुन को सारा मोह ही दूर किया।
पांडवों की तो विजय कराई हस्तिनापुर का राज दिया। दुनिया..
(6) कितने ही भक्त हुए हैं नागर, करके भजन तन सफल किया।
ऐसे दीन दयालू भगवान, भक्तों के दुख को दूर किया।
हँस कर गले लगाया सबको, भव सागर से पार किया।
कितने ही पापी जो हुए हैं, सबका ही उद्धार किया। दुनिया...

-श्रीमती सुमनलता नागर
मोहन बड़ोदिया,
जिला शाजापुर

श्री हनुमान निज मंदिर

भगवान भास्कर को हमारा नमन
आदि देव नमस्तुभ्यं, प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं, प्रभाकर नमोऽस्तुते।।1।।
सप्ताश्वर रथमारुढ़ं, प्रचण्डंकश्यपात्मजम् ।
श्वेत पद्म धरं देवं, तं सूर्यं प्रणमाभ्यहम् ।।2।।
विशाल ब्रह्म अण्ड में जहान हेतु घूमते,
प्रकाशरूप अद्वितीय अन्धकार चूमते।।
सवार अश्व साथ लालिमा लगाम झूमते,
प्रभात जासु आगमन अन्हें नमन हमार है।।1।।
निहार अन्धकार पूँछश्वानसी दबायकै
महान भीति भाग जात कालिमा लगाय कै।।
लुकाय ना सकेन देखि जाय मूँ फिराय के
जिसे न एक बार भी उन्हें नमन हमार है।।2।।
दुखी निहारि अन्धकार जीवन शान्ति जानिकै,
थकार दूरि नींद हेतु विश्वकार्य मानि कै।
न नाश कीन स्थान दीप पुच्छ भाग ठानिकै,
तमः शरम भरे जहाँ उन्हें नमन हमार है।।3।।
दिवा प्रकाश जासुका अभाव अन्धकार है,
जिसे निहारी जीव मात्र कार्य को तैयार है।
पशु मनुष्य पक्षि एक उल्लु को विहाय कै,
विचार एक बस उदै उन्हें नमन हमार है।।4।।
अनादि देव भास्करादि नाम आप केकहे,
पुराणवेद आदि गीत आपके सुना रहे।
उपासना सफल पदार्थ चार हेतु गा रहे,
गरे निरोग काय जो उन्हें नमन हमार है।।5।।
महान पाप भी तजै प्रभात अर्ध्य देत जो,
नमें सप्रेम भाव जो महान पुण्य लेत सो।
गुरु कृपा करें सप्रेम पाय जाप मन्त्र को,
दरिद्र दुःख जो हरें उन्हें नमन हमार है।।6।।
ॐ श्री सूर्य पाठ जप दर्शन ध्यान पूजा,
जो भी करै न उनसे है धन्य दूजा।
संसार सुःख सब सूर्य प्रसाद आवै,
लोकनाथ मुक्ति पद दुर्लभ सोऊ पावै।

-श्री सुभाषचन्द्र ईश्वरीलाल त्रिवेदी
श्री ईश्वरपुष्प भवन, थानापति हाट मैदान, तराना

अल्जाइमर रोग को नियंत्रित करने में लाभदायक यौगिक क्रियाएँ

किसी मनुष्य की स्मृति चली जाए और वह किसी को पहचान न सके। याने स्मरण शक्ति का खोना अल्जाइमर रोग की प्रारंभिक अवस्था हो सकती है। अमेरिका के न्यूयार्क विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने बताया है कि ब्रेन स्केनिंग से मस्तिष्क के संकुचन का कोशिकाओं की मृत्यु से पहले पता लगाया जा सकता है। इससे इस बीमारी का प्रारंभिक अवस्था में ईलाज किया जा सकता है।

प्रारंभ में व्यक्ति अपने रोजमर्रा के कामों को भूलने लगता है। इसके बाद पुरानी स्मृतियाँ धूमिल होने लगती है। याददाश्त की कमी होनी शुरु हो जाती है। धीरे-धीरे घर का रास्ता व घर वालों के नाम भी भूलने लगता है। लंदन युनिवर्सिटी के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ.मार्टिन आर.एल. ने वृद्धावस्था, अल्जाइमर और पागलपन जैसे रोगों के परस्पर संबंध का अध्ययन किया है। उनके अनुसार अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दिमागी कसरत जरुरी है। इसके लिए इन लोगों को कार्य में लगे रहना जरुरी है। अपनी रुचि के अनुसार कार्य करते रहना चाहिए। मनुष्य को निरंतर क्रियाशील रहना अत्यंत आवश्यक है। अन्य सावधानियाँ भी लाभदायक है।

1. संतुलित आहार 2. प्रातःनाश्ता, दोपहर 12 से 1 के बीच भोजन, रात 7 से 8 के बीज भोजन लेना चाहिए। रात का भोजन हल्का सूपाच्य लेना चाहिए। मौसमी फल, सब्जियों का सेवन करवाएँ। हरी सब्जी, पालक, मेथी, लौकी, गीलकी, पत्ता गोभी, मूंग, गाजर, दलिया, अंकुरित भोजन, टमाटर, ककड़ी, सलाद खिलाएँ।

सुबह-शाम शक्ति अनुसार घुमाएं। तनाव, क्रोध चिड़चिड़ापन से दूर रहें।

डॉ.और योग विशेषज्ञ की सलाह से निम्नलिखित क्रियाएँ करवानी चाहिए।

1. प्रारंभ में एक वक्त ॐ उच्चारण करवाएँ।

2. शरीर संचालन (सूक्ष्म व्यायाम) पाँव की उंगली से सिर तक शरीर के सभी अंगों का संचालन 5 से 10 बार करें। 3. निस्पंद भाव, 4. भ्रामरी प्राणायाम, 5. उल्टा लेटकर मकरासन, 6. उल्टा लेटकर नौकासन, 7. वात्सल्य शवासन, 8. शवासन, 9. योगनिद्रा (दिन में एक वक्त दिल खोलकर हंसें।)

-ए.के. रावल (योग विशेषज्ञ)
25, पत्रकार कॉलोनी, (साकेत चौराहा),
इन्दौर फोन 0731-2565052

जय हाटकेशवाणी के अप्रैल-मई 2015 अंक में इससे पूर्व के नुस्खें प्रकाशित किए गए थे

विभिन्न रोगों के इलाज में कारगर आयुर्वेदिक नुस्खे-2

क्रमशः से आगे.... चित्रक- लेटिन- (प्लम्बगोझिलनिका) (प्लम्बजिनासी)

गुण- प्रयोग- चित्रक में रहने वाला प्लम्बजिन अल्पमात्रा में केन्द्रीय वात नाड़ी संस्थान को उत्तेजित करता है। चित्रकमूल अग्निदीपक गर्भाशय संकोचक स्वेदजनक कुष्ठहर अर्शहररोग को दूर कर भूख अच्छी लगने के साथ-साथ गुदवली शिथिलता दूर होकर लाभ होता है।

एलूआ- 100 ग्राम, हरी तकी 100 ग्राम, चित्रक मूल 50 ग्राम तीनों को पीसकर 500 मि.ग्रा. केपसूल में भरकर सुबह-शाम जल के साथ उपयोग करें। अर्शरोग ठीक होता है।

4. स्वाईन फ्ल्यू-इन्फ्लूएन्जा

1 गिलोई लेटिन (टिनोस्पोरा कार्डिफोलिया)

गुण- प्रयोग- गुडूच कड़वी उष्ण त्रिदोषघ्न रसायन विषमज्वर जीर्णज्वर ज्वर हर यकृत की हिनकार्यता आदि में गुडूबी का उपयोग करने से सर्व ज्वरो में लाभ होता है।

2. चिरायता- (लेटिन-स्वीरीटिया चिरायता)

गुण- प्रयोग- इसका प्रयोग ज्वर विषम ज्वर गण्डमाला शोथ यकृत विकार तथा पुराने ज्वर में लाभ होता है।

3. गुइची सत्व- गुण- प्रयोग- सभी प्रकार के ज्वरों में हितकारी इसे भारतीय क्वीनीन का नाम दिया गया है।

गिलोय 100 ग्राम, चिरायता 100 ग्राम, गुडुची सत्व 50 ग्राम, अजमोदा 50 ग्राम, कुटकी 50 ग्राम, नीम छाल 100 ग्राम, सभी को 21 कि.ली. पानी में डालकर लगभग 2 घंटे तक स्टील के तपेले में उबाले। क्वाथ को छानकर एक-एक चम्मच सुबह-शाम पानी के साथ उपयोग करें।

स्वाईनफ्ल्यू के लिये दूसरा प्रयोग-

नीम गिलोय 200 ग्राम, चिरायता 200 ग्राम, गुडूची सत्व 100 ग्राम-महीन पीसकर 500 मि.ग्रा. के केपसूल दस दिनों तक एक-एक केपसूल जल के साथ उपयोग करें। जिससे आंत्रिक ज्वर विषम ज्वर स्वाईनफ्ल्यू जैसे भयानक रोग से निजात मिल सकती है। केपसूल उपयोग के समय अमृतारिष्ट का उपयोग भी करें।

5. संतति निरोध के लिये (आयुर्वेद केपसूल विराम 30) रसेन्द्र सार सिद्धयोग संग्रह)

1 बिंडग 100 ग्राम, 2 सुहागा 100 ग्राम, 3 पीपल 100 ग्राम, सभी समभाग पीसकर मासिक धर्म के चतुर्थ दिन से सातवें दिन तक 700 मि.ग्रा. के केपसूल जल के साथ उपयोग महिलाओं के लिये आवश्यक है।

विशेष- उपरोक्त सभी असाध्य रोगों के लिये मेरे चिकित्सा कार्यानुभव को चिकित्सा में किये गये प्रयोग के अनुसार सार्थक सिद्ध होकर रोगियों को स्वास्थ्य लाभ दिया गया है।

-डॉ.व्ही.डी. शर्मा
आयुर्वेद प्रभाकर शाजापुर
मो. 9424875332

साहस की प्रतिमूर्ति श्रीमती कान्ता मेहता

श्रीमती तनुजा, श्री अभिलाष, श्रीमती अनिता, श्रीमती प्रीती एवं श्री कपिल मेहता की माता एवं स्व. श्री कृष्णकांत मेहता की पत्नी श्रीमती स्व० कान्ता मेहता जी की बात करें तो एक ऐसा व्यक्तित्व सामने आता है, जिन्होंने मां के लिये आवश्यक समस्त गुणों से भरपूर होकर उन्हें अपने जीवन में चरितार्थ किया। उन्होंने अपने जीवन में आने वाले प्रत्येक झंझावतों, परेशानियों का साहस व धैर्य के साथ सफलतापूर्वक सामना किया। पति श्री कृष्णकांत जी मेहता का लम्बी बीमारी से देहावसान होने के उपरांत उन्होंने पिता व माता दोनों का कर्त्तव्य निभाते हुए अपने परिवार व बच्चों को सम्बल प्रदान किया। अपने बच्चों को सर्वोच्च शिक्षा के आभूषणों से अलंकृत किया और अपने समस्त दायित्वों का निर्वाह करते हुए दिनांक १५ फरवरी, २०१५ को देवलोक गमन किया।

श्रीमती कान्ता मेहता इन्दौर निवासी स्व. श्री दुर्गाशंकर जी रावल एवं श्रीमती कमला देवी रावल की सुपुत्री थी। जिनका जन्म १४ सितम्बर, १९३७ को इन्दौर में हुआ था। श्रीमती कान्ता मेहता जी का विवाह वर्ष १९५१ में स्व० श्री बसंती लाल मेहता, शाजापुर के एक मात्र पुत्र श्री कृष्णकांत मेहता के साथ हुआ। विवाह के साथ ही घर की संपूर्ण देखरेख एवं व्यवस्था तथा ससुर के व्यवसाय से संबंधित आनुशांगिक कार्य का महती भार भी उन्ही पर आ गया था क्योंकि घर में पति और ससुर के अतिरिक्त अन्य कोई सदस्य नहीं था। धीरे-धीरे घर की जिम्मेदारियां और भी बढने लगी। परिवार में खुशियों का संचार प्रारंभ हुआ। परिवार में तनुजा, अभिलाष, अनिता, प्रीति एवं कपिल जैसे सुंदर फूल खिले। विवाहोपरांत लगभग १९ वर्षों तक खुशियाँ बिखर रही थी। कभी-कभी ऐसा होता है कि ईश्वर से भी अन्याय हो जाता है। सब कुछ अच्छा चल रहा था। सभी बच्चे विद्या अध्ययन में लगे हुए थे। वर्ष १९७० में श्री कृष्णकांत जी मेहता को एक ऐसे असाध्य रोग ने जकड़ा कि लगभग ३ वर्षों तक लगातार असाध्य रोग से लड़ते-लड़ते दिनांक १४ सितम्बर, १९७३ को मृत्यु ने उन्हें वरण कर ही लिया। ईश्वर की इच्छा के आगे सबको नतमस्तक होना ही पड़ता है।

यह एक दु:खद संयोग था कि माताजी की जन्म तिथि एवं पिताजी की पुण्य तिथि एक ही है। पति की असमय मृत्यु श्रीमती कान्ता मेहता के जीवन का एक ऐसा मोड़ था जिसने उन्हें ऐसे चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया था जहां उनके सामने भविष्य की चुनौतियाँ मुँह बाए खड़ी थी। एक ओर बच्चों के आगे की शिक्षा, घर की देख-रेख, वृद्ध होते ससुर जी की सेवा, सब कुछ अब उन्हें ही देखना था। १३ वर्ष की आयु में विवाह होने पर अध्ययन छोड़कर गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया और पति के असामयिक निधन होने पर ४१ वर्ष की आयु में पुन: अध्ययन प्रारम्भ करते हुए अपनी अधुरी शिक्षा को पूर्ण करने के लिए जुट गई और हायर सेकंडरी की परीक्षा उत्तीर्ण की। मेहनत रंग लाई। अपने पति के स्थान पर आपकी अनुकम्पा नियुक्ति शिक्षिका के पद पर सन १९७६ में शाजापुर में हुई। परिवार को फिर से सम्बल मिला। यहां भी संघर्षो ने पीछा नहीं छोड़ा। वर्ष १९७७ से १९७८ तक दो वर्षो के लिए बुनियादी शिक्षा प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु शिवपुरी जाना पड़ा। इधर बच्चों और ससुर जी की चिंता उधर प्रशिक्षण भी जरूरी।

समय और परिस्थितियों में श्रीमती मेहता ने अपने आपकों इस तरह ढाल लिया था कि अब वे साहस व धैर्य के साथ हर आने वाली स्थिति से मुकाबला करने का तत्पर थी। ससुर जी की मृत्यु के बाद बड़े होते बच्चों की अगामी शिक्षा व विवाह सम्बन्धो का दायित्व निभाने का अहसास उन्हें था। अपने सेवा काल में ही उन्होंने प्रयास करके सन १९८१ से १९९५ तक अपने पुत्र-पुत्रियों का विवाह सम्पन्न व संभ्रान्त परिवारों में किया। बड़े पुत्र चि० अभिलाष मेहता १९८१ मे गोविंदराम सेक्सेरिया इंस्टीटयूट ऑफ टेक्नोलॉजी इन्दौर से बी०ई० (मेकेनिकल) की उपाधि प्राप्त करने के बाद भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लि० में विभिन्न उच्च पदों पर पदस्थ रहे और वर्तमान में अदानी इन्फ्रा (इंडिया) लिमिटेड, अहमदाबाद में सीनियर वाईस प्रेसीडेन्ट के पद पर कार्यरत है। इसी प्रकार छोटे पुत्र चि० कपिल मेहता अपनी बी.एससी. और एल.एल.एम. की उच्च परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् मध्यप्रदेश न्यायिक सेवा में आए और वर्तमान में विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी/अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, मध्यप्रदेश न्यायिक अकादमी, मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय, जबलपुर में पदस्थ है। श्रीमती कांता मेहता ने अपने शासकीय सेवा के दायित्वों सहित अपने परिवार एव सभी संबंधियों, परिचितों व समाज के प्रति अपने समस्त उत्तरदायित्वों को अकेले ही पूर्ण कुशलता से संतुलन बनाये रखते हुए उत्कृष्टता के साथ निभाया। अपने समस्त उत्तरदायित्वों के निर्वाह हेतु परिवार में उन्हें नंदोई स्व. श्री कुंजबिहारी लाल नागर, नंनद स्व. श्रीमती शांता नागर व पिता स्व० श्री दुर्गाशंकर रावल का बहुत सहयोग प्राप्त हुआ।

अपनी अल्प बीमारी से १५ फरवरी, २०१५ को अपने छोटे पुत्र कपिल मेहता के पास जबलपुर मे रहते हुए एकादशी को वे देवलोक गमन कर गई। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार, पोते-पोतियाँ, नाति-नातिनों का एक बड़ा व सुगंधित बगीचा लगा कर गई है। श्रीमती कान्ता मेहता आज हमारे मध्य नहीं है लेकिन उनके द्वारा ''माँ'' के रूप में निभाया गया कर्तव्य भाव एक आदर्श के रूप में सदा स्मरण किया जाता रहेगा।

ओम शांति!

-सुरेश दवे 'मामा', शाजापुर
मो. 94240-27500

पंडित देवीलाल जी नागर लडावद

कवि पंडित अशोक नागर के पिताजी पंडित देवीलाल जी नागर लडावद का निधन 24.06.2015को हो गया। आप को देवी का इष्ट था साथ ही आप भविष्य वक्ता ये एवं आपने नाटक लेखन मे प्रदेश शासन से पुरस्कार प्राप्त किया आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ कर गये। भगवान आपको अपने श्री चरणों मे स्थान दें।

पांचवीं पुण्यतिथि
स्व. श्रीमती सुमन नागर

दिनांक 16 जुलाई 2015
नम आँखों से
अश्रुपुरित श्रद्धांजली
पल पल बीते दिन बीते,
बीत गए वर्ष पांच ।
यादें आपकी आती रही,
आँखों से आँसू भी बह रहे आज ॥
तेरे प्यार की छाँव में, घर था स्वर्ग से सुन्दर ।
घर सूना जग भी सूना,
ये कैसा समय का अंतर ॥
माँ जब थी तब सब कुछ था,
अब सब कुछ है पर कुछ नहीं ।
जग की इस भीड़ में, माँ बिन मन लगता नहीं ॥
ईश्वर से यही है प्रार्थना, आपको ऊँचा स्थान मिले ।
शांति मिले आपके मन को,
हमें आपसे प्रेरणा ज्ञान मिले ॥
एक और प्रार्थना है मेरी, माँ मेरी अर्जी सुन लेना ।
संतान रहे हम आपकी,
यह किस्मत हमें हर बार मिले ।
तेरे आँचल, ममता की गोद का
सौभाग्य हमें हर बार मिले ॥

स्व. श्रीमती सुमन नागर की पांचवी पुण्यतिथि दिनांक 16जुलाई 2015 को समस्त नागर परिवार की और से अश्रुपूरित श्रद्धांजलि...

-जितेन्द्र नागर, भौरासा

बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे

श्री सुरेशचन्द्रजी जोशी
अवसान-15 मई 2015

नागर समाज खंडवा का एक सितारा कुछ समय से अस्ताचल की ओर गमन करता हुआ शुक्रवार दि. 15 मई 2015 को अस्त हो गया। वह सितारा है 78 वर्षीय श्री सुरेशचन्द जोशी।

अपने विद्यार्थी जीवन में जिला, संभाग एवं राज्यस्तर की खेलकूद प्रतियोगिताओं में अपनी धूम मचाई थी। अपनी शालेय टीम के सद्स्य के नाते हाकी, फुटबाल एवं खो-खो में राज्यस्तर तक खेलने का अवसर प्राप्त हुआ। क्रिकेट बाल थ्रो, भालाफेंक, चक्का फेंक, गोलाफेंक एवं विभिन्न दौड़ प्रतियोगिताओं में भाग लेकर राज्यस्तर तक कई पदक हासिल किये। अंतर्महाविद्यालयीन हाकी एवं फुटबाल टीम में भी सम्मिलित रहे।

शिक्षा पूर्ण करने के बाद जिला शिक्षा अधिकारी खंडवा कार्यालय में लिपिक पद पर नियुक्त होकर मुख्यलिपिक पद से सेवानिवृत्त हुए। शिक्षा विभाग में उनकी कर्त्तव्यनिष्ठता, सदाशयता एवं व्यवहार कुशलता के कारण प्रथम श्रेणी अधिकारी से लेकर चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, प्राचार्य, व्याख्याता, सहायक जिला शाला निरीक्षक एवं शिक्षकवृंद सभी उन्हें अपने हितैषी के रूप में देखते थे एवं 'काका' के नाम से संबोधित करते थे।

समाज के प्रति उनकी कर्त्तव्य परायणता कम नहीं थी। श्री गणेशोत्सव समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य के रूप में लंबे समय तक अपनी सेवाएँ दी। सन् 1969-70 में गठित नवयुवक समिति द्वारा श्री हाटकेश्वर जयन्ती पर श्री हाटकेश्वर भगवान की शोभायात्रा एवं पूरे समाज का सामूहिक भोजन को मूर्तरूप देने में अग्रणी भूमिका निभाई थी, जो आज तक कायम है। समाज के प्रत्येक परिवार के सुख-दुख एवं मंगल-अमंगल कार्य में सम्मिलित होने में कभी चूक नहीं की। उनके सद्गुणों से प्रेरणा लेकर हमसब समाजहित में समर्पित हो, यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

नागर ब्राह्मण समाज खंडवा भगवान हाटकेश्वर महादेव से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं जोशी परिवार को दुःख वहन करने की शक्ति प्रदान करने हेतु प्रार्थना करता है।

-देवीदास पोत्दार
अध्यक्ष नागर समाज, खंडवा

भगवान की माया कोई समझ न पाया

प्रख्यात संगीतज्ञ स्व.पं. नरेशदत्तजी नागर रंथभंवर की पुत्रवधु एवं पं. सदाशिव नागर की धर्मपत्नी अखंड सौभाग्यवती श्रीमती कुन्तादेवी नागर का सर्पदंश से 22 मई 2015 को शिवलोकवास हो गया है। आप ने अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर अंतिम समय में उन्होंने भगवान शिव का स्मरण (ऊं नमः शिवाय) जाप करते हुए अंतिम सांस ली।

श्रद्धावनत- समस्त नागर परिवार
रंथभंवर, जिला शाजापुर (म.प्र.)
मो. 09826017120

द्वितीय पुण्य स्मरण
स्व.विनोद कुमारजी त्रिवेदी, रतलाम

24 जुलाई 2012

श्रद्धावनत- श्रीमती विद्या त्रिवेदी, दुर्गेश त्रिवेदी, मनीष त्रिवेदी तिलोत्तमा-जेनेन्द्र नागर, श्रद्धा नागर, विशेष नागर शाजापुर

स्व.शिवनारायणजी मेहता

अवसान 1 जुलाई 2009

श्रद्धावनत- श्रीमती विद्या त्रिवेदी, दुर्गेश-मनीष त्रिवेदी, तिलोत्तमा-जेनेन्द्र नागर, कु.श्रद्धा विशेष नागर शाजापुर।

64वीं सूर्य जयंती

समाज, शिक्षण, खेल, विद्यार्थी, मित्रता, सेवा के प्रति समर्पित व्यवहार कुशल-कर्त्तव्य निष्ठ **स्व.डॉ.सूर्यप्रकाश नागर** प्राध्यापक- होल्कर कॉलेज, इन्दौर

अंतरराष्ट्रीय टेनिस खिलाड़ी

8 जुलाई

श्रीमती जया एवं कुमार अपूर्व नागर परिवार पी.आर.जोशी, प्रदीप जाधव, मनोज तिवारी परिवार इन्दौर महू

विश्वास

भगवान पर विश्वास उस बच्चे की तरह करो, जिसको आप हवा में उछालते हो तो वो हँसता हैं डरता नहीं,

क्योंकि वह समझता है कि आप उसे गिरने नहीं दोगे।

ऐसा ही विश्वास आप भगवान पर करोगे तो वो भी आपको गिरने नहीं देंगे।

संकलन- सौ. लीना नागर,
झाबुआ
मो.9424064104

श्री संजय नागर देवास

देवास निवासी श्री संजय नागर (लड्डू) सुपुत्र- स्व.रामवल्लभजी नागर का श्रीजी शरण 17 जून 2015 को हो गया। आप श्री सुशील नागर एड्व्होकेट सोनकच्छ, सुधीर नागर एड्व्होकेट देवास गिरीश नागर इन्दौर अनिल नागर शिक्षक देवास एवं मनोज अहमदाबाद के भाई थे। जय हाटकेशवाणी परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उनकी आत्मा को अपने चरणों में स्थान प्रदान करने की कृपा करें।

प्रथम पुण्यतिथि
श्री रामकिशोरजी नागर

प्रभुमिलन- 3-6-14
ज्येष्ठ- शुक्ल पंचमी
श्रद्धानवरत् -
पं. नरेन्द्र-इंदिरा, पं.ओम, पं.मोहन, पं.अशोक, पं.धर्मेन्द्र-अनिता, पं.लोकेन्द्र-सीमा, कुसुम-पं.रमेशचन्द्रजी, ममता-पं.पुनीत भट्ट, अम्बिका-रोहित, नेहा-अमित, कुशाग्र, अनामिका, प्रज्ञा ऋग्विज, अर्थव, शिवाशीष नागर एवं समस्त नागर परिवार।

द्विपदियाँ-वाणी पर

(1)

वाणी मन-जीत है, सब धन वाणी से पाय।
संयम वाणी का रखिये,
वरना गड़बड़ हो जाये।।
वाणी संयम राखिये गर चाहे उत्थान।
वाणी से 'मुद्रा' झरे, नित बढ़े सन्मान।।
'स्पेस' वाणी-बनाती सनम, मन में रे हरदम।
मधुरा-वाणी हरती सदा टेन्शन ओर, गम।।
वाणी प्रदातृ उल्लास की, दृढ़ करती विश्वास।
इष्ट वाणी से मिले, राखे, नित मधुमास।।
कलह-कष्ट हारिणी, वाणी प्रियतम-मीत।
आनन्द वाणी से मिले, धड़कन गाए नव गीत।।
वाणी और विवाद में, अन्तर एक विशेष।
एक सुखड़ो फेक्ट्री, दूजा देत कलेश।।
वाणी ऐसी बोलिए, ए.सी. होए मन।
हेप्पी-हेल्दी होएगा, अपना प्यारे जीवन।।
हास और परिहास में, वाणी का अद्भूत खेल।
प्रीति-थोक में मिले, छाँटे मन के मैल।
वाणी-जन को बांधती, दिल लूटे हरषाय।
ताली-सुख देवे सनम,
महिमा बरनी ना जाय।।
वाणी से परिचय को मिले, एक नया आकाश।
परिवेश को सुखमय करे, उपजावे विश्वास।
भद्र अभद्र की परिचय, प्रणय प्रीत का आधार।
वाणी- सृजन उत्पादिका, चेन्ज करे वाणी संसार।

-गड़बड़ नागर
191, 'सत्यसुख' सेठी नगर,
उज्जैन (म.प्र.)
घुमन्तु यंत्र सम्पर्क- 9630111651

सोलह्वां पुण्य स्मरण

प्रेरणा के स्त्रोत हो आप,
प्रगति का संबल हो आप।
कोटि-कोटि प्रणाम आपको.
स्मृति में हर पल हो आप।।

स्व.राधेश्यामजी नागर

14 जुलाई 1999

सादर अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

: श्रद्धावनत :

श्रीमती करुणा राधेश्याम नागर, वन्दना-चेतन नागर, स्मिता-श्यामजी नागर
डॉ.नीलिमा-मनोज मिश्रा, डॉ.प्रतिमा-प्रकाश जोशी, स्वगता-विपिन मेहता
आकाश नागर, गौरव नागर, उज्जवल जोशी, सुचि मिश्रा
स्पर्श मेहता, परिधि जोशी एवं समस्त नागर परिवार

सादर पुण्य स्मरण...

ईश्वर हर जगह नहीं हो सकता...
इसलिए उसने हमारे लिये माँ बनाई...
उनकी प्रेरणा, स्नेह व मधुर स्मृतियां
हमारे जीवन का अनमोल उपहार है...
आपके बिना जीवन अधुरा है,
किन्तु आपका आशीर्वाद तथा
प्रेरणादायी मार्गदर्शन
ही हमारी शक्ति है...

स्व.श्रीमती कुमुदनी हरिरामजी मेहता

प्रथम पुण्य तिथि

जन्म
15 जुलाई 1937

अवसान
19 जून 2015

अश्रुपुरित श्रद्धा सुमन आपको अर्पित है...

- श्रद्धावनत -

हरीराम मेहता (पति)
डॉ.शिवराम व भक्ति मेहता (देवर देवरानी)
राजेश व मधु मेहता, संजय एवं वैशाली मेहता, यशेष व योगिता मेहता
(पुत्र व पुत्रवधू) अनिमेष, अनुज, चाहत, जियाना एवं समस्त मेहता परिवार, वडाला मुम्बई
पंडित परिवार, खंडवा, कालमुखी, इन्दौर

जीवेत शरदः शतम

चि. हिमांशु

(सुपुत्र : सुनिता-मनमोहन नागर)

को 16वे जन्मदिन
दिनांक 13 जुलाई एवं
10वीं सीबीएसई में
94 प्रतिशत
बनने पर हार्दिक
बधाइयाँ

श्रीमती मनोरमा नागर (बड़ी दादी),
सौ. शकुन्तला-श्री हरिनारायण नागर,
कु. मोक्षदा नागर, बुआ-फुफाजी, मामा-मामी,
मौसा-मौसीजी, ताऊ-ताई, भाई-बहन
एवं समस्त नागर परिवार पीपलरवा, देवास
सौजन्य से- बिन्दु-प्रदीप मेहता (बुआ-फुफाजी)

CONGRATULATIONS

CHHAVI
MANISH
MANDLOI
(Khandwa)

on getting a
perfect 10/10 score in 10th
CBSE Board Examination-2015.
Heartiest Congratulations
for being a
consistent student...
.it proves that you are
an achiever with a
bright future.

With Best Compliments from:
V.R POTA (Nanaji) & FAMILY
KALYAN(Mumbai,Maharashtra)

विवाह की प्रथम वर्षगाठ पर बधाई शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ

पुनीत-सौ.मीनल नागर

दि.21-06-2014

श्रीमती कलावती नागर (दादीजी)
राजेन्द्र-सौ.ज्योति नागर (पापा-मम्मी)
कु. सलोनी नागर (बहन)
एवं समस्त शर्मा (मामा) परिवार इन्दौर

श्रीमती शान्ता व्यास (दादीजी)
महेश कुमार-सौ.ममता व्यास (पापा-मम्मी),
वन्दन-सौ.मेघा नागर (दीदी-जीयाजी) बेबी ख्याति नागर (भानजी)
एवं समस्त व्यास, नागर, रावल परिवार, इकलेरा, रतलाम, इन्दौर, उज्जैन

RYDAK

(RED)

रायडक चाय

कड़क स्वादिष्ट रायडक चाय

Marketed By : KANT & COMPANY LTD.

71, DR. RAJENDRA PRASAD SARANI, KOLKATA - 700001, PH.NO. 22309925

Local Address-

KANT & COMPANY LIMITED

306, Nariman Point, 96, Maharani Road, INDORE Mo.9300126194

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा चैतन्य लोक प्रिंटर्स, 20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यही से प्रकाशित
सम्पादक : सौ. संगीता शर्मा (56) मो. 94250 63129
LATE POSTING